फ़्रैंकलिन फ़ोल्सम

# सोवियत नागरिकों के कुछ मूल अधिकार

प्रगति प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड

## विषय-सूची

## विषय-सूची

जब सोवियत नागरिकों के बारे में यह पुस्तक-लेखन का मौका आया, तो मुझे तय करना था कि इस काम को हाथ में लूं या नहीं। यह प्रश्न मेरे सामने खड़ी दो बाधाओं के संबंध में प्रकट हुआ। पहली कठिनाई इस बात में निहित थी कि सोवियत संघ में बोली जानेवाली १३० भाषाओं में से मैं एक भी भाषा नहीं जानता था। यह मुझे साफ था, और किसी भी पाठक को साफ होगा, कि मैं सोवियत लोगों और उनके बारे में सत्य के प्रति सीमित रुख ही रख सकता हूं, अगर मैं उनके साथ उनकी मातृभाषा में या कम से कम रूसी में, जब यह उनकी मातृभाषा न हो, बात करने में समर्थ न होऊं। इस संबंध में मैंने लगभग २० साल पहले के अपने अनुभव पर भरोसा करने को तय किया। उस समय मैंने युवा पाठकों के लिए 'सोवियत संघ : अंदर से एक दृष्टि' शीर्षक पुस्तक लिखी थी, जिसका सोवियत संघ के मित्रों और अमित्रों दोनों ही ने सद्भावपूर्ण ढंग से स्वागत किया था। मैंने तय किया कि मुझे पाठकों के व्यापक हलके के लिए सोवियत संघ के बारे में पुस्तक लिखने पर वैसा ही प्रयास करना चाहिए, जैसाकि, प्रेक्षकों के अनुसार, मैंने किशोरों के लिए पुस्तक के साथ किया था।

मुझे *इस चीज के बारे में नहीं कहना है कि सोवियत वास्तविकता* की मुख्य परिघटनाओं का वर्णन करते हुए मैंने ब्यौरों को छोड़ दिया है क्योंकि मैं रूसी नहीं बोलता। लेकिन मुझे इनमें से एक का चुनाव करना था : अपनी बाधा के बावजूद अधिक से अधिक पता लगाना या उस चीज को छोड़कर कुछ भी न पता लगाना, जिसे अमरीका में अत्यधिक समाजवाद-विरोधी प्रेस मेरे लिए चुनता है। मैंने अपनी ही खोज करना चाहा।

मैं विशाल समाजवादी तरण-तालाब में अपने समाजवाद-समर्थक छलांग लगाने के तख्ते से कूद पड़ा। मैं आशा करता हूं कि पाठक पायेंगे कि इस तालाब में तैरने का मेरा प्रयास ध्यान देने योग्य है। मैं यह भी

आशा करता हू कि ऐसी परिस्थितियो मे, जबकि प्रतीत होता है कि
युद्ध की आग सारे भड़क उठनेवाली है, इस तनाव मे मेरे छलकाए
से उठी कुछ ठडी करनेवाली बूदे दुनिया पर पड़ेगी।

मेरी दूसरी प्रमुख बाधा इस चीज मे निहित थी कि मेरी पुस्त
को सोवियत प्रचार के रूप मे आका जा सकता है, क्योकि यह ए
सोवियत प्रकाशन-गृह द्वारा प्रकाशित की जा रही है। इसे ऐसे अनेक
लोग सदेह की नजर से देख सकते है, जो वित्तीय मुनाफे को पुस्तकों
के प्रकाशन और वितरण की स्वाभाविक और स्वीकार्य प्रेरणा के रू
मे मानते है। यहा मुझे इस तथ्य का सामना करना पडा कि किसी भ
पूजीवादी प्रकाशक ने मुझसे समाजवादी सोवियत सघ मे अधिकारो
की स्थिति के बारे मे लिखने को नही कहा। क्या मै इस विषय प
मात्र इस वजह से चुप्पी बनाये रखता कि मुझसे यह पुस्तक प्राप्त करने
की इच्छा रखनेवाले प्रकाशक का दृष्टिकोण सामान्यत मेरे दृष्टिको
से मेल खाये?

मुझे लगा कि मेरे देश और सोवियत सघ के बीच कायम तनाव
इतने बडे और सारी मानवजाति के लिए इतने महत्वपूर्ण है कि मै वह
कुछ करने के सुअवसर को सीधे अस्वीकार न कर सका, जिसे एक
लेखक उन्हे कम करने मे सहायता करने के लिए कर सकता है। फिलहाल
यह चुपचाप देखना सुविधाजनक प्रतीत हो सकता है कि कैसे दुनिया
युद्ध मे खिच रही है, लेकिन अतत मेरी चुप्पी के लिए मुझे कौन
धन्यवाद देगा? बेशक, उनमे से बहुत नही, जो जीना चाहते है,
शाति चाहते है।

मेरा ख्याल है कि अमरीका और सोवियत सघ के बीच बेहतर
समझदारी और दोस्ती के आधार पर शाति मजबूत बन सकती है
और परमाणविक हथियारो के इस युग मे मानव जीवन के लिए शाति
से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नही है।

अत मैने यह पुस्तक लिख डाली।

• • •

सोवियत सघ के नागरिको या किसी भी अन्य जनगण द्वारा
प्राप्त अधिकारो पर दृष्टिपात इन प्रश्नों से शुरू हो सकता है:

"लोग जीवन से सबसे अधिक क्या चाहते है?"

अध्याय १

# काम का अधिकार

जब अप्रैल १९८१ में मैं अमरीका से सोवियत संघ की यात्रा पर चला, तो मेरे मन में बेरोजगारी के बारे में विचार छाये हुए थे। अमरीकी श्रम विभाग ने सूचना दी थी कि मेरे देश में लगभग ८० लाख लोग काम की तलाश कर रहे हैं जिसे वे नहीं पा सके। स्पष्ट यह संख्या आनेवाले महीनों में बढ़ती जायेगी।* रोजगारप्राप्त लोगों के बीच बहुत से केवल अंशकालिक तौर पर काम कर रहे थे तथा और भी अधिक लोगों ( कोई नहीं जानता कि कितना अधिक ) ने निराश होकर काम की तलाश करना बंद कर दिया था।

१९८१ का वसंत ऐसा समय था जब सभी पूंजीवादी देशों में विशाल संख्या में लोग बेरोजगारी का उच्च स्तर महसूस करने को विवश थे। एक अनुमान के अनुसार, दुनिया के औद्योगीकृत देशों में बेरोजगारों की कुल संख्या लगभग एक करोड़ ८० लाख थी।**

इस प्रश्न पर मेरी संवेदनशीलता ऊंची थी। हाल ही में मैंने १९ वीं और २० वीं सदियों में व्यापक बेरोजगारी की प्रत्येक अवधि में सार्वजनिक काम लागू करवाने के अमरीकी बेरोजगारों के सतत प्रयासों के बारे में एक पुस्तक लिखने में कई महीने लगाये थे। मैं शायद किसी भी अन्य रोजगारप्राप्त नागरिक से अधिक जानता था कि स्थायी बेरोजगारी औद्योगिक क्रांति के आरंभ से ही पूंजीवादी सामाजिक प्रणाली

---

*अमरीकी श्रम विभाग के अनुसार, १९८२ की शरद में अमरीका में बेरोजगारों की संख्या बढ़कर १ करोड़ १३ लाख अथवा संपूर्ण श्रम करने योग्य आबादी का १०.१ प्रतिशत हो गयी थी। – सं०

**१९८२ की शरद में विकसित पूंजीवादी देशों में बेरोजगारों की संख्या तीन
। – सं०

अग रही है। मेरे पास यह उल्लेख करने का बहुत ठोस कारण था कभी भी पूर्णत. जड से न समाप्त की गयी बेरोज़गारी की पृष्ठभूमि तीव्र बेरोज़गारी की लंबी अवधियां बार-बार प्रकट होती रही हैं।

२०वीं सदी के तीसरे दशक मे – अमरीका मे समृद्धि का काल – प्रतिशत बेरोज़गारी को सरकार "स्वीकार्य" मानती थी। स्वीकार्य ज़गारी का यह आकडा कार्टर प्रशासन के अंतर्गत चार प्रतिशत गया था तथा १९८० मे श्रम सांख्यिकी ब्यूरो ने सूचित किया कि तविक बेरोज़गारी लगभग सात प्रतिशत थी। मैं इस प्रश्न की गहराई जाने का इरादा नही रखता कि किसे और क्यो बेरोज़गारी का कोई र स्वीकार्य है। निस्संदेह बेरोज़गारी को या उन लोगो को कोई भी ज़गारी अस्वीकार्य है, जो डरते है कि कुछ बेरोज़गार श्रम शक्ति ज़ार मे उनका मूल्य नीचे गिरा सकते हैं।

जो कुछ भी हो, हमारी पृथ्वी पर करोडों-करोड लोगो को उन ओ के उत्पादन की प्रक्रिया मे कोई संबंध नही था जिनकी उन्हे और के परिवारों को आवश्यकता थी। उन्होने अपने दोष की वजह से ो समाज में कोई योगदान नही किया। साथ ही जीवित रहने के ए उन्हे उपभोग करना था।

मन मे इन्ही विचारों से भरा हुआ मैंने सोवियत संघ की यात्रा ा की। यह मेरी पहली यात्रा नही थी। १९६३ मे मैंने वहा रूसी राइनी, जार्जियाई और उज़्बेक जनतत्रों की यात्रा करते हुए छ हफ्ते ताये थे। १९७६ मे पुन मैं १९६३ के अपने यात्रा-मार्ग के एक बडे ाग मे गुज़रा। इन यात्राओं के दौरान मुझे ज्ञात हुआ कि जैसा कि ावियत संघ दावा करता है इस देश मे १९३० मे ही कोई बेरोज़गारी ही है। मुझे मालूम था कि १९३६ के सोवियत संविधान ने प्रत्येक ागरिक को काम की गारटी दी थी और मैंने यह संदेह करने का कोई ारण नही देखा कि इस संबंध मे संविधान वास्तविकता से मेल खाता ा। लेकिन पूर्ववर्ती यात्राओं के दौरान मेरा ध्यान किसी और चीज़ र, मुख्यत बच्चो और बच्चो की पुस्तको पर केंद्रित था। इस बार ने सामाजिक जीवन के कुछ दूसरे क्षेत्रो पर गौर करने का निर्णय िया। उदाहरणार्थ, मैंने यह देखना चाहा कि दुनिया के इस पहले ामाजवादी देश मे वस्तुत सभी के लिए काम है या नही।

मास्को मे मैंने अपनी खोज श्रम और सामाजिक प्रश्न संबंधी

राजकीय समिति के सामाजिक बीमा विभाग के उप-प्रधान अनातोली सोलोव्योव से बातचीत के साथ आरम्भ की। उनसे अपने सवाल करते हुए मैंने ध्यान से सोवियत संघ का १९७७ का संविधान रखा था, जिसका मूल प्रारूप संविधान आयोग ने तैयार किया था। इस आयोग में अनुभवी पार्टी कार्यकर्ता और जन-सेवक, मजदूर वर्ग, सामूहिक फार्मों और बुद्धिजीवियों देश की विभिन्न जातियों के वैज्ञानिकों तथा विशेषज्ञों के प्रतिनिधि शामिल थे। मुझे मालूम हुआ कि इस प्रारूप पर विचार-विमर्श में सभी सोवियत जनगण ने भाग लिया। इसमें न केवल काम पाने के अधिकार की पुरानी गारंटी को बनाये रखा गया, बल्कि श्रमिक की पसंद के अनुसार काम पाने के अधिकार की एक नयी गारंटी भी शामिल की गयी थी। मुझे मालूम हुआ कि इस दस्तावेज की अंतिम रूप से स्वीकृति के पहले विचार-विमर्श की प्रक्रिया में उसमें बहुत से परिवर्तन किये गये थे। अन्य बातों के अलावा इसका अर्थ यह था कि यह असंभव है कि अनेक सोवियत नागरिक इस चीज के बारे में न जानते हों कि संविधान का अनुच्छेद ४० * उन्हें क्या गारंटी देता है।

"श्रम और सामाजिक प्रश्न संबंधी राजकीय समिति इस गारंटी को कैसे समर्थ बनाती है कि प्रत्येक मजदूर को वस्तुतः काम मिले?" मैंने सोलोव्योव से पूछा।

"हमारी समिति काम, वेतन और सामाजिक बीमा के अधिकार संबंधी प्रश्नों पर नीति तैयार करने के लिए कर्तव्यबद्ध है। समिति ऐसे कानूनों के प्रारूप तैयार करती है, जो प्रत्येक श्रमिक को ऐसा

---

* अनुच्छेद ४० सोवियत संघ के नागरिकों को काम पाने का (अर्थात् गारंटीशुदा रोजगार और अपने काम के लिए उसके परिमाण और गुणवत्ता के अनुसार पारिश्रमिक पाने का, जो राज्य द्वारा निर्धारित न्यूनतम से कम नहीं होगा) अधिकार है, जिसमें उनका यह अधिकार भी शामिल है कि वे अपनी प्रवृत्ति, योग्यता, क्षमता, पेशेवर प्रशिक्षण और शिक्षा के अनुसार तथा समाज की आवश्यकताओं का समुचित ध्यान में रखते हुए अपना काम या अपना पेशा या व्यवसाय के प्रकार का चयन कर सकते हैं।

समाजवादी आर्थिक व्यवस्था द्वारा, उत्पादक शक्तियों के निरंतर [illegible] व्यावसायिक और पेशे सम्बन्धी प्रशिक्षण, कौशल में वृद्धि, [illegible] में प्रशिक्षण और व्यावसायिक निर्देशन तथा कार्य नियोजन [illegible] सुनिश्चित है।

काम मुहैया करने के लिए आवश्यक होते हैं जिसका वह अधिकारी है। और यह जानना समिति की ज़िम्मेदारी है जब समस्याए पैदा होती हैं। हमें उन मजदूरो से पत्र मिलते है जो काम पाने मे विलब सहते हैं। समिति मे एक विभाग है, जहा मजदूर शिकायतो, प्रस्तावो और सुझावों के साथ आते है। मास्को मे समिति मे ६०० कर्मचारी काम करते है, जो इन सभी कामो को पूरा करते हैं। और १५ सघ जनतत्रों में से प्रत्येक मे श्रम और सामाजिक प्रश्न सबधी समिति है।"

सोलोव्योव ने, जो एक विद्वान प्रोफेसर की तरह दिखायी देते थे, आगे कहा. "समिति केवल काम पाने के किसी मजदूर के अधिकार के उल्लघन की सीधे सूचना ही नही पाती, बल्कि वह समस्या को सुलझाने के लिए ट्रेड-यूनियनो के साथ निकट सहयोग मे काम भी करती है। ट्रेड-यूनियनो को प्रत्येक व्यक्ति को काम की गारटी करनेवाले कानून सहित सभी श्रम कानूनो को कार्यान्वित करवाने का बडा अधिकार प्राप्त है।"

नीति-निर्धारक श्रम और सामाजिक प्रश्न सबधी राजकीय समिति से मैं ट्रेड-यूनियनों की अखिल सघीय केंद्रीय परिषद के मुख्यालय मे गया। वहा मैंने वैधिक विभाग के प्रधान यूरी कोर्शुनोव और अन्तर्राष्ट्रीय विभाग के व्लादीमिर निकीतिन से काम के अधिकार के बारे मे सवाल किये। निकीतिन ने अमरीका की यात्रा की थी और बहुत अच्छी तरह जानते थे कि मेरे प्रश्न किस सदर्भ मे किये गये थे।

निकीतिन और कोर्शुनोव ने जोर दिया कि ट्रेड-यूनियनो के पास मजदूरों के अधिकारो की रक्षा करने के कई तरीके है। उदाहरणार्थ, वे उच्चतम विधि-निर्माता निकाय सर्वोच्च सोवियत को सीधे कानून का प्रस्ताव कर सकती है और वास्तव में यह करती भी है। और उनके अनेक प्रस्ताव कानून बनते है। यह विधायी कार्य मुझे बताया गया सिर्फ एक कानून का प्रस्ताव लिखने और इसे सर्वोच्च सोवियत को भेजने मे ही निहित नही है। यह सही है कि वे प्रारूप तैयार करती है, लेकिन वह पहले सर्वोच्च सोवियत को नही, बल्कि उस स्थानीय ट्रेड-यूनियन को जाता है, जिसकी उसमे कोई दिलचस्पी हो सकती है। स्थानीय यूनियनो मे प्रारूप पर बहस होती है और अक्सर उसमे सशोधन किये जाते है। सबद्ध ट्रेड-यूनियनों द्वारा स्वीकृत हो जाने के बाद ही प्रारूप को सर्वोच्च सोवियत के समक्ष पेश किया जाता है।

अब दो संस्थाएं – ट्रेड-यूनियनें और श्रम और सामाजिक प्रश्न संबंधी राजकीय समिति – काम के अधिकार की सामान्य संवैधानिक गारन्टी को साकार बनाने के लिए कानून का प्रस्ताव करती हैं।

जैसे ही उनके प्रस्ताव कानून बन जाते हैं, ट्रेड-यूनियनें इस बात की जांच करती हैं कि उन्हें कैसे लागू किया जा रहा है। १३ करोड़ सदस्यों – उत्पादन में लगी आबादी और व्यावसायिक, विशेषीकृत माध्यमिक तथा उच्चतर शैक्षिक संस्थाओं के विद्यार्थियों का ९८१ प्रतिशत – के साथ ट्रेड-यूनियनें एक शक्तिशाली ताकत हैं, जो इन कानूनों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करती हैं।

परन्तु मजदूर के काम के अधिकार की गारंटी करनेवाला पूर्ण से पूर्ण कानून भी लागू करने में कठिन होगा, यदि उस मजदूर के पास कौशल न हो। सोवियत उद्योग अधिकाधिक मशीकृत हो रहा है और अधिकाधिक विकसित टेक्नोलाजी का उपयोग कर रहा है।

इस प्रश्न का सबसे बढ़िया उत्तर शैक्षिक संस्थानों की यात्रा करके दिया जा सकता है, जिसे करने का मैंने इरादा बनाया।

काम की जगहें अज्ञात शैक्षिक संस्थानों के स्नातकों द्वारा भरी जाती हैं। माध्यमिक स्कूल, व्यावसायिक स्कूल, इंस्टीट्यूट, विश्वविद्यालय सभी अपने विद्यार्थियों को काम पर रखने में सक्रिय हिस्सा लेते हैं। मिसाल के लिए, कज़ाख जनतंत्र में अल्मा-अता में कज़ाख राजकीय विश्वविद्यालय के रेक्टर उमीरबेक जोल्दासबेकोव ने विश्वविद्यालय परिसर में आते ही मुझे एक कमरा दिखाया जिसमें विभिन्न उद्यमों के प्रतिनिधि अपने कोर्स पूरे करनेवाले विद्यार्थियों के साथ मिलते हैं। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि १३ हजार विद्यार्थियों में से प्रत्येक छात्र या छात्रा के लिए काम तैयार है, जो उसको पास करते ही मिल जायेगा।

सभी नौजवान लोग ही काम के लिए उच्च शिक्षा के मार्ग का अनुसरण नहीं करते, हालांकि इसके इच्छुक सभी लोगों को उच्चतर स्कूलों में योग्यताएं प्राप्त करने का अधिकार है। कुछ आठवीं कक्षा पास करने के बाद व्यावसायिक स्कूलों में चले जाते हैं, जिनको पास करने पर वे सीधे निश्चित काम पाते हैं। दूसरे माध्यमिक स्कूलों में पढ़ना जारी रखते हैं, जिनको पास करने पर या तो वे सीधे काम पा सकते हैं या उच्चतर शिक्षा के लिए आगे बढ़ सकते हैं।

माध्यमिक स्कूल के ऐसे विद्यार्थी जो इस्टीट्यूट जाने की योग्यता नही रखते, कैसे काम पाते है, यह भी मुझे अल्मा-अता मे ही साफ हुआ। वहा मैं डाइरेक्टर निकोलाई क्लेव्सुर के निदेशन मे चलनेवाले अक्तूबर जिले के अंतर-स्कूल शिक्षा और उत्पादन केंद्र को देखने गया।

हर साल अक्तूबर जिले मे आठवी कक्षाओ के २००० विद्यार्थी निकटवर्ती क्षेत्र मे विभिन्न फैक्टरियो को देखने जाते हैं। वहा वे उस पेशे के बारे मे कुछ अदाजा पाते है जिसे वे भविष्य मे अपनाना चाहेगे। नौवी और दसवी कक्षाओं मे इन विद्यार्थियो को अतर-स्कूल शिक्षा और उत्पादन केंद्र मे लाया जाता है, जहा वे हफ्ते मे छ घटे बिताते है। शुरू मे वे इस केंद्र के किसी भी वर्कशाप मे आजमाइश करते है, जिनमे से सभी के पास ऐसे उत्पादन-उपकरण है जो फैक्टरियो मे इस्तेमाल किये जाते हैं। फिर, प्रयोग की अवधि समाप्त होने पर विद्यार्थी तय करते है कि वे किस वर्कशाप मे विशेषज्ञता प्राप्त करना चाहेगे। शारीरिक जाच के बाद, जो यह तय करती है कि जिस तरह का काम उन्होंने चुना है उसके योग्य वे है या नही, वे अपना प्रशिक्षण शुरू करते है। वर्कशाप मे काम करने के अलावा हर विद्यार्थी उस फैक्टरी मे भी कुछ समय बिताता है, जहा उसने काम करने का इरादा बनाया है। इस तरह, जैसा कि क्लेव्सुर ने मुझसे कहा, स्कूल पास करने के बाद विद्यार्थियो के पास न केवल डिप्लोमे होते है, बल्कि उनके श्रम-कार्य के आरभ या उस चीज मे प्रवेश को भी आसान बना दिया जाता है, जिसे क्लेव्सुर ने दृढ़तापूर्वक "वास्तविक दुनिया" कहा। इसका उद्देश्य स्कूल से काम मे सक्रमण के आघात को हल्का करना है।

सामान्य व्यावसायिक स्कूल (उन शिक्षा और उत्पादन केंद्रो से भिन्न, जिनका क्लेव्सुर निदेशन करते है और जो कई स्कूलो की सेवा करते है) भी "वास्तविक दुनिया" मे प्रवेश के लिए विद्यार्थियो को तैयार करते है। कुल मिलाकर सोवियत सघ मे ७,३०० व्यावसायिक स्कूल है, जिनमे ४० लाख विद्यार्थी पढ़ते है। इन विद्यार्थियो को लगभग तीन लाख कुशल अनुभवी मजदूर पढ़ाते है।

लेकिन शैक्षिक सस्थान काम के लिए तैयार करनेवाले एकमात्र मार्ग नही है। मास्को मे जब मुझे केवल एक दिन के अखबारो की अनूदित प्रतिया दी गयी, तो मुझे कम से कम एक दूसरे मार्ग की आशिक झलक मिली। विज्ञापनो के कालम पर कालम मे काम के लिए

स्थानों और उन योग्यताओं को गिनाया गया था जो मजदूरों के लिए उन्हें भरने हेतु आवश्यक थी। काम की तलाश करनेवाले लोगों के कोई विज्ञापन नहीं थे, जैसाकि यह वहां होता है, जहां श्रम शक्ति का अतिरेक या बेरोजगारी होती है। यहां बात बिल्कुल ही उल्टी थी, काम मजदूरों की तलाश कर रहा था।

"और अगर कोई आदमी काम बदलना चाहे तो? क्या वह उसी काम को करते रहने के लिए बाध्य है, जिसे वह कर रहा है? मेरे देश में बहुत से लोग सोचते हैं कि यही मामला है," मैंने पूछा।

ट्रेड-यूनियनों की अखिल संघीय केंद्रीय परिषद में कोर्नीनोव ने कहा कि "प्रत्येक मजदूर को एक काम को छोड़कर दूसरे पर जाने का कानूनी अधिकार प्राप्त है। लेकिन मजदूर को एक महीने की नोटिस देनी चाहिए, ताकि उसका स्थानापन्न पाया जा सके और उत्पादन प्रक्रिया सुचारु ढंग से चल सके। यदि उद्यम के डाइरेक्टर को स्थानापन्न तुरत मिल जाये, तो काम छोड़कर जानेवाला मजदूर वैसा महीने भर इन्तजार किये बिना ही कर सकता है। लेकिन वह एक महीने के अंत में तब भी छोड़कर जा सकता है, जब स्थानापन्न न मिला हो।"

"डाइरेक्टर स्थानापन्न कैसे पाते हैं?"

यहां फिर अखबारों का हवाला दिया गया। काम के बारे में सबसे मौखिक रूप से भी फैलती है और कर्मीवृंद की प्रशिक्षण प्रणाली तो हमेशा ही मौजूद है, जो विशेषीकृत प्रशिक्षणप्राप्त मजदूरों की सतत धारा उपलब्ध करती है।*

अपनी आशा से कहीं जल्दी ही मैं एक ऐसे आदमी से मिला जिसका जीवन इस बात का प्रमाण था कि मजदूर जब चाहे तब अपने काम बदल सकते हैं। मैंने उसे कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अखबार 'प्राव्दा' – जिसकी दैनिक वितरण संख्या १,१०,००,००० है, – के कार्यालय में एक संपादकीय मेज के पीछे बैठा पाया, [illegible] [illegible] मजदूर [illegible] थे जिनकी उम्र ५० से कुछ अधिक लगती थी।

---

* [illegible]

साप्तेव ने बडे प्रसन्नतापूर्वक अपने "सेवा-वृत्त" के बारे मे बताया। उनका जन्म पश्चिमी साइबेरिया मे ओम्स्क मे हुआ था। जब वह ११ साल के ही थे, उनके पिता युद्ध मे मारे गये। इसके शीघ्र बाद ही उनकी माता का भी देहात हो गया। इसलिए उन्होने एक अनाथालय मे व्यावसायिक स्कूल मे अपनी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की और नदी बदरगाह मे क्रेन-आपरेटर की विशेषज्ञता प्राप्त की। जल्दी ही उन्होंने पाया कि वह दूसरे पेशे मे काम करना चाहते है और पाइप-फिटर बन गये। इसके बाद उन्होंने डीज़ल बोट-मेकैनिक का प्रशिक्षण प्राप्त किया और फिर एक्सकैवेटर-आपरेटर की योग्यता का प्रमाणपत्र प्राप्त किया। बाद मे उन्होंने मोटर-सडक निर्माण इस्टीट्यूट पास किया और इजीनियर के रूप मे काम करने लगे।

उन्होने इन सभी नये पेशो के लिए अपने खाली समय मे प्रशिक्षण प्राप्त किया। किसी ने भी विभिन्न पेशो के उनके लबे प्रतिचयन मे बाधा नही डाली, पर वह पाच पेशो मे प्रमाणपत्र प्राप्त करने के बाद भी सतुष्ट नही थे। शायद इस वजह से कि अपनी विभिन्न परीक्षाओ के लिए अध्ययन करते समय उन्हे काफी पढना पडता था, वह लिखित शब्दो से आकर्षित हो गये। जो कुछ भी हो उन्होने सोचा कि पत्रकार बनना बुरा नही होगा।

उन्होंने दूरवर्ती मास्को विश्वविद्यालय के पत्रकारिता सकाय की प्रवेश-परीक्षा पास कर ली और वहा एक विद्यार्थी बन गये। लेकिन सबा कोर्स पूरा करने के पहले उन्होने सोचा कि यह देखना तर्कसगत होगा कि क्या वह वास्तव मे पत्रकारिता-कार्य के उपयुक्त है जो अतत उनके सभी पूर्ववर्ती कामो से बिल्कुल भिन्न था।

लाप्तेव सकोची नही थे। वह एक बडे अखबार सोवेत्स्काया रोस्सीया' ('सोवियत रूस') के कार्यालय मे आये और अपनी सेवाए पेश की।

"सपादकों ने मेरा प्रस्ताव मान लिया," उन्होंने कहा और शरारतपूर्ण मुस्कराहट से कहा, "और उन्हे इसका खेद नही था।"

वहा से वह यथासमय कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति की सैद्धातिक और राजनीतिक पत्रिका 'कोम्मुनिस्त' मे चले गये और उसके बाद 'प्राव्दा' मे जहा वह सपादक-मडल मे शामिल हो गये। पर उनकी ज्ञान की तलाश समाप्त नही हुई। अपने खाली समय मे

वह मास्को विश्वविद्यालय में दर्शन का अध्ययन करते थे और अब उ
पास इस विषय की उच्चतम डिग्री है। दुनिया के सबसे बड़े प्रका
को चलाने में सहायता देने के अलावा वह व्याख्यान देते और पा
भी हैं। जब मैं उनके कमरे में था तो उन्होंने अभी-अभी एक ब
पुस्तक की कुछ प्रतियां प्राप्त की थीं, जिसे उन्होंने प्रकृति-रक्षा
लिखी थी। उन्होंने उसका नाम 'हरित गृह की आशा' रखा थ

"प्रकृति-रक्षा मेरा शौक है," उन्होंने ऐसे स्पष्ट किया म
उनकी विविध उपलब्धियों के संबंध में कुछ भी असाधारण न ह
संयोगवश मैं इस विषय पर वयस्कों के लिए लिखी उनकी पुस्तक प
ही देख चुका था। यह अंग्रेज़ी में *The Planet of Reason* नाम
से प्रकाशित हुई थी (प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७७)। जब लाप्
ने जाना कि मैं भी बच्चों के लिए लिखता हूं तो वह अपनी मेज
पास गये और उसकी दराज से इस नयी पुस्तक की एक प्रति निका
और मुझे भेंट कर दी। मुझे आश्चर्य है कि दुनिया के बड़े अखब
के कितने संपादक दर्शन में डाक्टर की डिग्री पाते और प्रकृति-र
पर बच्चों के लिए पुस्तकें लिखते हैं।

लाप्तेव के जीवन में परिवर्तनों और उनके एक सुदक्ष मजदूर
पेशे से एक कुशल बुद्धिजीवी के पेशे में संक्रमण के बारे में सोचते
मैंने एक और आदमी को याद किया, जिससे मैं १९६९ में मि
था – इल्या फ़्रेज़। उसने अपना वयस्क जीवन एक मेकैनिक के रूप
शुरू किया, लेकिन इस पेशे में सात साल काम करने के बाद वह ब
फिल्मों का निदेशक बन गया। कम से कम उसकी एक फिल्म आन
'दिम्का' जो 'मैंने पापा को खरीद लिया' नाम से भी सुप्रसिद्ध
अमरीका में भी दिखायी गयी।

सोवियत संघ में मैं अन्य जिन लोगों से मिला और जिन
अपना पेशा बदला, उनमें एक साइबेरिया के बाइकाल झील प्रदेश में
बुर्यात सोवियत स्वायत्त समाजवादी जनतंत्र की राजकीय नियोजन सम
के उप-निदेशक मिखाईल पेत्रूनिन थे। अधिकांश बुर्यातवासियों
भांति पेत्रूनिन एक ऐसे परिवार से आये, जो क्रांति के पहले अशि
था। ज़ार के अंतर्गत बुर्यातवासियों के लिए स्कूल लगभग बिलकुल
थे। लेकिन पेत्रूनिन उस काल में बड़े जब क्रांति कभी रूसी साम्रा
८१ शासित अल्पसंख्यक जातियों के लिए साक्षरता ले आयी
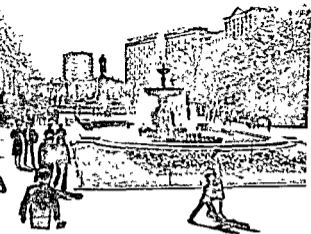
के पूर्वी भाग में। सेवी नदी पर पुल के निर्माता और रिटर 3

ОБЪЯВЛЕНИЯ

БЮРО ПО ТРУДОУСТРОЙСТВУ
НАСЕЛЕНИЯ
ОКТЯБРЬСКОГО РАЙОНА
приглашает на работу
на предприятия и в организации

Телефон 135-33-25

व्यापक चुनाव .

ओक्त्याब्रस्की ज़िले का रोज़गार कार्यालय निम्नलिखित उद्यमों और संगठनों में काम के लिए निमंत्रित करता है

उद्योग – खरादी, पालिशगर, मिलिंग मशीन आपरेटर, उपकरणों के मरम्मतसाज़।

परिवहन – ट्राम ड्राइवर, मेकैनिक।

व्यापार और सार्वजनिक खान-पान प्रबंध – सेल्समैन, ख़ज़ांची, सफ़ाई करनेवाली, बर्तन धोनेवाली, मज़दूर

मास्को, सुदूर पूर्व, सुदूर उत्तर और देश के अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में उद्यमों में श्रम-समझौते किये जाते हैं

लिखाचोव मोटर-कारख़ाना, मास्को

आवश्यकता है

( विभिन्न विशेषज्ञताओं के मज़दूरों की माँग के बारे में सूचना-पट्ट पर विज्ञापन )
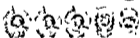
ПРИГЛАШАЕТ

СТЕРЖЕНЩИКОВ
ТОКАРЕЙ,

ГРУЗЧИКОВ,

'मास्कोव्स्काया प्राव्दा'
प्रकाशन को
तुरंत आवश्यकता है
सुदक्ष कम्पोज़िटर,
आफसेट प्रिंटर,
...दी ( सभी मशीनों के ),
समायोजक और
प्रेस-मशीन मरम्मतसाज़,
परखकर्ता
नक़लनवीस,
छपाई-इंजीनियर

ИЗДАТЕЛЬСТВУ «МОСКОВСКАЯ ПРАВДА»
срочно требуются

पूर्णकालिक कर्मियों की आवश्यकता है ( कारखाने के प्रवेश-द्वार पर विज्ञापन

माल गाड़ियों का उत्पादन बढ़ाने के लिए कारखानों का विस्तार किया जा रहा है

बाइकाल के तट पर फ्रैंकलिन फोल्सम
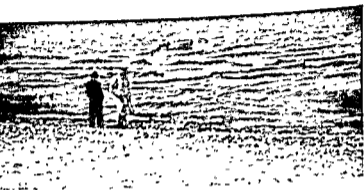
सोवियत संघ में स्कूल से ही पर्यावरणीय रक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वियात्का नगर में स्कूल नं० ५७ में पर्यावरणीय रक्षा की कक्षा

अपने बाल्यकाल मे ही पेत्रूनिन अपने घर के निकट विशाल बाइकाल भील पर नौपरिवहन से आकर्षित हुए। बाइकाल भील जिस की गहराई १,६२० मीटर है, मीठे जल की मात्रा की दृष्टि से दुनिया की सबसे बडी भील है। बहरहाल उन्होने सोवियत व्यापारिक बेडे मे प्रवेश करने का फैसला किया। वह ब्लादीवोस्तोक गये, जहा अध्ययन के बाद उन्होने पोत-इजीनियर की योग्यता प्राप्त की। शीघ्र ही वह दक्षिण प्रशात महासागर मे वैज्ञानिक अन्वेषण कार्य करनेवाले पोतो पर रवाना हो गये। वह अलास्का मे बदरगाहो से भी परिचित हुए। दुनिया के महासागरो की यात्रा करने के बाद पेत्रूनिन ने अपना पेशा बदल दिया और मुख्यभूमि पर औद्योगिक उद्यमो मे इजीनियर के रूप मे काम करने लगे। वहा उनकी दिलचस्पी का दायरा एक उद्यम के कार्य से बढकर सपूर्ण समाजवादी अर्थव्यवस्था के कार्य तक फैल गया। पुन उन्होने नि शुल्क शिक्षा प्रणाली का लाभ उठाया और मास्को मे अर्थशास्त्र का अध्ययन किया। फिर औद्योगिक रूप से कभी पिछडे हुए बुर्यात जनतत्र मे कुछ समय तक विभिन्न उद्यमो मे एक अर्थशास्त्री के रूप मे काम करने के बाद वह सपूर्ण बुर्यातिया की राजकीय नियोजन समिति के उप-निदेशक बन गये।

देश के अधिकाधिक औद्योगीकृत होते जाने के साथ योग्यता-प्राप्त मजदूरो की आवश्यकता बढती गयी, पर इसके साथ ही लोगो को शिक्षा प्रदान करने की क्षमता भी बढ गयी। माध्यमिक शिक्षा समूचे रूप मे अनिवार्य हो गयी और माध्यमिक स्कूलो मे शिक्षा को एक बडी सीमा तक व्यावसायिक प्रशिक्षण मे जोड दिया गया।

व्यावसायिक प्रशिक्षण के बारे मे मुझे बहुत सी चीजें व्यावसायिक प्रशिक्षण सबधी सोवियत राजकीय समिति मे उसके उपाध्यक्ष अलेक्सेई ओसिपोव तथा वर्कशाप मे प्रशिक्षण और कौशल सुधार विभाग के प्रधान फ्योदोर उलीतिन से मालूम हुई। वहा मुझे एक और चीज मालूम हुई, जो मजदूरो के कल्याण के बारे मे राज्य की चिता को प्रमाणित करती है। नये कामो मे मजदूरो के पुनःसमजन की समस्या को मौलिक ढग से आसान बनाया जाता है – नया कौशल सीखते समय मजदूर को पूरा वेतन दिया जाता है।

मुझसे मिलनेवाले इन और अन्य व्यक्तियो ने इस चीज को प्रमाणित किया कि काम का अधिकार पेशो के चुनाव के अधिकार की

तरह ही वास्तविकता है, भले ही यह इस तथ्य से पुष्ट होत
वे इस के पहले कई पेशे बदल चुके थे। इसका कोई महत्व न
वे कजाखस्तान या बुर्यातिया में, लिथुआनिया या मास्को में
रहे थे। उन सबने तब तक काम किया, जब तक वे पेंशनर
गये, जो सामाजिक रूप से उपयोगी श्रम की निर्धारित आयु
आराम का अधिकार प्रदान करता है।

स्पष्टतः यह निश्चित करने के लिए मैंने २७ करोड़ सोवियत
में से कुछ सौ से भी नहीं पूछा कि क्या उन सबके पास का
लेकिन सोवियत संघ के बाहर शत्रुतापूर्ण प्रेस तक में मैंने कि
अफवाहें नहीं सुनी कि यहां बेरोजगारी है। मेरे चयन-आंकड़े
लेकिन क्या यह देखने के लिए कि जल अच्छा है, पूरे चश्मे क
पीना वास्तव में आवश्यक है?

यह जोड़ना चाहिए कि सोवियत संघ में काम के अधिकार
काम करने के कर्तव्य का भी अस्तित्व है। पेंशनरों और असमर्थ
तथा बच्चों को छोड़कर सोवियत समाज में कोई भी आदमी का
बिना नहीं रहता। कोई जमींदार नहीं है जो लगान से प्राप्त
पर जीते हैं, कोई निवेशक नहीं है जो कूपन काटकर जीते हैं।
कोई आदमी किसी रूप में दूसरों के श्रम से अर्थात कारखाना
फैक्टरियों के मालों के गबन या चोरी से जीने का प्रयास कर
तो वह शीघ्र ही पकड़ा जायेगा और एक अपराधी के रूप में उसे
सजा मिलेगी। यहां नये समाज के निर्माण में भाग लेनेवालों को स
मिलता है, न कि परजीवियों को। और मैं आगे के एक अध्या
इस प्रश्न की जांच करूंगा।

यह आग्रह करने में कि स्वस्थ वयस्कों को अनिवार्यतः काम
चाहिए, कुछ भी बुरा नहीं है। अधिकतर हर व्यक्ति भूमि और
उत्पादन के प्राकृतिक साधनों पर सामूहिक स्वामित्व रखता है। यह
नहीं है कि शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति को सार्वजनिक भण्डार से
बदले कुछ योगदान देने का प्रयास किये बिना उसमें कोई चीज
करने दिया जाय, भले ही वह मीरी जैसी कोई विख्यात अदाकार
ही क्यों न हो। मुआवजा और शारीरिक का यह सामाजिक
सोवियत समाज का विशिष्ट लक्षण है।

करने में उतनी ही वरीयता देता है, जितनी कि वे पूर्णकालिक तौर पर काम करते हुए पाती। इसके अलावा, पुरुष और स्त्रिया पेंशन पर जाने की निर्धारित अवधि के बाद भी काम कर सकती हैं और इसके अन्तर्गत कुछ कामों में पूर्ण वेतन के साथ पूर्ण पेंशन भी प्राप्त कर सकती है। और पेंशन पर जानेवाले पुरुषों और स्त्रियों के लिए अंशकालिक कामो की सख्या बढती जा रही है।

शिक्षा और नियोजन यह गारटी करने के दो साधन हैं कि प्रत्येक मजदूर को काम मिले और कोई भी काम नहीं, बल्कि उसकी अपनी पसद का काम।

इस चीज़ को प्रमाणित करने के लिए उदाहरण पर उदाहरण दिये जा सकते हैं कि सोवियत सघ मे बेरोज़गारी का अस्तित्व नहीं है और उन विधियों को भी दिखाया जा सकता है जिनके द्वारा मज़दूरो और काम की जगहों में ताल-मेल बैठाया जाता है। लेकिन सोवियत समाज रोजगार के क्षेत्र मे गतिशील सतुलन की यह स्थिति कैसे प्राप्त करता है?

ज़ारशाही रूस मे बेरोज़गारी थी। फिर उद्योग पहले विश्व-युद्ध, गृह-युद्ध और अमरीकी फौजो सहित १४ विदेशी फौजो के हस्तक्षेप के सात वर्षो द्वारा नष्ट हो गया। गृह-युद्ध की समाप्ति के बाद अनेकानेक किसान काम की तलाश में शहरो मे आ गये। इसके अलावा, किसान आबादी मौसमी बेरोज़गारी से भी पीडित थी। तीसरे दशक के अत मे ग्रामीण क्षेत्रो मे बेरोज़गारों की सख्या ८०-९० लाख हो गयी थी। इन लोगो के बीच निरक्षरता के उच्च स्तर और औद्योगिक कौशल के अभाव ने उद्योग मे उनकी खपत को बिल्कुल कठिन बना दिया।

विशाल, अस्थिर, अदक्ष आबादी को एक विकासमान अर्थव्यवस्था के अनुकूल बनाने की इस जटिल समस्या को हल करने का प्रयास करते हुए राज्य ने बहुविध कदम उठाये। पहला, बेरोज़गारों की बड़ी सख्या को बोर्डिंग गृहो या बैरको मे मुफ़्त भोजन और आवास प्रदान किया गया। बहुतो को रुपये-पैसे की भी मदद दी गयी। लेकिन ये कदम केवल लोगो को जीवित रहने में ही मदद कर सकते थे। कई मामलो में स्वय [illegible] ने ऐसे समूह सगठित किये, जिन्होंने सरकार के साथ अनुबध [illegible] सार्वजनिक निर्माण परियोजनाओं में काम किया। इनमें सार्वजनिक निर्माण परियोजनाओं में उस काम के नये प्रकारो को

उल्लेखनीय है कि सोवियत दृष्टिकोण मे श्रम जितना अनिवार्य है, उतना ही काम के बाद विश्राम का अधिकार। सविधान का अनुच्छेद ४१ विश्राम और अवकाश की गारटी करता है।* ट्रेड-यूनियने इस बात को सुनिश्चित करती है कि सामान्यत. दो से चार हफ्तो की सवेतन छुट्टी मिले। इसके अलावा, ट्रेड-यूनियने अवकाश-स्थलो और विश्राम-गृहो की बडी सख्या का प्रबध करती है। सुदूर उत्तर के मज़दूर उष्ण धूपहले काले सागर पर अपनी छुट्टिया बिता सकते हैं। बुर्यातिया मे मैंने पाया कि मज़दूरो ने छुट्टियो मे ट्रेड-यूनियनों द्वारा सगठित विदेशों – भारत और हगरी – की यात्राए की थीं।

ट्रेड-यूनियने मज़दूरो की फुर्सत के घटो मे विविध मनोरजन कार्यकलाप भी – नृत्य मडलिया, थियेटर मडलिया, वृदगान मडलिया और खेलकूद क्लब के देशव्यापी जाल – सगठित करती हैं।

सोवियत मजदूर केवल समाज द्वारा प्रत्याभूत काम के बदले मे समाज को देता ही नही है, बल्कि वह समाज से बहुत कुछ पाता भी है, अशत अपने अधिकारो के परिणामस्वरूप और अशत स्वय मज़दूरो की पहल के परिणामस्वरूप।

---

*अनुच्छेद ४१ सोवियत सघ के नागरिकों को विश्राम का अधिकार है।
इस अधिकार को मजदूरों तथा कर्मचारियों के लिए ज्यादा से ज्यादा ४१ घंटे का कार्य-सप्ताह लागू कर, कई पेशों एवं उद्योगों के लिए कार्य दिवस की अवधि में और रात्रिकालीन काम के घंटों में कमी कर, वार्षिक सवेतन छुट्टी, साप्ताहिक अवकाश दिवस प्रदान और सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य-रक्षा संस्थाओं के जाल का विस्तार कर, और बड़े पैमाने पर सामूहिक शारीरिक व्यायाम एवं पर्यटन का विकास कर, निवास-स्थान के इलाके में मनोरंजन की सुविधाएं मुहैया कर तथा अवकाश के समय के विवेकसम्मत उपयोग के लिए अन्य अवसर उपलब्ध कर सुनिश्चित बनाया जाता है।
सामूहिक फार्मों के किसानों के लिए काम और अवकाश का समय उनके सामूहिक फार्म द्वारा नियमित किया जाता है।

अध्याय २

# आहार और वस्त्र का अधिकार



सोवियत संविधान में कोई भी शब्द उसी तरह से यह नहीं कहता 'प्रत्येक नागरिक को आहार और वस्त्र का अधिकार है,' जिस [तर]ह से कि उसका कोई भी अनुच्छेद नहीं कहता कि 'गुरुत्वाकर्षण नियम समूचे सोवियत संघ में क्रियाशील होगा।'

कुछ चीजों के बारे में कहना आवश्यक नहीं होता – वे स्वतःस्पष्ट [हो]ती है। सोवियत संघ में यह निश्चित समझा जाता है कि राज्य की [य]ह व्यवस्था करने की जिम्मेदारी है कि सभी नागरिकों के पास पर्याप्त [आह]ार और पहनने को हो, भले ही यह धारणा दुनिया के बहुत से अन्य [दे]शों की सरकारों के सिद्धांत या व्यवहार का अंग नहीं है।

सोवियत संघ में यह गारंटी कि प्रत्येक व्यक्ति के पास आहार और वस्त्र होगा, सरकार और लोगों के परस्पर संबंधों के स्वरूप से सर्वप्रथम उस वेतन पर रोजगार की गारंटी से उत्पन्न होती है, जो निर्धारित न्यूनतम से कम न हो। यह वर्धमान जीवन-स्तर के अधिकार जैसी अन्य संवैधानिक गारंटियों से उत्पन्न होती है, भले ही यह उनसे सीधे उत्पन्न न होती हो। और जीवन-स्तर वास्तव में ऊपर उठता है। १९[illegible] से १९६० तक सोवियत संघ में शहरी आय में ५० प्रतिशत तथा ग्रामीण आय में १०० प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई। उसी अवधि में उपभोक्ता कीमत सूचकांक एक प्रतिशत के एक-तिहाई से भी कम बढ़ा। आहार और वस्त्र रखने का अधिकार संविधान द्वारा अन्य तरीकों से भी अभिरक्षित किया जाता है। अनुच्छेद [illegible]* नागरिकों

---

*अनुच्छेद [illegible]

को राज्य द्वारा उपलब्ध भोजन-व्यवस्था ( रेस्तराओं, कैंटीनों भोजनालयों, अर्ध-तैयार खाद्य-सामग्रियों की दुकानों ) का उपयोग करने का अधिकार प्रदान करता है। अनुच्छेद १८ * भी इस संबंध में अपनी भूमिका अदा करता है। यह पर्यावरण की रक्षा से भी संबद्ध है, जो जीवन के समर्थन के लिए आवश्यक सभी चीजों का अंतिम स्रोत है।

केवल ते लोग खाद्य-पदार्थ खरीद सकते हैं, अगर वे उपलब्ध हों। और राज्य संपूर्ण देश के लिए योजना बनाने की अपनी क्षमता और अपने कर्तव्य की वजह से इस बात की व्यवस्था करता है कि आवश्यक स्थान पर समयानुसार खाद्य-पदार्थ पहुचाये जाये। यदि सप्लाई में विलंब के कारण लाइने होती हैं अथवा पूरे के पूरे ज़िलों में कतिपय खाद्य-पदार्थों की कमी होती है ( और ऐसा हुआ है ), तो ये असुविधाएं या कठिनाइया मुख्य विकास-प्रक्रिया की ही अपवाद हैं। यह प्रक्रिया एक अधिकार के नाते सबके लिए काफी आहार और वस्त्र उपलब्ध करते की है।

सोवियत संघ की यात्रा करनेवाला कोई भी व्यक्ति देख सकता है कि लोग सामान्यतः पर्याप्त रूप से खाते-पीते हैं। कुछ लोग वस्तुतः आवश्यकता से अधिक खाते-पीते हैं, अगर ऐसा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कहा जाये।

मैंने मास्को में मास की कम सप्लाई की अफवाहे सुनी थी, लेकिन जिन दुकानों में मैं गया, वहा मास उपलब्ध था ( बेशक लोगों की पहुच के भीतर कीमतों पर )। और कज़ाख़स्तान में मास सर्वत्र उपलब्ध था। कज़ाख़ पशुपालकों के बेटे-पोते उस भोजन का स्वाद नहीं भूल गये हैं, जो खानाबदोशों का मुख्य आहार था। कई बार विभिन्न स्थानों में मेरे मेज़बान मुझे घोड़े का मास परसते हुए मुझे प्रश्नसूचक ढंग से देखते थे। स्पष्टतः उन्होंने सुन रखा था कि पश्चिम में कुछ लोग घोड़े का मास खाना अनुचित समझते हैं। मुझे घोड़े के मास से ऐसा कोई परहेज नहीं था, किंतु जहा भी मैं गया, मुझे मास के बने खाद्य-

---

*अनुच्छेद १८ वर्तमान और भावी पीढ़ियों के हित में सोवियत संघ में भूमि और उसके खनिजों तथा जल-संसाधनों, वनस्पति एवं जीव-जगत् की रक्षा तथा उनका विज्ञानसम्मत, विवेकपूर्ण उपयोग करने, वायु तथा जल की शुद्धता बनाये रखने, प्राकृतिक सम्पदा के पुनरुत्पादन को सुनिश्चित बनाने तथा पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक क़दम उठाये जाते हैं।

के लिए इसके समाधनों का प्रयोग करते आये हैं। (अन्य ग्रहों के उपयोग का विकल्प अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है और भविष्य में कुछ समय तक प्राप्त भी नहीं हो सकता।) लेकिन संसार के इस भाग के मानव जीवन के तीस-चालीस लाख वर्षों के दौरान भूमि से फसल प्राप्त करने का इतना बड़ा प्रयास कभी नहीं किया गया, जितना कि १९५४ से शुरू करके कज़ाखस्तान में किया गया।* ३,५०,००० नौजवानों और ६,००,००० वयस्क इंजीनियरों और तकनीशियनों, कृषि-विज्ञानियों, मशीन-आपरेटरों का परती क्षेत्रों में तांता बंध गया और वे पहली बार परती भूमि की जुताई और बुआई करने लगे। १९५४ से १९६० तक उन्होंने उत्तरी कज़ाखस्तान में स्तेपी की २५० लाख हेक्टर (६ करोड़ एकड़ से अधिक) ज़मीन को खेतीयोग्य बनाया। उन्होंने यह भी जाना कि हलों और पटेलों की पुरानी किस्मों के उपयोग से बड़ी धूल उठती है। इन स्थानों के निवासियों को वायु भूक्षरण और सूखे से निपटने के लिए नयी मशीनें और नयी कृषि विधियों की खोज करनी पड़ी। लेकिन

---

*हरेक व्यक्ति ने ही कज़ाखस्तान में परती भूमि परियोजना में सहायता करने की कोशिश नहीं की। उन दिनों, जबकि यह योजना कार्यान्वयन के लिए तैयार की गयी, वाशिंगटन में सैनिक विभाग के मनोवैज्ञानिक युद्ध डिवीजन के अनुसंधान के डाइरेक्टर कार्लटन एस० स्कोफिल्ड ने एक ऐसी पुस्तक की स्वीकृति प्रदान की जिसे लिए सैनिक विभाग ने आर्डर दे रखा था। यह जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय के मानव समाधान अनुसंधान कार्यालय के लिए लारेन्स क्रैडर और आइवर वैल्श द्वारा लिखी गयी थी तथा १९५५ में जब ड्वाइट आइजनहावर राष्ट्रपति थे, प्रशासन सीमित व्यक्तियों के बीच वितरित की गयी थी। पुस्तक का शीर्षक था "कज़ाख मनोवैज्ञानिक युद्ध के लिए एक आधार-अध्ययन"। इसके लेखक कज़ाखस्तान में तोड़-फोड़ के लिए निम्नलिखित सिफारिशें करते हैं: ईरान और अफगानिस्तान से लगी सोवियत सीमाओं के पार मुखबिरों की धारा; एक स्थान पर टिककर बसनेवाले जीवन और सामूहिक फार्म के प्रति खानाबदोशी कज़ाखों के बीच प्रतिरोध; पारिवारिक मसलों पर [illegible] की पुरानी [illegible] प्रणाली और [illegible] के अनुसार पारिश्रमिक की नयी सोवियत प्रणाली के बीच [illegible]; [illegible] अवधारणाओं का बने रहना, मुस्लिम [illegible] और [illegible] के बीच टकराव।

टकराव के इन मुद्दों का इस्तेमाल करने के लिए अगर अमरीका के कोई प्रयत्न [illegible] उनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। लेकिन अगर वाशिंगटन में किसी अन्य [illegible] के लिए इस पुस्तक पर आधारित [illegible] का प्रयत्न किया [illegible] उनके प्रयत्न [illegible] की [illegible] अवधारणाओं को आकर्षित करने में [illegible] नहीं हुए।

इसके फलस्वरूप सोवियत संघ में अनाज का उत्पादन काफी बढ़ गया। १६५४ के पहले कजाखस्तान १० लाख टन अनाज सालाना का उत्पादन करता था। अब यह २४ करोड़ टन से २६ करोड़ टन तक अनाज सालाना का उत्पादन करता है।

अपनी पुस्तक *The Planet of Reason* में कजाखस्तान में इस परियोजना की विशालता के बारे में लिखते हुए इवान लाप्तेव ने जोर दिया "कोई भी एक उद्यमी, चाहे वह कितना ही धनी क्यों न हो ऐसी समस्या को हल करने की स्थिति में नहीं होगा। यह राजकीय समस्या थी और अपने संयुक्त प्रयासों के साथ संपूर्ण राज्य ही इस भूमि को बचाने का सही रास्ता पाने और उसके उचित उपयोग को सुनिश्चित करने में समर्थ था।"

सबके लिए आहार-सामग्रियों को बढ़ाने के उद्देश्य से परती भूमि के विकास के सामूहिक, समाजवादी प्रयास भूस्वामित्व के बारे में कार्ल मार्क्स के शब्दों की याद दिलाते हैं "समाज के उच्चतर आर्थिक रूप की दृष्टि से अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा भूमि का निजी स्वामित्व उतना ही हास्यास्पद प्रतीत होगा जितना कि एक व्यक्ति द्वारा दूसरे का निजी स्वामित्व।"

अधिक खाद्य-पदार्थ (और अन्य फसलें) उत्पादित करने के लिए बड़ी योजनाओं में उत्तर की ओर बहनेवाली नदियों के जल को मध्य एशिया में तप्त रेगिस्तानों की ओर मोड़ना भी शामिल है। लेकिन इन योजनाओं के कार्यान्वयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है। कोई भी उन विभिन्न प्रभावों को नहीं जानता, जो उदाहरणार्थ, नदियों को मोड़ने से उत्तरी ध्रुव महासागर पर पड़ेंगे। क्या इससे ध्रुव महासागर का रासायनिक संघटन और जल का तापमान नहीं बदल जायेगा, जो वर्तमान समय में मछलियों की प्रचुर मात्रा और जानवरों के शिकार का स्रोत है? अगर जल का तापमान बदल जाये, तो समूचे उत्तरी गोलार्ध का जलवायु भी बदल सकता है। और अतः खाद्य-पदार्थों का कुल उत्पादन बढ़ने के बजाय घट सकता है।

समाज को आवश्यक खाद्य और अन्य सभी कृषि उत्पादों की दीर्घकालीन आधार पर सप्लाई करने के निरंतर प्रयास में सोवियत सरकार प्रकृति-रक्षा के समर्थकों के आंदोलन में अधिकाधिक दिलचस्पी दिखाती है। १६७४ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय

समिति और सोवियत मंत्रिपरिषद ने "प्रकृति-रक्षा को बढाने और प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग मे सुधार करने के बारे मे" एक प्रस्ताव स्वीकार किया था। १९७७ में स्वीकृत संविधान प्रकृति-रक्षा के लिए व्यवस्था करता है ( अनुच्छेद १८ )।

विभिन्न संस्थाएं ग्रामीण जीवन को बेहतर बनाने के लिए अधिकाधिक प्रयास कर रही हैं और आशा की जाती है कि इस प्रयास का एक नतीजा कृषि उत्पादन की वृद्धि होगी। सामूहिक किसानों के लिए भौतिक और नैतिक प्रोत्साहन बढाया गया है, लेकिन कृषि उत्पादन मे समस्याएं अब भी बनी हुई हैं। क्रांति के बाद कृषि उत्पादन मे साढे तीनगुनी वृद्धि हुई है, लेकिन यह वृद्धि औद्योगिक उत्पादन के मुकाबले मे छोटी है। एक कठिनाई यह भी रही है कि अक्सर पडनेवाले सूखो के कारण फसले खराब हुई।

परंतु अधिक अनाज उपजाने का प्रयास सघन और बडा* है और जो चीज सोवियत संघ नही पैदा कर सकता, उसे वह बेचने के इच्छुक देशो से खरीद सकता है।

संक्षेप में, सोवियत नागरिक आहार और वस्त्र के अधिकार का उपयोग करते है।

---

*सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २६वीं कांग्रेस के निर्णयों के अनुसार जिसने सामाजिक विकास का एक व्यापक कार्यक्रम पेश किया, मई १९८२ में १९९० तक का खाद्य कार्यक्रम स्वीकार किया गया। इसने कृषि के और आगे विकास के लिए बड़े कदमों की रूपरेखा पेश की और संसाधनों की व्यवस्था की। इसका उद्देश्य यथासंभव कम समय में देश की आबादी को प्रचुर खाद्य-पदार्थ उपलब्ध करना है। – सं०

अधिकार, विश्राम और अवकाश का अधिकार (अनुच्छेद ४१) और व्यायाम तथा खेलकूद के विकास को राजकीय प्रोत्साहन का अधिकार (अनुच्छेद २४) स्वास्थ्य-रक्षा में सहायता करते हैं। स्वास्थ्य-रक्षा के अन्य विशेष उपाय भी किये जाते हैं।

दुनिया में यह रिवाज है कि एक देश की मूल विधि स्वास्थ्य-रक्षा की गारन्टी देती है और प्रश्न को निम्नलिखित ढग मे पेश किया जाना चाहिए क्या ये गारन्टियां लोगों के जीवन मे प्रतिबिम्बित होती हैं?

एक ऐसे देश मे, जहा डाक्टरी खर्च पारिवारिक बजट का एक बड़ा हिस्सा बनाता है, सोवियत सघ की यात्रा पर आया कोई भी व्यक्ति इस चीज को देखकर दग रह जाता है कि सभी प्रकार की डाक्टरी सेवा, अस्पताल-वास और सभी दवाओ का आधा निशुल्क हैं। लेकिन एक यात्री स्वास्थ्य सबधी प्रश्नों का उत्तर सड़क के नुक्कड़ पर खड़ा होकर और राह गुजरनेवालो को देखकर नही दे सकता। अगर मास्को मे मैने किसी नुक्कड पर ऐसा सर्वेक्षण किया, तो समवत मै कह सकता हूं कि सोवियत लोग जरूरत से ज्यादा मोटे होते हैं। अगर मैने यह समान्यीकरण विलनियूस या अल्मा-अता मे नुक्कड "जनगणना" के बाद किया तो मेरा निष्कर्ष होता कि सोवियत लोग पतले और चुस्त होते हैं। बात यह है कि सोवियत सघ में विभिन्न डीलडौल के लोग और विभिन्न पाक-विधियां मौजूद हैं। एक स्थान मे भोजन चर्बी और मिठाइयो से भरा होता तो दूसरे मे, उदाहरणार्थ कज़ाखस्तान मे, मास पर बडा ज़ोर दिया जाता है।

सोवियत सघ जैसे एक विस्तृत और बहुजातीय देश में आबादी के स्वास्थ्य के बारे मे प्रश्न को इतनी जल्दी और आसानी से स्पष्ट नही किया जा सकता। लेकिन निस्सदेह, इस प्रश्न को स्पष्ट करने का एक अच्छा आरभ कुछ सोवियत डाक्टरो से बातचीत करना होगा, जो दुनिया के कुल डाक्टरों का एक-तिहाई बनाते हैं। डाक्टरों की सख्या जिनमे लगभग ७० प्रतिशत स्त्रियां हैं, डाक्टरी सस्थानो मे प्रति वर्ष ४८,००० नये डाक्टरो के स्नातकीकरण के साथ लगातार बढती जा रही है। इसके अलावा, प्रति वर्ष १,२५,००० चिकित्सा कर्मी विशेषीकृत डाक्टरी माध्यमिक स्कूलो से पास करते हैं। अमरीकी डाक्टर विलियम ए० क्नाउस के अनुसार, जो मुश्किल से ही सोवियत समर्थक हैं, सोवियत संघ मे दुनिया के किसी भी दूसरे देश के मुकाबले

के बारे मे अपनी बातचीत को जारी रखने का मौका मिला। कज़ाखस्तान मे अल्मा-अता के बाह्यांचल मे मैंने सिर्फ स्वास्थ्य समस्याओं वाले बच्चो के लिए चलाये जा रहे विशेष किंडरगार्टन को देखा। इसमे चार, पाच और छ साल के सभी बच्चे या तो बीमार रहे थे या बीमार हो जाने के लक्षण दिखाये थे और वे एक साल के लिए ( प्रति सप्ताह छ. दिन ) विशेष प्रशिक्षणप्राप्त अध्यापको और डाक्टरों के प्रेक्षण मे थे। यहा देखभाल और परिचर्या नि शुल्क है। यह उन अन्य सामान्य किंडरगार्टनो और देखभाल केंद्रो से इस अर्थ मे भिन्न था कि इनमे नाममात्र का शुल्क ( लागत का २० प्रतिशत ) लिया जाता है।

मैंने सोवियत सघ मे दूसरे किंडरगार्टन भी देखे थे और यह उनसे कोई बहुत भिन्न नही था। यह साफ-सुथरा था, खेल के व्यापक मैदान थे, बहुत से उपकरण थे और अंदर ऐसी सुव्यवस्था थी जो उन अनेकानेक अमरीकी माता-पिताओं को अवास्तविक प्रतीत होती जो अपने बच्चों के नर्सरी स्कूलो और किंडरगार्टनो मे अक्सर कोलाहल तथा अव्यवस्था देखने के आदी हैं।

मैंने इसके बारे मे कुछ संदेह और दिलचस्पी मिश्रित भाव मे पूछा कि क्या छोटे बच्चो के संबंध मे सफाई वास्तव मे हमेशा एक सद्गुण है, जब कि अव्यवस्था एक बुराई? फिर मैंने अपने ही प्रश्न का उत्तर दिया: सोवियत किंडरगार्टन सुव्यवस्थित, उज्ज्वल, साफ़ सोवियत समाज को प्रतिबिम्बित करते हैं, जबकि अमरीकी किंडरगार्टनो मे मैंने अधिक अराजकतापूर्ण समाज का प्रतिबिम्बन देखा था, जिसके वे एक अंग है। मै यह ठीक-ठीक नही कह सकता कि छोटे बच्चों के पालन-पोषण की दो भिन्न विधियां बच्चो के उन चारित्रिक गुणों की दृष्टि से कैसे भिन्न हैं, जिन्हे वे उनमे विकसित करती हैं। अगर यह सही है—और इस बार-बार बतायी गयी चीज मे मुझे कोई संदेह नहीं है—कि सोवियत संघ मे निरक्षरता का उन्मूलन कर दिया गया है, तब किंडरगार्टनो मे सुव्यवस्थित प्रशिक्षण का सीखने की बच्चो की योग्यता या इच्छा पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता।

बच्चे की आयु के अनुसार उचित डाक्टरी सुविधाएं सुलभ हैं। स्कूलों मे नर्सें और डाक्टर रखे गये हैं। स्कूलों के लिए ही पोलीक्लिनिक होते हैं, जिनके कर्मियों मे डाक्टर और विशेषज्ञ शामिल होते हैं और डाक्टर का कार्य-दिवस केवल छ घंटे का होता है।

विश्व-प्रसिद्ध शल्य-चिकित्सक डा० स्व्यातोस्लाव फ्योदोरोव जो आज के जटिल आपरेशन शुरू करनेवालों में से एक है

लिथुआनियाई सोवियत जनतंत्र के हृद्वैज्ञानिक केंद्र में अनुसंधानकर्ता अ० शाल्कुते पायनियर शिविर में बच्चों की रोगनिरोधक जांच करती है

कज़ाख सोवियत जनतंत्र का पेत्रोपाव्लोव्स्क नगर। प्रदेश के सामूहिक और राजकीय फार्मों के दूर-दराज के क्षेत्रों में काम करनेवाले पशु-पालकों और मशीन-आपरेटरों के बच्चों के लिए बोर्डिंग स्कूल में अंग्रेज़ी का पाठ

बच्चों की लोकप्रिय व्यंग्यात्मक फिल्म सीरीज़ 'येरालाश' का एक दृश्य

पढ़ने का शौक वयस्क और बच्चे सब को है

बच्चों की लोकप्रिय व्यंग्यात्मक फ़िल्म सीरीज़ 'येराल्लाश' का एक दृश्य

पढ़ने का शौक वयस्क और बच्चे सब को है

दल को व्यायामशाला मे विभिन्न जिम्नास्टिक उपकरणो पर अभ्यास करते हुए देखा। अन्य भाप-स्नान कर रहे थे। नये दो-मंजिले भवन के एक दूसरे भाग मे मालिश की जा रही थी। गलियारे में लगे छोटे कमरो मे इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम लेने या विभिन्न शारीरिक क्रियाओ के नियत्रण के उपकरण थे।

भवन के अन्य भागो मे सोने के कमरे और एक भोजनालय था। रोगी यहा रात को ठहरते और खाना – अक्सर निर्धारित खाना – खाते है। सुबह को उन्हे बस काम पर ले जाती है। दोपहर को वे दोपहर का खाना खाने या आवश्यक जाच अथवा विश्राम के लिए रोगनिरोधालय आते हैं। भौतिकचिकित्सकों सहित माध्यमिक डाक्टरी शिक्षाप्राप्त कर्मियो के साथ डाक्टर और अनेकानेक विशेषज्ञ उनकी देखरेख करते है।

रोगो की रोकथाम के लिए यह नयी संस्था बहुत लोकप्रिय है और बिजलीघर की ट्रेड-यूनियन मजदूरो के लिए उसके उपयोग की व्यवस्था करती है। यहा इलाज नि.शुल्क डाक्टरी और अस्पताल सबधी देखरेख की मुख्य धारा से अलग होता है और इसके लिए छोटा शुल्क – २४ दिन के लिए ६५ रूबल – लिया जाता है। इसमें से ५० रूबल ट्रेड-यूनियन देती है। रोगी केवल १५ रूबल देता है जो विनिमय की वर्तमान दर के अनुसार प्रति दिन एक डालर से भी कम बैठता है।

रोगनिरोधालय के अलावा, एलेक्त्रेनाइ के मजदूरों और उनके परिवारो को अपने नगर मे पोलीक्लिनिक मे नि.शुल्क डाक्टरी सेवा मिलती है। एम्बुलेस सेवा हमेशा सुलभ है। स्वास्थ्य के बारे में चिंता का उस सबसे बड़ा स्थान है, जो इस विशाल बिजलीघर मे होता है। बडे-बडे जेनरेटरो के शोर का स्तर लेखक को, जो इसका विशेषज्ञ नही है, कम प्रतीत हुआ। काम के क्षेत्रो मे धूप और ताजी हवा भरी हुई थी, जहा केवल कुछ कर्मी ही देखे जा सकते थे। काम अधिकांशत स्वचालित है, परन्तु जेनरेटरो की आधा किलोमीटर लबी पंक्ति की निरतर विस्तृत जाच होती रहती है। और कोई ऐसी भी चीज थी जो मजदूरो के कल्याण मे अपना योगदान कर सकती थी – अदर और बाहर सर्वत्र फूल ही फूल थे।

मजदूरों के बच्चों के लिए रिहायशी क्षेत्र में दो स्कूलों में सामान्य शारीरिक प्रशिक्षण सबधी सुविधाओं के अलावा एक पूरा का

घायल सैनिकों का इलाज करनेवाले बडे सैनिक अस्पताल के प्रधान सर्जन थे। युद्ध के दौरान वह लगभग केवल घायलो का ही इलाज करते रहे और युद्ध-जनित कष्टों के प्रति उनकी चिंता जर्मन फौजो की पराजय के बाद भी जारी रही। वह प्रत्यावस्थापन शल्यचिकित्सा सस्थान के निदेशक बन गये, जिसका काम भयानक रूप से जले और घायल लोगो का इलाज करने के लिए शल्यचिकित्सा विधियो का विकास करना और उन्हे कमोबेश सामान्य जीवन की ओर लौटाना था। पिछले ३० सालो से डाक्टर ब्लोखिन कैंसर की समस्या का अध्ययन कर रहे हैं, जो हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणविक बमो के गिराये जाने के बाद आधुनिक युद्ध का एक अत्यत विनाशकारी परिणाम बन गया। वर्तमान समय मे वह मास्को अर्बुदविज्ञान केंद्र के प्रधान हैं।

मानवजाति के लिए चिकित्साविज्ञान की दृष्टि से युद्ध के विनाशकारी परिणामो को रोकने की डाक्टर ब्लोखिन की इच्छा, जिसे वह स्पष्टत जितना जानते हैं उतना और कोई नही, उन्हे एक और युद्ध को रोकने के लिए सघर्ष की ओर लायी है।

डाक्टर ब्लोखिन इस विचार को हास्यास्पद बताते है कि कोई "सीमित" परमाणविक युद्ध हो सकता है जिसकी सभावना की कल्पना कार्टर प्रशासन ने भी की थी और रीगन प्रशासन ने भी की है। वह बताते हैं कि प्रारभिक प्रहार के सीमित होने पर भी प्रहार किये जानेवाले किसी भी देश का जवाबी हमला आवश्यक रूप से सीमित नही होगा। सीमित प्रहार की शुरूआत करनेवाले जवाबी प्रहार के परिमाण पर नियत्रण नही रख सकेगे।

"कोई भी परमाणविक युद्ध की सीमा को पूर्वनिर्धारित नही कर सकता," वह कहते हैं। वह इस बात पर भी ज़ोर देते है कि परमाणविक युद्ध मे "कोई भी विजेता नही होगा कुछ ही घटो मे, शायद पहले कुछ मिनटो मे ही इस सघर्ष मे भाग लेनेवाले देशो के दसियो लाख लोग मर जा सकते है। हमारे समय मे विज्ञान तथा इजीनियरी ने ऐसी शक्ति अस्तित्व में ला दी है, जो पृथ्वी पर हर जीवित चीज़ को नष्ट कर सकती है।"

सोवियत चिकित्साविज्ञान के रोगनिरोधक पहलू पर ज़ोर को जारी रखते हुए सोवियत डाक्टर युद्ध को रोकने की आशा करते है, एक ऐसा युद्ध जो स्वास्थ्य और स्वय जीवन के लिए सबसे बडा खतरा है।

## अध्याय ४

# शिक्षा का अधिकार

एक नौजवान आदमी, जिसने एक सोवियत व्यावसायिक तकनीकी स्कूल से पास होने के बाद अपनी शिक्षा जारी रखी, १२ अप्रैल १९६१ को बाह्य अंतरिक्ष मे जानेवाला पहला आदमी बना। यूरी गगारिन ने अपने उस अभूतपूर्व कार्य के अनुसार शिक्षा पायी, जिसे पूरा करने का बीडा उसने उठाया था और उसने यह शिक्षा एक ऐसे देश में पायी, जिसमे १९१७ के पहले केवल २५ प्रतिशत आबादी ही पढ़ सकती थी। इस देश मे हरेक व्यक्ति की तरह ही गगारिन के लिए भी यह शिक्षा पूर्णत: नि:शुल्क थी।

इस पहले अंतरिक्षयात्री के नाम का ध्यान मुझे अचानक १९६३ मे आया जब मै काले सागर के तट पर आदर्श बाल-शिविर अर्तेक की यात्रा कर रहा था। एक स्थान पर युवा महिला ने, जो मुझे इस शिविर के व्यापक आरामदेह क्षेत्र से ले आयी, मुझे धीरे से एक छोटे बच्चे की ओर इशारा किया – मुझे याद नहीं कि वह लडका था या लडकी।

"यह यूरी गगारिन का बच्चा है," मेरी गाइड ने कहा।

वह शिविर मे एक मास के निवास का आनंद ले रहा था जैसा कि सोवियत संघ के लाखों बच्चे गरमी के महीनों मे आनंद लेते हैं। यह भी नि:शुल्क या लगभग नि:शुल्क था।

सभी लड़के और लडकियों को स्कूलबाह्य कार्यकलापों के लिए नि:शुल्क सुविधाएं प्राप्त हैं। नगरो मे ये सुविधाएं बडे पायनियर प्रासाद उपलब्ध करते हैं और उन पायनियर प्रासादों मे, जिन्हें देखने मै गया था, शौकों का चयन व्यापक, अत्यधिक व्यापक था। एक बच्चा वास्तविक दिखायी देनेवाले उपकरणों का उपयोग करते हुए "नौनिर्माण ... ..." हो सकता है या "फोटोग्राफी क्लब" अथवा वैसे,

द या बॉलरूम नृत्य मंडलियों में प्रवेश पा सकता है। पिछली बार
त्रों के विशाल पायनियर प्रासाद की यात्रा के दौरान मैंने अमरीकी
टकों के एक ऐसे ग्रुप को देखा जो लगभग नौ से बारह साल के
ड़ों के बिल्कुल सही-सही बालरूम-नृत्य को आश्चर्यचकित होकर
ख रहा था। और जब मैं एक बार अमरीकी बाल-लेखकों के एक
र के साथ त्बिलिसी में था, तो अपने पायनियर प्रासाद में युवा
ायनियरों ने जार्जिया की जातीय पोशाकों में जार्जियाई लोक नृत्य
ी भव्य प्रस्तुति से हमें मोह लिया।

कुछ पायनियर पुरातत्वविज्ञान में दिलचस्पी लेते हैं। दूसरे टिकट
जमा करते हैं। लड़के और लड़कियां दोनों खाना पकाना सीखते हैं।
प्रत्येक ग्रुप को वे सभी सुविधाएं प्राप्त होती हैं, जिनकी उन्हें आवश्यकता
होती है जैसा कि मैंने एक स्थान में एक सच्चा रेडियो प्रसारण स्टेशन
देखा। कुछ छात्रावास स्कूलों के पास स्वयं स्कूल में ही पूरी स्कूलबाह्य
सुविधाएं होती हैं। ऐसे स्कूलों में से एक में जिसे मैंने उलान-उदे में
देखा, स्कूलबाह्य कार्यों के लिए उतने ही अध्यापक थे जितने कि नियमित
कक्षाओं के लिए। पायनियर प्रासादों के अलावा बच्चों की सुविधाओं
में मास्को के शानदार ओब्राज़्त्सोव कठपुतली थियेटर तथा १६७६ में
निर्मित सुंदर बाल संगीत थियेटर जैसे थियेटर शामिल हैं। त्बिलिसी
और ताशकंद में मैं अपने ही थियेटर में प्रस्तुतियों को देखने में हर्ष-
विभोर किशोर दर्शकों के बीच गया। ये थियेटर देश में ५० से अधिक
बाल थियेटरों (कठपुतली थियेटरों को छोड़कर) के पेशेवर जाल का
एक अंग है, जो रूसी के अलावा २५ विभिन्न भाषाओं में प्रस्तुतियां पेश
करते हैं। स्पष्टतः इन थियेटरों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।
उल्लेखनीय है कि दुनिया में पहला पेशेवर बाल थियेटर सोवियत सरकार
द्वारा क्रांति के शीघ्र बाद कायम किया गया।

इन सभी असाधारण बाल संस्थाओं के अलावा, बाल शिक्षा
का एक और अधिक व्यापक रूप प्रारंभिक वर्षों में ही प्रदान किया
जाता है। लाखों बच्चे स्कूलपूर्व संस्थाओं में जाते हैं। १६८२ में उनकी
संख्या लगभग १,५०,००,००० थी और वर्तमान समय में निस्संदेह
और भी बड़ी हो गयी है। १६२७ में स्कूलपूर्व संस्थाओं में बच्चों की
संख्या केवल १,०३,५०० थी। इन संस्थाओं में जानेवाले बच्चों के
माता-पिताओं को केवल नाममात्र का शुल्क देना पड़ता है।

है। बाद की यात्राओं के दौरान मेरा यह आभास क्षीण नही हुआ है। सभवत उच्च साक्षरता स्तर सबधी प्रश्नो का उत्तर युवा लोगों को दिये जानेवाले ध्यान और स्नेह के उच्च स्तर में पाया जा सकता है। प्रत्येक पालन-पोषण का उद्देश्य इसमे निहित है कि प्रत्येक बच्चे को बडी देखरेख और ध्यान मिले और प्रतीत होता है कि यह उद्देश्य बडी सीमा तक प्राप्त कर लिया गया है। बेशक प्रत्येक बच्चा इस प्रणाली की सफलता को प्रकट नही करता। फिर भी, ग्रुप समर्थन के साथ-साथ वैयक्तिक ध्यान उन बच्चों की शैक्षिक सफलता को बहुत कुछ स्पष्ट कर देता है, जो सामग्री के आत्मसातकरण मे वास्तविक समस्याओं का सामना करते हैं।

लेकिन सोवियत समाज प्रत्येक व्यक्ति को, यहा तक कि ऐसे अत्यधिक विकलाग लोगो को भी पूरी शिक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक बडी धनराशि क्यो खर्च करता है जो समाज की उपलब्धियों मे कुछ योगदान करने मे कभी समर्थ नही हो सकते है? मेरे ध्यान मे, इस प्रश्न का उत्तर समाजवाद की प्रकृति मे निहित है। इसका पहला उद्देश्य मानव आवश्यकताओ को पूरा करना है।

निरक्षर से साक्षर समाज मे रूपान्तरण की प्रक्रिया आकर्षक है चाहे यह कही भी घटित हो, और मेरी जानकारी के अनुसार यह मुख्यत उन समाजो मे घटित होती है जो बडे और व्यापक साझे सामाजिक उद्देश्यो द्वारा अनुप्राणित होते हैं। मैंने क्यूबा मे ऐसा ही पाया। वहा क्रान्ति के बाद पढना जाननेवाले अधिकाश युवा लोग समूचे देश मे फैल गये और बूढे लोगो तथा अन्य युवा लोगों को शिक्षित किया। साक्षरता के फैलते जाने के साथ नव-साक्षर लोगों के लिए स्वयं अध्यापक बनना सभव हो गया। और इसी सामाजिक उभार ने जिसे क्यूबाई महसूस कर रहे थे, इस साक्षरता आंदोलन को प्रेरित किया।

कजाखस्तान मे क्रान्ति के बाद ऐसे ही हुआ, लेकिन कजाखस्तान मे साक्षर इतने कम थे कि इस प्रक्रिया मे समय लगा। जब "निरक्षर

अपने कार्य-दिवस की समाप्ति पर केवल अशकालिक तौर पर पढते थे। कोई पाठ्यपुस्तके नही थी।

ज्योही कोई व्यक्ति पढना और लिखना सीख लेता था – सामान्यत पहले पुरुष – त्योही वह अध्यापक बन जाता था। शुरू मे महिलाओ को पढाई मे खीचना बडा कठिन था। मुल्लाओ ने उनकी शिक्षा के खिलाफ संघर्ष किया। पति अक्सर अपनी पत्नियो को पढना और लिखना नही सीखने देते थे। अपने पालन-पोषण की वजह से स्त्रिया यह छिपाती थी कि वे स्कूल जा रही है, जहा विद्यार्थी पुरुष होते थे या पुरुष ही विद्यार्थियो को पढाते थे। अत मे यह स्पष्ट हुआ कि स्त्रियो के लिए सबसे अच्छा तरीका स्वयशिक्षा है। अधिकाश प्रदेशो मे, जहा मुस्लिम प्रभाव जबर्दस्त था, स्त्री-क्लब कायम किये गये। वहा वे लजाती नही थी और उन्होने एक-दूसरे को पढाया और फिर वे अन्य स्त्रियो को पढाने के लिए बाहर निकल गयी।

कज़ाख शिक्षा मत्रालय मे मैने उप-मत्री अबेज़खान कानाफिन और स्कूल-निर्देशन विभाग के प्रधान गाजिज़ लुकपानोव से उन मजिलो के बारे मे कुछ जाना, जिनसे कज़ाख स्कूल गुज़रे थे। निरक्षरता उन्मूलन आदोलन के परिणामस्वरूप १९३१ तक तीन-वर्षीय अनिवार्य शिक्षा देना सभव हो गया। १९३३ तक यह कार्य पूरा हो गया था और १९४१ मे सपूर्ण जनतत्र मे सात-वर्षीय अनिवार्य शिक्षा सभव हो गयी। अब तक ९८ प्रतिशत से अधिक बच्चे माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं और अध्याप-को की सख्या क्राति के समय ३,३०० के मुकाबले मे २,००,००० से अधिक हो गयी है।

उप-मत्री कानाफिन का अपना व्यक्तिगत जीवन इस विकास के साथ-साथ ऊपर उठा। उनके पिता, जो एक गरीब किसान थे, १९२८ से पहले अरबी लिपि का उपयोग करते हुए कज़ाख लिपि मे किसी तरह साक्षर हो गये थे। (अतत इस वर्णमाला को छोडकर स्लाव वर्णमाला का सशोधित रूप अपना लिया गया।) कानाफिन की मा १९२८ मे भी साक्षर नही हुई थी, लेकिन १९४७ तक वह स्वय अल्मा-अता विश्वविद्यालय मे प्रवेश पाने योग्य शिक्षा प्राप्त कर चुकी थे। अब उनकी एक बेटी और एक बेटा विश्वविद्यालय के स्नातक हैं तथा एक और बेटा अभी विश्वविद्यालय मे पढ रहा है। लुकपानोव ने, जो अब जनतत्र के स्कूल निर्देशन विभाग के प्रधान है, एक ऐसे परिवार से आनेवाले

सभमता उच्च साक्षरता स्तर सबधी प्रश्नों का उत्तर पुवा ...
दिये जानेवाले ध्यान और स्नेह के उच्च स्तर मे पाया जा सकता है।
प्रत्येक पालन-पोषण का उद्देश्य इसमे निहित है कि प्रत्येक बच्चे को
बडी देखरेख और ध्यान मिले और प्रतीत होता है कि यह उद्देश्य बडी
सीमा तक प्राप्त कर लिया गया है। बेशक प्रत्येक बच्चा इस प्रणाली
की सफलता को प्रकट नही करता। फिर भी पुर समर्थन के साथ-
साथ वैयक्तिक ध्यान उन बच्चों की शैक्षिक सफलता को बहुत कुछ
स्पष्ट कर देता है, जो सामग्री के आत्मसातकरण मे वास्तविक समस्याओं
का सामना करते हैं।

लेकिन सोवियत समाज प्रत्येक व्यक्ति को, यहा तक कि ऐसे
अत्यधिक विकलांग लोगों को भी पूरी शिक्षा प्रदान करने के लिए
आवश्यक बडी धनराशि क्यों खर्च करता है जो समाज की उपलब्धियों
मे कुछ योगदान करने मे कभी समर्थ नही हो सकते हैं? मेरे ख्याल
मे, इस प्रश्न का उत्तर समाजवाद की प्रकृति मे निहित है। इसका
पहला उद्देश्य मानव आवश्यकताओं को पूरा करना है।

निरक्षर से साक्षर समाज मे रूपातरण की प्रक्रिया आकर्षक है
चाहे यह कही भी घटित हो, और मेरी जानकारी के अनुसार, यह
मुख्यत उन समाजो मे घटित होती है जो बडे और व्यापक साझे
सामाजिक उद्देश्यो द्वारा अनुप्राणित होते हैं। मैंने क्यूबा मे ऐसा ही
पाया। वहां क्राति के बाद पढना जाननेवाले अधिकाश युवा लोग समूचे
देश मे फैल गये और बूढे लोगो तथा अन्य युवा लोगो को शिक्षित
किया। साक्षरता के फैलते जाने के साथ नव-साक्षर लोगो के लिए स्वय
अध्यापक बनना संभव हो गया। और इसी सामाजिक उत्साह ने जिन्हें
क्यूबाई महसूस कर रहे थे, इस साक्षरता आदोलन को प्रेरित
किया।

कज़ाखस्तान मे क्राति के बाद ऐसे ही हुआ, लेकिन कज़ाखस्तान
मे साक्षर इतने कम थे कि इस प्रक्रिया मे समय लगा। जब "निरक्षरता
... हुआ, तो सारे कज़ाखस्तान मे केवल ... प्रथम

## अध्याय ५

# आवास का अधिकार

आवास के क्षेत्र में नियोजन से मेरा परिचय स्थानीय सत्ता के स्तर पर शुरू हुआ, जब मैंने मास्को अनुसंधान डिजाइन संस्थान की प्रयोगशाला के प्रधान निकोलाई कोर्दो से बातचीत की। उनका संगठन सोवियत संघ के सबसे बड़े नगर में रहनेवाले सभी लोगों के लिए आवास-समस्या के समाधान हेतु योजनाएं विकसित करने के लिए जिम्मेदार है। सभी सोवियत योजनाओं की भांति इस संस्थान द्वारा तैयार की गयी आवास-योजनाओं को भी दो मांगें पूरी करनी चाहिए। उन्हें लोगों के लिए स्वीकार्य कुछ सुधार करने चाहिए। और उन्हें सभी अन्य योजनाओं के अनुरूप होना चाहिए, जिनमें नगर के जीवन, वस्तुतः संपूर्ण देश में जीवन के सभी पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है।

कोर्दो मुझसे एक बड़ी आवास-निर्माण प्रदर्शनी में मिले। वहां वह मुझे आधुनिक गृहों की विभिन्न शैलियों और माडलों के चित्र दिखा गये, जिनसे मुझे निकट भविष्य में निर्मित किये जानेवाले गृहों का कुछ अंदाजा मिल गया। यहां मुझे कुछ यह समझने का मौका मिला कि सोवियत अतीत से सोवियत भविष्य कैसे बढ़ता है। परन्तु इससे पहले कि कोर्दो मुझे प्रदर्शनी दिखाते, मैंने उनके संस्थान के कार्य के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त की, जो सन् २००० तक मास्को आवास-निर्माण के भविष्य की योजनाएं बनाता है।

मैंने नगर में युद्ध के बाद निर्मित रिहायशी मकान देखे थे, जिन्होंने विदेशियों की आलोचना प्रेरित की थी। यहां दो राय नहीं है [illegible] बहुत से अनाकर्षक बाकसनुमा मकान हैं, जो दूसरे देशों के ऐसे मकानों की तुलना में घटिया हैं। मैंने ऐसे एक पुराने मकान में कुछ समय बिताया था जब मैं एक पुराने दोस्त से मिलने गया — [illegible] की दृष्टि से बुरा और बहुत नीरस [illegible]

था, लेकिन उसके इतिहास ने मुझे बताया कि कभी उसने रहनेवालों को सत्कारपूर्ण शरण प्रदान की थी। यह लगभग दूसरे विश्व-युद्ध (महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध) के अंत में बनाया गया था और उसने ऐसे बीसियों परिवारों को तुरत रिहाइश प्रदान की थी जिनके मकान नाज़ियों द्वारा नष्ट मकानों में शामिल थे – नाज़ी हमलावरों ने लगभग २,५०,००,००० लोगों को घरविहीन छोड़ा। इस मकान की जगह जो अपनी तरह के अधिकांश मकानों में भी पुराना हो चुका था, निकट भविष्य में दूसरा मकान बनाया जाना निर्धारित हो चुका था। भरे हुए और तंग फ्लैटों का प्रत्येक निवासी नये घरों में जाना पसंद करेगा और उनमें कुछ लोग तो अपने लंबे इंतज़ार में बेचैन हो गये थे। लेकिन मैंने सर्वत्र परिवर्तन का प्रमाण देखा। बहुत से स्थानों में मास्को के क्षितिज पर बड़े ऊंचे क्रेन स्पष्ट रूप में दिखायी पड़ते थे। पिछले २० वर्षों में सोवियत संघ में नये फ्लैट २०,००,००० फ्लैट सालाना की दर से बनाये गये हैं।

"किन ठोस विचारों पर आपका संस्थान काम कर रहा है?" मैंने कोर्दो से पूछा।

"हमने मास्को के दक्षिण-पश्चिम में अधिकाधिक रिहायशी मकान बनाने की योजनाएं तैयार की हैं," कोर्दो ने कहा। "मुख्य हवाएं उसी दिशा से आती हैं और इस वजह से वहां रहनेवाले आस-पास के जंगलों से बहनेवाली ताज़ी हवा की अधिकतम संभव मात्रा पायेंगे।"

कोर्दो ने स्पष्ट करते हुए कहा कि नियोजन में नये भवनों की परियोजनाएं तैयार करने के अलावा और भी बहुत कुछ शामिल है। इसमें औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए नये स्थान पाना शामिल है – ऐसे स्थान जहां कारखानों द्वारा वायुमंडल में छोड़ी गयी गैस या भाप को हवा रिहायशी क्षेत्रों से दूर बहा ले जायेगी, लेकिन साथ ही जहां रिहायशी क्षेत्रों से कारखानों को आना-जाना आसान होगा। आम तौर से लोगों के लिए अपने कार्य-स्थलों पर आना-जाना अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए नये बड़े रिहायशी समुच्चय या तो मेट्रो स्टेशनों के नज़दीक बनाये जाते हैं या नये मेट्रो स्टेशन नये रिहायशी समुच्चयों के नज़दीक बनाये जाते हैं।

कुछ परिस्थितियों में नियोजन रिहायशी मकानों की ऊंचाई

और ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा से भी सबद्ध है। उनमें से बहुत से मकान ऐतिहासिक या वास्तुशिल्पीय दिलचस्पी के हैं। इन मकानों को सुरक्षित रखा जा रहा है और सौदर्यात्मक अखंडता बनाये रखने के लिए उनके इर्द-गिर्द पुराने मकानों से ऊचे नये मकान नहीं बनाये जाते।

कुछ इलाकों में जगह के बेहतर इस्तेमाल के लिए रिहायशी मकान बहुत ऊचे – ३२-३२ मंजिलों तक ऊचे – बनाये जाते हैं।

मास्को की सावधानी से नियंत्रित नगर-सीमाओं के भीतर भूमि के एक-तिहाई भाग में प्राकृतिक पार्क है, जो गरमी के महीनों में हरियाली से भर जाते हैं।

आवास के लिए नियोजन, जिसके अधिकार की गारंटी संविधान* सबके लिए करता है, मात्र सिर छुपाने के लिए छप्पर का निर्माण करने से कुछ अधिक है। मकानों को निवासियों की अधिकाधिक सुविधाओं के अनुरूप बनाया जा रहा है। बड़े परिवारों को रसोई और बाथरूम को छोड़कर चार या पाच कमरे वाले फ्लैट अधिकाधिक प्रदान किये जा रहे हैं। प्रत्येक मकान स्कूलों, दुकानों, बस-अड्डे या मेट्रो स्टेशन के निकट होने चाहिए।

रिहायशी मकानों की दीवारें, वस्तुत सभी मूल चीजें बड़े गृह-निर्माण कारखानों में पहले ही निर्मित की हुई होती हैं। मिसाल के लिए, रसोई या बाथरूम की दीवारें पाइपों और बिजली के तारों से युक्त एक ठोस इकाई के रूप में एकदम तैयार की जाती हैं। फिर दीवारों ( छतों या फर्शों ) को ट्रक से निर्माण-स्थल पर लाया जाता है, जहा एक बड़ा क्रेन उन्हें उठाकर अपने सबद्ध स्थान पर रख या खड़ा कर देता है। इस तरह मकान हाथ से परिष्करण-कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है।

---

* अनुच्छेद ४४. सोवियत संघ के नागरिकों को आवास पाने का अधिकार है। यह अधिकार राजकीय तथा सामाजिक स्वामित्व के आवास के विकास और रख-रखाव द्वारा, सहकारी और व्यक्तिगत आवास निर्माण के लिए सहायता द्वारा, ... आवास के निर्माण के कार्यक्रम की पूर्ति से सुलभ होने वाले ... न्यायोचित वितरण द्वारा और कम किराए तथा सेवाओं के लिए कम शुल्क द्वारा सुनिश्चित है। सोवियत संघ के नागरिकों को आवंटित घरों की अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए।

विश्व की दूसरी अंतरिक्षयात्री, सोयूज़ त ७ चालक-दल की एक सदस्य स्वेत्लाना सवीत्स्काया, बायें—चालक-दल के कमांडर लेओनीद पोपोव, दायें—उड़ान इंजीनियर अलेक्सांद्र सेरेब्रोव

उज़्बेकिस्तान में चुइगानार बांध की पैनल-आपरेटर तमीला शेरानियेवा

मास्को। नया रिहायशी ज़िला स्त्रोगिनो
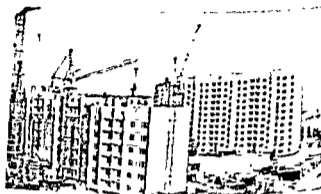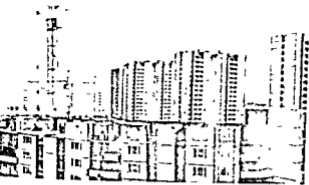
मस्क्वा नदी के तट पर फ़िली में एक नये रिहायशी जिले के निर्माण का दृश्य

राजकीय फार्म की डाइरेक्टर, कज़ाख सोवियत जनतंत्र की सर्वोच्च सोवियत की उप-अध्यक्ष ज़िमखी शामशिबायेवा युवा पड़ोसियों के विवाह-समारोह में

उज़्बेक महिला हृदस्वास्थ्यचिकित्सकों में से एक येलेना लिनाशोवा, विज्ञान की कैंडिडेट ( चिकित्सा विज्ञान )

निर्माण की इस विधि की गति उस निरन्तर दबाव का उत्तर है जिसे लोग अधिक और बेहतर आवास के लिए डालते है। लेकिन नये निर्माण का अर्थ सोवियत संघ में सबसे बड़े नगर का अनियंत्रित फैलाव नही है। मास्को के आकार की सावधानी से व्यवस्था की जाती है। अधिकांशत नये भवनों का निर्माण, भले ही हमेशा नही पुराने और जीर्ण-शीर्ण भवनो के स्थान पर किया जाता है। मास्को की आबादी की सीमा ८०,००,००० निर्धारित की गयी है। 'अपने सभी प्रयासों के बावजूद हम संभवत इससे कुछ आगे जायेंगे, कोर्दो ने स्पष्ट अफसोस के साथ कहा।

भवनो के वाह्य रूप अन्य विशिष्टताओ के साथ बदलते रहते है। घरों की रूपरेखाएं अब बॉक्सनुमा बिल्कुल नही होती जैसा कि व युद्ध के बाद के प्रारंभिक वर्षों में हुआ करती थी। अब ऐसी परियोजनाओं का अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है जो घरो को कुछ विविधता प्रदान कर सकें, लेकिन मास्को मे निर्माण-सामग्रियों की बनावट और रंग के सामान्य कलात्मक और अन्वेषणात्मक उपयोग में अब भी कमी है। संभवत आर्थिक कारणो से सफेद या हल्के पीले या क्रीम के रंग की दीवारो का प्राधान्य है।

"माइक्रो-क्षेत्र' नामक नये रिहायशी समुच्चयों म फ्लैटों के भीतरी भागो मे अनेक असंदिग्ध आधुनिक विशिष्टताएं प्रकट होती है। डिजाइनें बहुविध है और फ्लैटों की आवासीय जगह नियोजित अन्तरालों पर सघु बढ़ोत्तरियों के जरिये निरन्तर बढ़ती जाती है। फिर भी योजनाओं मे सुधार हमेशा आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होते अत एक दम्पति के लिए जिनसे मै मास्को मे मिला विशेष प्रबंध किया गया। विक्तोर और रीना दोग्कायेव नये ओलिम्पिक गांव मे रहते है। यह ३,४३८ फ्लैटो का एक समुच्चय है जो १९८० में ओलिम्पिक खेलों मे भाग लेनेवाले खिलाडियों और बाद मे मास्कोवासियों के रहने के लिए बनाये गये थे। १४,५०० निवासियों के लिए इस आदर्श गांव म कोई भी फ्लैट दोग्कायेव परिवार के आकार के अनुरूप नहीं था। उनके ९ बच्चे थे। ऐसे बड़े परिवार को रिहाइश प्रदान करने के लिए स्थानीय सोवियत ने दो आस-पास के फ्लैट उन्हें दे दिये। दोग्कायेव परिवार के सदस्य आन्तरिक गलियारे से, जिसे कुछ और परिवार भी इस्तेमाल करते है, या सामने के दरवाजे से दोनों फ्लैटों मे आ जा सकते

हैं, जिनका केवल वे ही उपयोग कर सकते हैं। उनका स्पष्ट विचार था कि ओलिम्पिक गाव के उनके फ़्लैटों मे उनके पुराने फ़्लैटो की तुलना में रिहायशी परिस्थितिया बडी सुविधाजनक हैं।

नया घर निस्सन्देह उस घर के मुकाबले में आगे का एक बडा कदम था, जो काकेशिया मे आर्मेनिया से मास्को आने के बाद बोरकायेव के माता-पिता के पास था। लबे समय तक मास्को मे उनका घर बैरक किस्म के मकान में मात्र एक कमरा था। अब उनके बेटे के पास अपने बडे परिवार के लिए आधुनिक रोशनीदार कमरे हैं, जिनमें दो रिफ्रिजरेटर, दो गैस-चूल्हे, दो बाथरूम और एक बैठकखाने में एक बडा सोफा, बहुत सी गद्दीदार कुर्सिया और एक पियानो है, जिसे उनकी बेटी बजाती है।

बोरकायेव परिवार विशाल प्रगति की कहानी का एक अग है। पर मास्को मे हमेशा ही आवास की कमी के बारे मे चर्चा की जाती है और यह चर्चा कई वर्षों तक जारी रहेगी। निर्माण, जो पूरे देश मे २०,००,००० नये फ्लैट सालाना की प्रभावशाली दर से चल रहा है, और प्रति व्यक्ति औसत जगह बढ़ रही है, कभी भी सतत बेहतर रिहायशी परिस्थितिया प्राप्त करने की लोगो की इच्छा को नही पूरा कर पायेगा।

नये या पुराने घरों का किराया १६२८ से ५५ सालो से नहीं बढा है। राष्ट्रीय स्तर पर यह पारिवारिक बजट के तीन-चार प्रतिशत के असभाव्य रूप से निम्न स्तर पर बना हुआ है। स्पष्टतः मकान के इतने कम किराये पर भी असतोष की गुजाइश है, क्योंकि कुछ फ्लैट जीर्ण-शीर्ण और छोटे हैं जबकि कुछ नये और बडे हैं। तो भी, प्रत्येक व्यक्ति के पास रहने को जगह है। किराये के लिए पारिवारिक आय के तीन-चार प्रतिशत हिस्से से निर्माण और रख-रखाव की वास्तविक लागत का केवल एक-तिहाई ही पूरा हो पाता है। बाकी लागत राज्य सबके लिए आवास प्रदान करने के अपने सवैधानिक कर्तव्य की पूर्ति मे पूरा करता है।

फिर भी, सभी नये घर राज्य द्वारा निर्मित नही किये जाते। उनमें से लगभग सात प्रतिशत सहकारी समितियो द्वारा निर्मित किये जाते हैं। लोगो का एक दल, सभवतः कलाकारों का एक दल, जिन्हें [illegible] की आवश्यकता होती है, पड़ोसियों के

कि वे अधिकतम धूप पा सकें, जो विल्नियूस में साल के कई महीनों में पुरस्कार की भांति ग्रहण की जाती है। दीवारें भी, सफेद होने के बजाय, जैसा कि मास्को में अक्सर होता है, प्रीतिकर रंगों में रंगी होती हैं। मुझे याद नहीं कि उन पर भित्ति-चित्र थे या नहीं (बुर्यातिया में मैंने रिहायशी मकानों की दीवारों पर कुछ भित्ति-चित्र देखे), लेकिन खुले क्षेत्रों में विभिन्न मूर्तियां थीं। कुल मिलाकर लाजदिनाय आनंदप्रद था।

युवा लिथुआनियाई वास्तुकार अल्गीर्दस कैमेरिस, जिन्होंने इस समुच्चय के निर्माण की योजनाओं पर काम किया था, इस स्थान को दिखाने में मेरा मार्गदर्शन किया और मुझे निवासियों को आराम और सुख प्रदान करनेवाली अन्य विशिष्टताओं को दिखाने का प्रयास किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि कैसे माध्यमिक स्कूल के गलियारों और जीनों की डिजाइनें विद्यार्थियों के सुचारु आवागमन को आसान बनाती हैं। दीवारें और छतें इस ढंग से बनायी गयी हैं कि किशोरों द्वारा किये जानेवाले हो-हल्ले को कम किया जा सके और शोरगुल के स्तर को नियंत्रित करने के लिए उनमें सोखी सामग्रियां लगायी गयी हैं।

इस सबने मेरा ध्यान आकर्षित किया। लाजदिनाय के इर्द-गिर्द चक्कर काटते हुए मुझे किसी चीज का अभाव खटका, ऐसी चीज जिसे मैं सामान्य मानता था। रिहायशी गृहों के पीछे अहाते या फुलवारियां नहीं थीं। मकानों के पिछवाड़े भी उतने ही आकर्षक थे जितने कि उनके अग्रभाग। वस्तुतः उनमें फर्क करना असंभव था। मालूम पड़ता था कि मकानों की ओर सभी दिशाओं से पहुंचा जा सकता था और वे आकर्षक दिखायी देते थे।

मैं नहीं जानता कि लाजदिनाय सोवियत संघ में सर्वोत्तम रिहायशी जिला है या नहीं, लेकिन यह निस्संदेह एक बहुत अच्छा जिला है। स्पष्टतः कम से कम कुछ योजनाकार ऐसे गृहों की डिजाइनें बना रहे हैं जो नीरस और "अभिव्यक्तिहीन" वास्तुकला सम्बंधी आपत्ति के योग्य नहीं हैं।

यह भी स्पष्ट है कि सभी माइक्रो-क्षेत्रों की, जैसा कि वे आज हैं, पूर्ण रूपरेखा समन्वय बनाना है – यहां तक कि नये से नये माइक्रो-क्षेत्रों की भी – सम्पूर्णतया के स्तर से तुलना नहीं की जा सकती

कोई गंदी बस्तियां नहीं है। पुराने, कम आकर्षक जिलों का अभी भी अस्तित्व है, लेकिन अभिजातपूर्ण गेटो नहीं है जहां गरीब लोग रहते है। विभिन्न आयों के लोग साथ-साथ रहते है। अधिक और कम आय वाले निवासियों के गृहों के बीच कोई बड़ा अंतर नहीं है। पुराने अभिजात वर्ग की हवेलियों का अब भी उपयोग किया जाता है लेकिन आम तौर से उनमें किरायेदार नहीं, बल्कि सरकारी संस्थाओं के कार्यालय है। सोवियत आवास कार्यक्रम का उद्देश्य बड़े विलासमय गृहों का निर्माण करना नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य तो सभी लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करना है।

जहां तक मेरी धारणा है आवासीय निर्माण में सचमुच विशाल, प्रभावशाली विकास और पहले से ही अस्तित्वमान रियायतीप्राप्त कम किरायों का उपयोग करने में दो चीज़ें सोवियत नागरिकों की बाधा पहुंचाती हैं। पहली गौण समस्या वह नौकरशाही बाधा है जो उनकी इच्छा पूरी करने में अक्सर आड़े आती है। लेकिन इसे उससे कहीं जल्दी कम किया जा सकता है, जितना कि सोवियत संघ के द्वेषपूर्ण आलोचक विश्वास करना चाहते है। सारा देश एक तीव्र राष्ट्रव्यापी अभियान में लगा हुआ है, जो इस अत्यंत संगठित समाज की एक विशिष्टता है। इस अभियान का उद्देश्य प्रबंध तथा उत्पादन में सभी प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की क्वालिटी में सुधार करना है। इस चीज़ में संदेह करना उतावलापन होगा कि यह अभियान आवास-समस्या संबंधी लालफीताशाही को कुछ समाप्त करने में प्रभाव नहीं डालेगा।

दूसरी और अधिक महत्वपूर्ण बाधा को हटाना अधिक कठिन है। वह यह भय है कि सोवियत संघ पर बाहर से पुनः आक्रमण किया जा सकता है, जैसा कि १९४१ में हुआ था। अपनी रक्षा करने के लिए सरकार कच्चे माल, ऊर्जा और श्रम शक्ति की विशाल मात्राएं हथियारों में लगाती है। हर कोई जानता है कि इस निवेश का क्या अर्थ है कि आवास और जीवन के कई अन्य पहलू उससे कहीं अधिक धीमी गति से विकसित होंगे, जितना कि लोग चाहेंगे। परिणामस्वरूप संपूर्ण सोवियत समाज शांति चाहता है ताकि आर्थिक रूप से वे सभी बेहतर चीज़ें मिल सकें, जिन्हें हर कोई चाहता है। इसलिये सभी लोग नाज़ी आक्रमण से हुए विनाश को अब भी बड़ी तीव्रता से याद करते है।

४० साल के बाद आज भी निर्माण-उद्योग मे युद्ध-जनित म
प्रभावो को महसूस किया जाता है। और आज एक नये युद्ध की म
ससार मे सर्वोत्तम जन-आवास प्राप्त करने के सोवियत प्रया
पुन धीमा कर रही है।

यह पूर्णत समझ मे आनेवाली बात है कि इस आवास-सम
को हल करने के लिए सोवियत लोगो को शान्ति की आवश्यकता

ज़ारशाही रूस में स्त्रियों की भारी बहुसंख्या शिक्षा थी,* भले ही कुछ स्त्रियां, अक्सर उच्च वर्गों की ों और क्रांतिकारियों के बीच काम करती हों। आम के लिए सामाजिक कार्यकलाप के महत्वपूर्ण रूपों के दस स्त्रियों पीछे केवल एक अपने वेतन से अपना ी थी और कामकाजी स्त्रियों को उसी काम के लिए ाले वेतन का आधा ही मिलता था। जब नयी समाज-सत्तारूढ़ हुई, तो उसने स्त्रियों और पुरुषों को े का समान अधिकार प्रदान किया। लेकिन ा को उन कामों के लिए आवश्यक योग्यताएं जो तब प्रकट हुए जब देश मुख्यतः ग्रामीण विगत से ः भविष्य की ओर तेज़ी से बढ़ा। चूंकि स्त्रियों को ाप्त थी और चूंकि उद्यमों के पुरुष निदेशक बहुत ा रूपों से प्रभावित होते थे, स्त्रियों को काम नहीं इस स्थिति को बदलने के लिए सख्त क़ानूनों और इन कार्यान्वयन की आवश्यकता थी। ऐसे दोषनिवारक लिए कोटे निर्धारित करने में निहित थे, जिनमें से ों के एक निश्चित प्रतिशत को अपने यहां काम देना

प्रथम दिनों से ही क़ानून स्त्रियों के पक्ष में रहा है संविधान जिस पर बहस करने, संशोधन पेश करने रने में स्त्रियों ने समान रूप से भाग लिया, अनुच्छेद

रूस में हर एक हज़ार पर ६६१ स्त्रियां निरक्षर थीं। —सं०

३४ मे कहता है   सोवियत सघ के नागरिक कानून के समक्ष, लिग   भिन्नता के बावजूद बराबर है।"* अनुच्छेद ३५ मे कहा गया है   सोवियत सघ मे स्त्रियो को पुरुषो के समकक्ष अधिकार प्राप्त है।"**

सविधान के अन्य अशो मे स्त्रियो से सबधित विशिष्ट अधिकार और गारंटिया प्रदान की गयी है और सोवियत सघ की यात्रा करनेवाला कोई भी आदमी इस बात का प्रचुर प्रमाण देख सकता है कि स्त्रियो और पुरुषो को काम का समान अधिकार प्राप्त है।

पुरुषो की भाति ही स्त्रियो को काम की वास्तविक गारटी प्राप्त है। जनगणना के अनुसार, सभी काम करने योग्य स्त्रियो का ९२.५ प्रतिशत या तो काम करता था या अध्ययन करता था और ७.५ प्रतिशत ही अपने को पूरे तौर पर घरेलू कामो या छोटे निजी भू-प्लाटो मे लगाता था। स्त्रिया, जिनकी सख्या पुरुषो से अधिक है, श्रम शक्ति का आधा से अधिक बनाती है और वे तथा वैसे ही पुरुष भी बेरोजगारी के खतरे से सुरक्षित है। कानून के अनुसार, उन्हे उसी काम के लिए पुरुषो के साथ समान वेतन मिलता है और वर्षों के दौरान अनुभवप्राप्त हो जाने के कारण स्त्रिया निरतर अधिक जिम्मेदार, अधिक वेतनो वाले पदो पर पहुचती जा रही है। चूकि स्त्रियो ने पुरुषो के साथ आर्थिक समानता प्राप्त कर ली है, इसलिए कुछ और भी घटित हुआ है। तलाक की दर बढ गयी है। स्त्रिया पुरुषो

---

*अनुच्छेद ३४ सोवियत सघ के नागरिक कानून के समक्ष वश, सामाजिक और माली स्थिति, जाति या नसल, लिग, शिक्षा, भाषा, धर्म के प्रति रुख, पेशे के प्रकार या स्वरूप, निवास या अन्य बातो मे भिन्नता के बावजूद बराबर है।

सोवियत सघ के नागरिको के अधिकारो की समानता आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सास्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रो मे प्रत्याभूत है।

** अनुच्छेद ३५ सोवियत सघ मे स्त्रियो को पुरुषो के समकक्ष अधिकार प्राप्त है।

इन अधिकारो का प्रयोग स्त्रियो के लिए पुरुषो के बराबर शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण पाने की व्यवस्था कर, रोजगार, पारिश्रमिक और पदोन्नति के मामलो तथा सामाजिक, राजनीतिक और सास्कृतिक कार्यकलाप मे समान अवसर देकर तथा स्त्रियो के श्रम और स्वास्थ्य की रक्षा के लिए विशेष कदम उठाकर, माताओ के लिए काम करने की स्थितिया मुहैया कर, माताओ और शिशुओ को कानूनी सरक्षण एव भौतिक और नैतिक समर्थन प्रदान कर, जिसमे माताओ और गर्भवती स्त्रियो के लिए सवेतन छुट्टिया और अन्य लाभ भी शामिल है तथा छोटे बच्चो वाली माताओ के लिए धीरे-धीरे कार्य-समय घटा कर सुनिश्चित बनाया जाता है।

के साथ केवल इसलिए रहने को बाध्य नही है कि वे उन पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं।

स्त्रिया अपने लिए कभी बद पेशो के सभी प्रकारो मे प्रवेश कर गयी हैं। तकनीकी प्रशिक्षण इतना व्यापक हो गया है कि कुल तकनीशियनो का ५६ प्रतिशत स्त्रिया है। कुछ पेशो मे स्त्रियो का प्रतिशत और भी ऊचा है। उदाहरणार्थ, कुल डाक्टरो का ७० प्रतिशत और कुल अध्यापको का ७४ प्रतिशत स्त्रिया है। स्त्रिया न केवल पढाती है, बल्कि वे स्कूलो की निदेशक भी हैं। प्रारभिक स्कूलो मे कुल निदेशको का ८० प्रतिशत और माध्यमिक स्कूलो मे कुल निदेशको का २७ प्रतिशत स्त्रिया है। मै अल्मा-अता मे ऐसी एक निदेशक से मिला। निरक्षर माता-पिता की बेटी ज़ाकिया सार्सेंक्येवा माध्यमिक स्कूल न० १२० की निदेशक हैं, जहा २३ जातियो के विद्यार्थी पढते है। ४५ प्रतिशत बच्चे कज़ाख भाषा मे शिक्षा प्राप्त करते है जो उनकी मातृ-भाषा है। सभी रूसी मे प्रवीण बन जाते हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि उनमे से बहुत से अग्रेज़ी मे भी बात करते थे, 'क्योकि यह विद्यार्थियो के लिए विश्व सस्कृति के एक बडे भाग का द्वार खोलती है," अग्रेज़ी के अध्यापक निकोलाई मुन्यान ने कहा। वह न केवल ब्रिटिश उच्चारण के साथ बहुत अच्छी अंग्रेज़ी बोलते थे ( हालाकि वह कज़ाखस्तान के बाहर कभी नही गये थे ), बल्कि अमरीकी कारो के बारे मे भी इतना जानते थे जितना कि मै कभी नही जान पाऊगा।

स्त्रिया और निकोलाई जैसे युवा पुरुष यात्रिक चीज़ो मे दिलचस्पी रखते है। उनमे से १५ लाख से अधिक अखिल सघीय आविष्कारक और नवप्रवर्तक समाज के सदस्य हैं और कुल आविष्कारको का लगभग एकतिहाई स्त्रिया है। अनुसधानकर्मियो मे ४० प्रतिशत स्त्रिया हैं, "विज्ञान का कैंडिडेट" डिग्री पानेवालो मे २८ प्रतिशत और उच्चतम डिग्री "विज्ञान का डाक्टर" पानेवालो मे १४ प्रतिशत स्त्रिया है।

सोवियत सघ मे १४०० मुख्य पेशो मे से ६४० मे स्त्रियों को प्रशिक्षित किया जाता है। मैने उन पेशो की सूची नही देखी है, जिनमे उनके प्रवेश की अनुमति नही है, लेकिन स्पष्टत उन्हे उन कामो मे अलग रखने की बडी सावधानी बरती जाती है, जो उनकी जननक्षमता के लिए खतरनाक माने जाते है। कल बच्चे पैदा हो, यह चिन्ता स्पष्टत उन बहुत से रक्षात्मक कदमो की ओर से जाती है, जो आज

उठाये जाते हैं। अगर औरतें भारी बोझ उठाते हुए या विरैले पदा या आयनन विकिरण के प्रभाव मे या खानो मे खनिकों का खनरना काम करते हुए अपने जनन-अवयवो को क्षति पहुचायें, तो वे समव मा नही बन पायेंगी। अत कुछ पेशे उनके लिए बद हैं।

हर हालत मे एक विदेशी यात्री आसानी से यह देख सकता है कि स्त्रियो की काम की परिस्थितिया कम से कम स० रा० अन्तर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय द्वारा तैयार किये गये मानको और विभिन्न कवेन्शनो के ब्यौरो के अनुरूप हैं। उदाहरण के लिए, सोवियत सघ ने इन कवेन्शनो को अभिपुष्ट किया है और मैंने ऐसा कोई प्रमाण नही देखा है कि वह इनका पालन नही करता भूमिगत कार्य (स्त्रिया) कवेन्शन, समान पारिश्रमिक कवेन्शन, भेदभाव (रोजगार और पेशा) कवेन्शन अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन सहित कुछ बडे पूजीवादी देशो ने इनमें से किसी भी कवेन्शन को अभिपुष्ट नहीं किया है। इन पक्तियो को लिखते समय अमरीका के सविधान मे स्त्रियो को समान अधिकार देने सबधी सशोधन अब भी स्वीकार नही किया गया है।

सोवियत सघ मे श्रम शक्ति का अभाव महसूस किया जाता है और इसलिए उदात्त रुख के अलावा, स्त्रियो और उनकी शिक्षा के बारे मे विशेष चिता करने के गभीर व्यावहारिक कारण हैं। कभी-कभी इस चिता का वर्णन करनेवाली भाषा मुझे भावात्मक या पितृसत्तात्मक तक प्रतीत होती है। मैंने ऐसी चीज के प्रमाण देखे जिसे "लघु महिला सलक्षण" कहा जा सकता है, जिसका तात्पर्य यह है कि पुरुष कभी-कभी स्त्रियो के सबध मे ऐसे बाते करते हैं मानो वे मनोहर, निस्सहाय जीव हो, जिनकी बडे, मजबूत पुरुषो द्वारा रक्षा की जानी चाहिए।

लेकिन गर्भवती स्त्रियो के सबंध मे यह चिता एकदम वास्तविक और विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो बच्चे को जन्म देने के पहले ५६ दिन और जन्म देने के बाद ५६ दिन की सवेतन छुट्टी पाती हैं जुडवे बच्चो को जन्म देनेवाली स्त्रिया प्रसव के बाद ७२ दिन की छुट्टी पाती हैं। इसके अलावा, कोई भी स्त्री बच्चे को जन्म देने के बाद काम से एक साल की छुट्टी ले सकती है और उसे पूरे साल ३५ रूबल प्रति माह मिलते रहेंगे। बडे परिवार वाली स्त्रियो को अनुदान मिलता है। ऐसे ही अनुदानो की सहायता से ओलिम्पिक गाव मे रहनेवाले

गोरकायेव परिवार अपने बड़े परिवार का प्रबंध करता है।

बेशक, स्वस्थ स्त्री समाज के लिए जितना कर सकती है, उतना कोई भी पुरुष नहीं कर सकता। वह नया जीवन दे सकती है और सर्वत्र यह अद्वितीय योगदान करनेवाली स्त्रियों की भांति वह इतने बोझ वहन करती है, जिन्हें एक पुरुष कभी नहीं वहन कर सकता। इन बोझों को वहन करने के बदले में सोवियत स्त्रियों को ऐसे विशेषाधिकार प्रदान किये गये हैं, जो पुरुषों को नहीं प्राप्त है। मिसाल के लिए, वे ५५ साल की आयु में पेंशन पर जा सकती हैं (उन स्त्रियों को छोड़कर जिनके कई बच्चे हैं जो ५० साल की आयु में यह अधिकार प्राप्त कर लेती हैं)। लेकिन पुरुष (कुछ खतरनाक पेशों को छोड़कर) सामान्यतः ६० साल की आयु होने पर ही पेंशन पर जा सकते हैं। परंतु कोई भी स्त्री या पुरुष तब तक पेंशन पर नहीं जाता, जब तक वह नहीं चाहता। वह ५५ साल की आयु के बाद भी अपना काम जारी रख सकती है और केवल अपना नियमित वेतन ही नहीं, बल्कि कुछ कामों में अपना पेंशन भी प्राप्त कर सकती है। उसकी पेंशन सामान्यतः उस वेतन का ५०-७५ प्रतिशत होती है, जो उसे काम करते समय मिलता था। जिन स्त्रियों का वेतन निम्न वर्ग से संबद्ध होता है, वे अपने वेतन के बराबर पेंशन पाती हैं।

इस सबका यह अर्थ नहीं है कि स्त्री को मात्र एक जनन-मशीन के रूप में रक्षित और पुरस्कृत किया जाता है। उसे इतना अधिक सुअवसर प्राप्त है जितना कि उसका समय और प्रवृत्तियां उसे वह प्रशिक्षण प्राप्त करने की अनुमति दे, जो उसकी प्रगति को संभव बनायेगा।

सोवियत संघ की कुछ सप्ताहों की अपनी यात्रा के दौरान मैं इस प्रश्न का वैज्ञानिक उत्तर नहीं पा सका कि क्या स्त्रियों को प्राप्त कुछ विशेषाधिकारों और रक्षाओं की वस्तुतः इस वजह से आवश्यकता है कि उनकी शारीरिक रचना पुरुषों से भिन्न है। लेकिन स्त्रियों से संबद्ध अंतर्राष्ट्रीय श्रम ब्यूरो के मानकों की जांच से यह साफ हो जाता है कि सोवियत संघ में विद्यमान व्यवहार इस संगठन के निर्देशों के अनुरूप है।

मेरी निजी राय यह है कि "अबलाओं" की रक्षा के उपायों में से कुछ विगत में मूलबद्ध विश्वास का परिणाम है कि पुरुष स्त्रियों के मुकाबले में श्रेष्ठ हैं। ऐसी धारणाएं बहुत से समाजों में विद्यमान

उठाये जाते है। अगर औरतें भारी बोझ उठाते हुए या विषैले पद
या आयनन विकिरण के प्रभाव मे या खानो मे मजिलो का मुगन
काम करते हुए अपने जनन-अवयवो को क्षति पहुचाये, तो वे मन
मा नही बन पायेगी। अत कुछ पेशे उनके लिए बद है।

हर हालत मे एक विदेशी यात्री आसानी मे यह देख स
है कि स्त्रियो की काम की परिस्थितिया कम से कम स० रा० अतर
श्रम कार्यालय द्वारा तैयार किये गये मानको और विभिन्न कवे
के ब्यौरो के अनुरूप है। उदाहरण के लिए, सोवियत सघ ने इन कवे
को अभिपुष्ट किया है और मैने ऐसा कोई प्रमाण नही देखा है कि
इनका पालन नही करता भूमिगत कार्य (स्त्रिया) कवेन्शन, स
पारिश्रमिक कवेन्शन, भेदभाव (रोजगार और पेशा) कवेन
अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन सहित कुछ बडे पूजीवादी देशो ने इनमे
किसी भी कवेन्शन को अभिपुष्ट नही किया है। इन पक्तियो को लि
समय अमरीका के सविधान मे स्त्रियो को समान अधिकार देने स
सशोधन अब भी स्वीकार नही किया गया है।

सोवियत सघ मे श्रम शक्ति का अभाव महसूस किया जात
और इसलिए उदात्त रुख के अलावा, स्त्रियो और उनकी हि
के बारे में विशेष चिता करने के गभीर व्यावहारिक कारण
कभी-कभी इस चिता का वर्णन करनेवाली भाषा मुझे भावात्मक
पितृसत्तात्मक तक प्रतीत होती है। मैने ऐसी चीज के प्रमाण देखे
"लघु महिला सलक्षण" कहा जा सकता है, जिसका तात्पर्य यह
कि पुरुष कभी-कभी स्त्रियो के सबंध मे ऐसे बातें करते है मानो
मनोहर, निस्सहाय जीव हों, जिनकी बडे, मजबूत पुरुषो द्वारा
की जानी चाहिए।

लेकिन गर्भवती स्त्रियो के सबध में यह चिता एकदम वास्त
...प है, जो बच्चे को जन्म देने के प
के बाद ५६ दिन की सवेतन छुट्टी पाती
देनेवाली स्त्रिया प्रसव के बाद ७२ दिन
..., कोई भी स्त्री बच्चे को जन्म देने के ब
...से सकती है और उसे पूरे साल ३५ रु
...परिवार वाली स्त्रियो को अनुदान मिल
सहायता से ओलिम्पिक गाव मे रहनेवा

बोरुकायेद परिवार अपने बड़े परिवार का प्रबंध करता है।

बेशक, स्वस्थ स्त्री समाज के लिए जितना कर सकती है, उतना कोई भी पुरुष नही कर सकता। वह नया जीवन दे सकती है और सर्वत्र यह अद्वितीय योगदान करनेवाली स्त्रियो की भाति वह इतने बोझ वहन करती है, जिन्हे एक पुरुष कभी नही वहन कर सकता। इन बोझो को वहन करने के बदले मे सोवियत स्त्रियो को ऐसे विशेषाधिकार प्रदान किये गये हैं, जो पुरुषो को नही प्राप्त है। मिसाल के लिए, वे ५५ साल की आयु मे पेशन पर जा सकती हैं (उन स्त्रियो को छोडकर जिनके कई बच्चे हैं जो ५० साल की आयु मे यह अधिकार प्राप्त कर लेती है)। लेकिन पुरुष (कुछ खतरनाक पेशो को छोडकर) सामान्यत ६० साल की आयु होने पर ही पेशन पर जा सकते हैं। परतु कोई भी स्त्री या पुरुष तब तक पेशन पर नही जाता, जब तक वह नही चाहता। वह ५५ साल की आयु के बाद भी अपना काम जारी रख सकती है और केवल अपना नियमित वेतन ही नही, बल्कि कुछ कामो मे अपना पेशन भी प्राप्त कर सकती है। उसकी पेशन सामान्यत उस वेतन का ५०-७५ प्रतिशत होती है, जो उसे काम करते समय मिलता था। जिन स्त्रियो का वेतन निम्न वर्ग से सबद्ध होता है, वे अपने वेतन के बराबर पेशन पाती है।

इस सबका यह अर्थ नही है कि स्त्री को मात्र एक जनन-मशीन के रूप मे रक्षित और पुरस्कृत किया जाता है। उसे इतना अधिक सुअवसर प्राप्त है जितना कि उसका समय और प्रवृत्तिया उसे वह प्रशिक्षण प्राप्त करने की अनुमति दे, जो उसकी प्रगति को सभव बनायेगा।

सोवियत सघ की कुछ सप्ताहो की अपनी यात्रा के दौरान मै इस प्रश्न का वैज्ञानिक उत्तर नही पा सका कि क्या स्त्रियो को प्राप्त कुछ विशेषाधिकारो और रक्षाओ की वस्तुत इस वजह से आवश्यकता है कि उनकी शारीरिक रचना पुरुषो से भिन्न है। लेकिन स्त्रियो से सबद्ध अतर्राष्ट्रीय श्रम ब्यूरो के मानको की जाच से यह साफ हो जाता है कि सोवियत सघ मे विद्यमान व्यवहार इस सगठन के निर्देशो के अनुरूप है।

मेरी निजी राय यह है कि "अबलाओ" की रक्षा के उपायो मे से कुछ विगत मे मूलबद्ध विश्वास का परिणाम है कि पुरुष स्त्रियो के मुकाबले मे श्रेष्ठ हैं। ऐसी धारणाए बहुत से समाजो मे विद्यमान

है। निस्सदेह, वे क्राति-पूर्व रूसी तथा मध्य एशियाई समाजो मे भी विद्यमान थी। और अगर अनेकानेक प्रथाओ और विश्वासो के परिवर्तन की धीमी गति को ध्यान मे रखा जाये तो यह चमत्कार ही होगा यदि पुरुष-श्रेष्ठता की धारणाए समाजवाद के अतर्गत केवल दो पीढ़ियो की अवधि मे ही समाप्त हो जाये। लेकिन यदि विदेशियो की नज़रो से देखा जाये, तो जो कुछ घटित हुआ है, वह चमत्कार ही हुआ है।

इस चीज़ के बारे मे पहले ही कहा जा चुका है कि स्त्रिया लगभग सभी पेशो मे काम करती है। उसी के लिए वे उतना ही पा सकती है जितना कि पुरुष। ( इन पक्तियो को लिखते समय मेरी मेज़ पर डेनवर, कोलोरैडो मे अमरीकी जिला अदालत के, जो मेरे घर के निकट है, मुख्य न्यायाधीश का १७ अप्रैल १९७८ का कानूनी निर्णय पड़ा है। नर्सों ने, जो महसूस कर रही थी कि उन्हे लगभग उसी काम को पूरा करने के लिए पुरुषो से कम वेतन मिलता है, समान वेतन पाने के लिए मुकदमा दायर कर दिया। न्यायाधीश ने यह घोषणा करते हुए स्त्रियो के विरुद्ध फैसला दिया कि लगभग उसी काम के लिए समान वेतन देना "हमारी जीवन-पद्धति के लिए बिल्कुल विघटनकारी होगा और वर्तमान समय मे हमारे यहा काफी विघटन हो चुका है । परिणाम ( स्त्रियो को समान वेतन देने का – लेखक ) अमरीकी अर्थ व्यवस्था मे पूर्ण अव्यवस्था होगा "

कुछ धीमेपन के बावजूद सोवियत स्त्रिया अपने पेशो मे लगातार अधिकाधिक ऊचा उठती जा रही है। वे सात बड़ी ट्रेड-यूनियनो – व्यापार और सहकारी मज़दूर यूनियन, स्थानीय उद्योग और सामुदायिक सेवा मज़दूर यूनियन, सचार मज़दूर यूनियन, स्वास्थ्य कर्मी यूनियन, हल्का और सूती उद्योग मज़दूर यूनियन, शैक्षिक और वैज्ञानिक कर्मी यूनियन और डाकटरी कर्मी यूनियन – की अध्यक्ष है। ट्रेड-यूनियनो की अखिल सघीय केंद्रीय परिषद के दस सचिवो मे से दो स्त्रिया है और इनमे से एक कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति की सदस्य भी है।

राजनीति मे स्त्रियो की भागीदारी भी निरतर बढ़ती रही है। [illegible] के बाद कम्युनिस्ट पार्टी के अभियानो के फलस्वरूप पार्टी [illegible] मे वृद्धि होने लगी, जिसके सदस्य आरभ मे [illegible] १९[illegible] तक पार्टी की सदस्यता मे स्त्रियो का [illegible]

है। निस्संदेह, ये क्रांति-पूर्व रूसी तथा मध्य एशियाई समाजों में भी विद्यमान थीं। और अगर अनेकानेक प्रथाओं और विश्वासों के परिवर्तन की धीमी गति को ध्यान में रखा जाये तो यह चमत्कार ही होगा यदि पुरुष-श्रेष्ठता की धारणाएं समाजवाद के अंतर्गत केवल दो पीढ़ियों की अवधि में ही समाप्त हो जायें। लेकिन यदि विदेशियों की नज़रों से देखा जाये, तो जो कुछ घटित हुआ है, वह चमत्कार ही हुआ है।

इस चीज़ के बारे में पहले ही कहा जा चुका है कि स्त्रियां लगभग सभी पेशों में काम करती हैं। उसी के लिए वे उतना ही पा सकती हैं जितना कि पुरुष। (इन पंक्तियों को लिखते समय मेरी मेज़ पर डेनवर, कोलोरैडो में अमरीकी ज़िला अदालत के, जो मेरे घर के निकट है, मुख्य न्यायाधीश का १७ अप्रैल १९७८ का कानूनी निर्णय पड़ा है। नर्सों ने, जो महसूस कर रही थी कि उन्हें लगभग उसी काम को पूरा करने के लिए पुरुषों से कम वेतन मिलता है, समान वेतन पाने के लिए मुकदमा दायर कर दिया। न्यायाधीश ने यह घोषणा करते हुए स्त्रियों के विरुद्ध फैसला दिया कि लगभग उसी काम के लिए समान वेतन देना "हमारी जीवन-पद्धति के लिए बिल्कुल विघटनकारी होगा और वर्तमान समय में हमारे यहां काफी विघटन हो चुका है । परिणाम (स्त्रियों को समान वेतन देने का—लेखक) अमरीकी अर्थ-व्यवस्था में पूर्ण अव्यवस्था होगा ."

कुछ धीमेपन के बावजूद सोवियत स्त्रियां अपने पेशों में लगातार अधिकाधिक ऊंचा उठती जा रही हैं। वे सात बड़ी ट्रेड-यूनियनों—व्यापार और सहकारी मज़दूर यूनियन, स्थानीय उद्योग और सामुदायिक सेवा मज़दूर यूनियन, संचार मज़दूर यूनियन, खाद्य कर्मी यूनियन, हल्का और सूती उद्योग मज़दूर यूनियन, शैक्षिक और वैज्ञानिक कर्मी यूनियन और डाक्टरी कर्मी यूनियन—की अध्यक्ष हैं। ट्रेड-यूनियनों की अखिल संघीय केंद्रीय परिषद के दस सचिवों में से दो स्त्रियां हैं और इनमें से एक कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति की सदस्य भी है।

राजनीति में स्त्रियों की भागीदारी भी निरंतर बढ़ती गयी है। क्रांति के शीघ्र बाद कम्युनिस्ट पार्टी के अभियानों के फलस्वरूप पार्टी की स्त्री-सदस्यता में वृद्धि होने लगी, जिसके सदस्य आरंभ में मुख्यतः पुरुष ही थे। १९२२ तक पार्टी की सदस्यता में स्त्रियों का हिस्सा

७८ प्रतिशत था और १९२४ तक यह संख्या बढ़कर ८६ प्रतिशत हो गयी। १९८१ तक कुल पार्टी सदस्यों का लगभग एक-चौथाई स्त्रियां थी।

सोवियतों में स्त्रियों की भूमिका बढ़ गयी है जो हर स्तर पर सोवियत समाज के मामलों का संचालन करती है। इस समय स्थानीय सोवियतों में आधे प्रतिनिधि स्त्रियां है, १५ जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतों में प्रतिनिधियों का ३६ प्रतिशत स्त्रियां हैं। सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत में लगभग एक-तिहाई प्रतिनिधि स्त्रियां हैं (३० साल पहले के प्रतिशत से दुगुना अधिक) और चार स्त्रियां सोवियत संघ की ... सोवियत – देश की राजकीय सत्ता का उच्चतम अवयव – के मंडल की सदस्य है। सर्वोच्च सोवियत में स्त्रियों की भागीदारी ... जा रही है।

स्त्रियों की समानता की गारंटी करने के लिए प्रबंधक-मंडल ... ट्रेड-यूनियन के बीच हुए हर वार्षिक सामूहिक समझौते में विशेष ... शामिल किये जाते हैं। इन समझौतों में स्त्रियों के लिए विशेष प्रशिक्षण ... व्यवस्था होती है ताकि उन्हें बेहतर कामों के लिए सुसज्जित किया ... सके और इस कमी को पूरा किया जा सके कि वे अब भी अनेक ... मों में उतनी तेज़ी से ऊपर नहीं उठती, जितनी तेज़ी से पुरुष ... ते हैं।

स्पष्टतः विकास की यह धीमी गति इस चीज़ का परिणाम ... कि स्त्रियों के पास अपने कौशल को विकसित करने के लिए कम ... मी समय होता है, क्योंकि वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक घरेलू और ... शु-रक्षा कार्य करती है। कानून और सामूहिक समझौते पुरुषों से ... च्चे की देखभाल करने, बर्तन धोने, खाना बनाने, घर की सफाई ... रने, बाज़ार करने के कामों में आधा हिस्सा बटाने की मांग नहीं ... र सकते। परन्तु ट्रेड-यूनियनें (बहुत से अन्य संगठनों और प्रकाशनों ... साथ) घरेलू कार्यों में हिस्सा बटाने और इस तरह स्त्रियों के ... समानाधिकार को पूर्ण वास्तविकता बनाने के लिए पुरुषों को शिक्षित करने ... की कोशिश करती है। अगर इस संबंध में कोई प्रगति है, तो वह धीमी ... है। विशेष रूप से पुरानी पीढ़ी के पुरुषों में परिवर्तन के लक्षण कम है।

बुर्गेनिया के उत्तर-पूर्व में मैं जिस बुनाई मिल को देखने गया, उसकी पार्टी सचिव और ट्रेड-यूनियन नेता दोनों ही स्त्रियां थी। पहली

है। निस्संदेह, वे क्रान्ति-पूर्व रूसी तथा मध्य एशियाई समाजों में भी विद्यमान थी। और अगर अनेकानेक प्रथाओं और विश्वासों के परिवर्तन की धीमी गति को ध्यान में रखा जाये तो यह चमत्कार ही होगा यदि पुरुष-श्रेष्ठता की धारणाएं समाजवाद के अंतर्गत केवल दो पीढ़ियों की अवधि में ही समाप्त हो जाये। लेकिन यदि विदेशियों की नज़रों से देखा जाये, तो जो कुछ घटित हुआ है, वह चमत्कार ही हुआ है।

इस चीज के बारे में पहले ही कहा जा चुका है कि स्त्रियां लगभग सभी पेशों में काम करती हैं। उसी के लिए वे उतना ही पा सकती हैं जितना कि पुरुष। (इन पंक्तियों को लिखते समय मेरी मेज़ पर डेनवर, कोलोरैडो में अमरीकी ज़िला अदालत के, जो मेरे घर के निकट है, मुख्य न्यायाधीश का १७ अप्रैल १६७८ का कानूनी निर्णय पड़ा है। नर्सों ने, जो महसूस कर रही थीं कि उन्हें लगभग उसी काम को पूरा करने के लिए पुरुषों से कम वेतन मिलता है, समान वेतन पाने के लिए मुकदमा दायर कर दिया। न्यायाधीश ने यह घोषणा करते हुए स्त्रियों के विरुद्ध फैसला दिया कि लगभग उसी काम के लिए समान वेतन देना "हमारी जीवन-पद्धति के लिए बिल्कुल विघटनकारी होगा और वर्तमान समय में हमारे यहां काफी विघटन हो चुका है । परिणाम (स्त्रियों को समान वेतन देने का—लेखक) अमरीकी अर्थव्यवस्था में पूर्ण अव्यवस्था होगा ")

कुछ धीमेपन के बावजूद सोवियत स्त्रियां अपने पेशों में लगातार अधिकाधिक ऊंचा उठती जा रही हैं। वे सात बड़ी ट्रेड-यूनियनों—व्यापार और सहकारी मज़दूर यूनियन, स्थानीय उद्योग और सामुदायिक सेवा मज़दूर यूनियन, संचार मज़दूर यूनियन, खाद्य कर्मी यूनियन, हल्का और सूती उद्योग मज़दूर यूनियन, शैक्षिक और वैज्ञानिक कर्मी यूनियन और डाक्टरी कर्मी यूनियन—की अध्यक्ष हैं। ट्रेड-यूनियनों की अखिल संघीय केंद्रीय परिषद के दस सचिवों में से दो स्त्रियां हैं और इनमें से एक कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति की सदस्य भी है।

राजनीति में स्त्रियों की भागीदारी भी निरंतर बढ़ती गयी है। क्रान्ति के शीघ्र बाद कम्युनिस्ट पार्टी के अभियानों के फलस्वरूप पार्टी की स्त्री-सदस्यता में वृद्धि होने लगी, जिसके सदस्य आरंभ में प्रायः पुरुष ही थे। १६[illegible] तक पार्टी की सदस्यता में स्त्रियों का हिस्सा

मैंने देखा कि फूल खिल रहे थे, जो वातावरण को सुखद रूप से सजीव बना देते थे।

"क्या यह भी ट्रेड-यूनियन का काम है?" मैंने पूछा।

"हा," उन्होंने मुझे उत्तर दिया।

मै सब कुछ साफ-साफ समझने लगा। फैक्टरी के भोजनालय ने भी ट्रेड-यूनियन के प्रभाव को प्रदर्शित किया। हालाकि फैक्टरी साल भर पहले ही चालू हुई थी, वातावरण को अधिक सजीव बनाने के लिए, जैसा कि कामगारिने चाहती थी, भोजनालय को पुनर्निर्मित किया गया था।

मुझे बताया गया कि बहुत सी स्त्रियो ने अभी शादी नही की थी। उनमें से कुछ अपने माता-पिताओं के साथ रह रही थी। अन्य दूसरी अविवाहित स्त्रियो के साथ होस्टलों मे रह रही थी। विवाहित स्त्रिया फैक्टरी द्वारा बनाये गये नये घरों मे रह रही थी तथा और कुछ रिहायशी घर बनाये जानेवाले थे।

इस उद्यम से परिचय पाने के बाद जब मै निदेशक के कमरे मे बैठा, तो मुझसे इस बुनाई मिल के बारे में मेरी छाप के संबध मे पूछा गया।

"मै बुनाई मिलो का विशेषज्ञ नही हू," मैंने कहा। "वस्तुत औद्योगिक उद्यमो के बारे मे मेरी जानकारी कम ही है, लेकिन आपकी मिल काम करने का एक बहुत सुखद स्थान प्रतीत होती है। युवा स्त्रिया स्वस्थ दिखायी देती हैं और अपना काम भली-भाति जानती है।"

इन कामकाजी भेटवार्ताओ के दौरान मैंने स्त्रियो के समक्ष प्रस्तुत समस्याओ और उन सफलताओं को ध्यान मे रखा, जिन्हे उन्होंने प्राप्त किया है। लेकिन बहुत अक्सर जिन अधिकारियो से मै मिला, वे पुरुष थे। वे सरकारी पदो पर थे, अनेकानेक फैक्टरियों, माध्यमिक स्कूलों और उच्च शैक्षिक संस्थानो का संचालन करते थे। पर मै १९८१ मे १९६३ की तुलना में अधिक स्त्री-प्रधानो से मिला और मै आशा करता हू कि अगर कुछ वर्षों मे मै पुन इधर आऊ, तो मैं पाउगा कि सत्ता-पदों पर और भी अधिक स्त्रिया उस स्तर से ऊचा पहुच गयी है, जिसे बुर्गानिया मे बुनाई मिल मे पार्टी और ट्रेड-यूनियन प्रधानों ने प्राप्त किया है। जैसे-जैसे विशेष रूप से युवा स्त्रिया उच्च नेतृत्व के पदों के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण और अनुभव पाने हेतु अधिकाधिक

थी शान-सौम्य, नारी-गुलम नीना तुमास्यान और दूसरी थी सर्वांली, सुंदर और जीवंत फाइना दुवानोवा। मिल में मजदूरों के रूप में और उन १५०० युवा स्त्रियों के नेताओं के रूप में अपने कामों में दोनों ही भली-भांति परिचित प्रतीत होती थीं, जो जाड़े के गर्म सूट और स्वीटर तैयार करनेवाली जटिल मशीनों पर काम करती हैं। पार्टी सचिव पूर्णकालिक इंजीनियर थी जो अपने निजी समय में मिल में पार्टी-कार्य करती थी। ट्रेड-यूनियन की नेता मिल की लाइब्रेरी में लाइब्रेरियन थी, लेकिन अब ट्रेड-यूनियन से संबंधित कार्यों को पूरा करने में अपना सारा समय लगाती है।

इन स्त्रियों के मिल के निदेशक प्योत्र विनोग्रादोव से अत्यंत मैत्रीपूर्ण संबंध प्रतीत होते थे। वह प्रौढ़ थे, युद्ध के वर्षों में उलान-उदे आये थे, शादी की और यहीं बस गये। उनके पास कानून की डिग्री है तथा निदेशन और संगठन का लंबा अनुभव प्राप्त है, हालांकि यह अनुभव उन्हें सूती उद्योग में नहीं मिला था।

जब मैं एक वर्कशाप से, जहां बड़ी जटिल मशीनें स्वीटर बुन रही थीं, रोशनी से जगमगाते हॉल में गया, जिसमें दसियों युवा स्त्रियां सिलाई मशीनों पर बैठी हुई थीं, तो ट्रेड-यूनियन सचिव ने बड़ी तसल्ली से निदेशक की ओर देखकर मुस्कराया और प्रकाश-उपकरणों पर मेरा ध्यान आकर्षित किया।

"ये ट्रेड-यूनियन की मांग पर लगाये गये हैं," उन्होंने कहा। "पहले की रोशनियां अनुपयुक्त थीं।"

पुरानी प्रकाश-प्रणाली के चिन्ह अब भी मौजूद थे और यह स्पष्ट था कि इस भवन की डिज़ाइन बनानेवाले वास्तुकार ने प्रकाश-समस्या को हल करने में कोई कल्पना नहीं प्रदर्शित की थी। वैसे ही यह भी स्पष्ट था कि निदेशक ने इन युवा स्त्रियों के लिए कार्य-परिस्थितियों को बेहतर बनाने में ट्रेड-यूनियन के साथ सहयोग किया था।

एक कमरे में, जहां पोशाकों की अंतिम परिसज्जा की जा रही थी, संगीत बज रहा था। "यहां काम करनेवाली स्त्रियां कहती हैं कि वे संगीत के साथ बेहतर काम करती हैं। अतः ट्रेड-यूनियन ने इस बात की व्यवस्था की कि वे जब चाहें तब संगीत सुन सकें," उत्साहपूर्ण ट्रेड-यूनियन कार्यकर्त्री ने कहा।

बड़े-बड़े कमरों में जो मशीनों से भरे हुए थे और गलियारों में

गाली समय आ रही है, वैसे-वैसे विगत से बनी आ रही बाधाए धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं।

यह परिवर्तन कैसे घट रहा है? पहले, अधिकाधिक सुपरबाजारो का निर्माण किया जा रहा है। एक सुपरबाजार मे परिवार के लिए अधिकाश आवश्यक रसद खरीदने मे पहले से कम समय लगता है जब बिक्री की विलबकारी, पुरानी पद्धति के साथ अलग-अलग खाद्य-पदार्थों की बिक्री करनेवाली विभिन्न दुकानों से रसद इकट्ठी करनी पडती थी।

सुपरबाजारो की बढती सख्या इस स्थिति को हल्का बनाने का एकमात्र साधन नही है। कार्य-स्थलो पर या उनके निकट दुकानो की सख्या भी बढती जा रही है, जहा अर्ध-तैयार खाद्य-पदार्थ खरीदे जा सकते हैं। यहा घर लौटते समय आदमी ऐसे खाद्य-पदार्थ खरीद सकता है, जिन्हे तैयार करने के लिए केवल गरम करने की जरूरत होती है और इस तरह काफी समय बच जाता है। मैने पुरानी किस्म की दुकानो की अपेक्षा अर्ध-तैयार खाद्य-पदार्थों की दुकानों और सुपरबाजारो मे अधिक पुरुष देखे। प्रतीत होता है कि ये आधुनिक, श्रम को हल्का बनानेवाली दुकाने खरीददारी मे हिस्सा बटाने मे पुरुषो को प्रोत्साहित करती हैं और वे स्त्रियो के बोझ को भी हल्का बनाती है जो अब भी खरीददारो का अधिकाश बनाती हैं। उद्यमो मे कायम अन्य सुविधाए भी, जहा स्त्रिया काम करती हैं, जीवन को हल्का बनाती है। ये हैं दर्जी की दुकाने, नाई की दुकाने, ड्राई-क्लीनिंग की दुकाने, पोलीक्लिनिक, जूतो की मरम्मत की दुकाने। ये बाह्य सुधार कुछ हद तक उन कार्यों को अपने ऊपर लेने के प्रति पुरुषो के रुख मे परिवर्तन की कम तीव्र गति को पूरा करते हैं, जिन्हे स्त्रिया परपरागत रूप से करती आयी है। सभवत इन कार्यो मे पुरुषो द्वारा हिस्सा बटाने की अनिच्छा कार्ल मार्क्स के ध्यान मे थी जब उन्होंने १८६८ मे एक पत्र मे कहा: "सामाजिक प्रगति सुदर स्त्रियो ( बदसूरत स्त्रियों सहित ) की सामाजिक स्थिति से ठीक-ठीक मापी जा सकती है।"

कानूनन सोवियत स्त्रिया अपनी सामाजिक स्थिति मे पुरुषो के बराबर हैं, लेकिन कुछ स्त्रिया आप से कहेंगी कि प्रगति केवल तभी पूर्ण होगी जब किसी भी औरत को पारिवारिक और शिशु-रक्षा कार्य का आधा से अधिक नही करना पडे।

साइबेरिया मे मगोलियाई सीमा के निकट बुर्यात स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतत्र की राजधानी उलान-उदे मे मैंने इवेग्ना

अताक्शिनोवा ने स्त्रियों की समस्याओं के बारे में बात की। वह एक ऐसे समाज में बड़ी जिसमें बौद्ध और जीववादी परंपराओं का प्राधान्य था। इन परिस्थितियों में लगभग एक भी औरत, यहा तक कि साइबेरिया में रहनेवाली रूसी प्रवासी स्त्रिया भी क्रांति के पहले शिक्षित नहीं थी। अताक्शिनोवा के अपने माता-पिता इस संबंध में साधारण थे। उनके पिता की शिक्षा क्रांति के बाद जाकर ही शुरू हुई लेकिन वह इजीनियर बने। उनकी मा उसी अवधि में निरक्षरता से निकलकर अध्यापिका बनी। स्वय अताक्शिनोवा पहले अध्यापिका बनी और फिर स्कूल की निदेशक। इस कार्य-क्षेत्र से निकलकर उन्होंने अपने को पार्टी कार्य के लिए पूरी तौर पर समर्पित कर दिया। फिर वह राजधानी उलान-उदे के पाच ज़िलों में से एक, अक्तूबर ज़िले की सोवियत की अध्यक्ष बन गयी। अब वह इस ज़िले में कम्युनिस्ट पार्टी की सचिव तथा बुर्यात जनतंत्र की सर्वोच्च सोवियत की प्रतिनिधि हैं। इन सब कार्यों को करते हुए इनेस्सा अताक्शिनोवा ने अपनी दो बेटियों का भी पालन-पोषण किया, जो अब उच्च शिक्षाप्राप्त विशेषज्ञ हैं।

वह तत्परतापूर्वक स्वीकार करती हैं कि अब तक स्त्रियों को पुरुषों से अधिक कठिन काम करना पड़ा है, लेकिन वह उन दोष-निवारक उपायों की ओर इंगित करती हैं, जो उनके विचार में, स्थिति को बदल रहे हैं। शादी के पहले युवा युगलों को सलाह का उद्देश्य युवा पुरुषों को यह दिखाना है कि उन्हें घरेलू कामों में अपनी पत्नियों से हिस्सा बटाना चाहिए। प्रेस में शैक्षिक अभियान इस सलाह को मज़बूत बनाते हैं और अताक्शिनोवा कहती हैं कि प्रौढ़ लोगों के विपरीत अनेक युवा लोग घरेलू कार्यों में अच्छा-खासा हिस्सा बटाते हैं।

अगर बड़े औद्योगिक उद्यमों से संबद्ध शिशु-सदन और किंडरगार्टन होते हैं, तो स्त्रियों का बोझ बड़ा हल्का हो जाता है। प्रसंगत इन उद्यमों में युवा स्त्रिया मज़दूरों का अधिकांश बनाती हैं। जब वे शादी करती हैं और बच्चों को जन्म देती हैं, वे अपने काम से संबंधित सभी लाभ पाती रहती हैं और बच्चों के जन्म के पहले और बाद में उन्हें सवेतन छुट्टी मिलती है। जब वे काम पर लौटती हैं, तो उनके बच्चे बगल में ही होते हैं। ये युवा कामकाजी माताओं – सामान्यतः सोवियत स्त्रियों – ने तब से लंबा रास्ता तय किया है, जब उन्हें भागीदारी की अनुमति नहीं थी।

अध्याय ७

# जातियों का समान अधिकार

बहुत से अमरीकी, और केवल वे ही नहीं, "रूस" और "सोवियत संघ" शब्दों को एक-दूसरे के एवज़ी के रूप में प्रयोग करते हैं। अखबारी रिपोर्टर, एनाउंसर, राजनीतिक कार्यकर्ता, अध्यापक—सभी रूस के बारे में बात करते हैं, जिससे उनका अभिप्राय सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ से होता है। बेशक, बात यह है कि २६,२४,४२,००० की आबादी (१९७९ की जनगणना के अनुसार*) में से लगभग आधे लोग रूसी नहीं थे और गैर-रूसियों की संख्या रूसियों की संख्या से तेज़ी से बढ़ रही है।

गैर-रूसी १०० से अधिक विभिन्न जातियों के सदस्य हैं। १,२०,००,००० उज़्बेक, लगभग २०,००,००० जर्मन, ३,२८,००० याकूत, २८,००० एवेंक हैं, आदि-आदि। सोवियत संघ एक बहुजातीय राज्य है और सभी जातियों को समान अधिकार प्राप्त है।**

---

* १९८२ के अंत में सोवियत संघ की आबादी लगभग २७ करोड़ हो गयी थी।—सं०

** अनुच्छेद ३६ विभिन्न जातियों और नस्लों के सोवियत नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं।

इन अधिकारों का प्रयोग सोवियत संघ की सभी जातियों एवं उपजातियों के सर्वतोमुखी विकास और उन्हें एक दूसरे के निकटतर लाने की नीति द्वारा, सोवियत देशभक्ति और समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना में सोवियत नागरिकों को शिक्षित करके और मातृभाषा तथा सोवियत संघ के अन्य जनगण की भाषाओं का उपयोग करने की संभावना प्रदान कर सुनिश्चित किया जाता है।

नस्ल या जाति के आधार पर नागरिकों के अधिकारों का किसी भी प्रकार का प्रत्यक्ष या परोक्ष परिसीमन, अथवा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उनके लिए किसी प्रकार की विशेष सुविधा स्थापित करना और नस्ली या जातीय अलगाव, शत्रुता अथवा घृणा का किसी प्रकार का प्रतिपादन दण्डनीय है।

विगत मे रूसी साम्राज्य ने गैर-रूसी संस्कृतियो और भाषाओं तथा अनेकानेक विभिन्न जातियो की, जिन पर ज़ार शासन करता था, राजकीय सप्रभुता की किसी भी परिघटना को नष्ट करने की कोशिश की। स्मरणीय है कि लेनिन ने रूसी साम्राज्य को "जातियो का बदी-गृह" कहा था।

जातीय अधिकारो की मान्यता सोवियत सरकार के सत्ता मे आने के पहले दिन से ही शुरू हो गयी। उसने मजदूरो, सैनिको और किसानो के नाम एक अपील मे घोषणा की कि वह सभी जातियो के आत्म-निर्णय के अधिकार की गारटी करती है। २ नवबर (नये कलेडर के अनुसार १५ नवबर) को नयी सरकार ने एक अधिक ब्यौरेवार 'रूस की जातियो के अधिकारो की घोषणा' जारी की, जिसमे निम्नलिखित सिद्धात शामिल थे

१ सभी जातियों की समानता और सप्रभुता।

२ स्वतत्र आत्मनिर्णय, अलग होने और स्वतत्र राज्यो के गठन तक जातियो का अधिकार। (इस सिद्धात के अनुसार फिनलैड वास्तव मे अलग हो गया और स्वतत्र रहा है।)

३ सभी जातीय और इनसे जुड़े धार्मिक प्रतिबधो का उन्मूलन

४ जातीय अल्पसख्यको और नृजातीय समूहो का स्वतत्र विकास

सोवियत सघ की राजकीय प्रणाली की स्थापना के साथ उसकी जातियो के विकास सबधी सतत चिता भी प्रकट हुई। देश के उच्चतम सत्ता निकाय सर्वोच्च सोवियत मे समान अधिकारप्राप्त दो सदन है।

---

अनुच्छेद ७० सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ एक अखड सघीय बहुजातीय राज्य है जो समाजवादी सघवद्धता के सिद्धान्त पर जातियो के स्वतत्र आत्मनिर्ण और समान सोवियत समाजवादी जनतत्रों के स्वैच्छिक सयोजन के फलस्वरूप गठि हुआ है।

सोवियत सघ सोवियत जनता की राजकीय एकता का मूर्त रूप है और कम्यु निज्म का मिलजुल कर निर्माण करने के उद्देश्य से अपनी सभी जातियो एव उपजाति को एकजुट करता है।

*अनुच्छेद १०६ सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत मे दो सदन है स सोवियत और जातियो की सोवियत।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के दोनो सदनो के अधिकार बराबर है

विगत मे रूसी साम्राज्य ने गैर-रूसी संस्कृतियों और भाषाओ तथा अनेकानेक विभिन्न जातियों की, जिन पर ज़ार शासन करता था राजकीय सप्रभुता की किसी भी परिघटना को नष्ट करने की कोशिश की। स्मरणीय है कि लेनिन ने रूसी साम्राज्य को "जातियों का बंदी-गृह" कहा था।

जातीय अधिकारो की मान्यता सोवियत सरकार के सत्ता मे आने के पहले दिन से ही शुरू हो गयी। उसने मजदूरों, सैनिकों और किसानों के नाम एक अपील मे घोषणा की कि वह सभी जातियों के आत्म-निर्णय के अधिकार की गारटी करती है। २ नवबर ( नये कलेंडर के अनुसार १५ नवबर ) को नयी सरकार ने एक अधिक ब्यौरेवार रूस की जातियों के अधिकारो की घोषणा' जारी की, जिसमे निम्न-लिखित सिद्धात शामिल थे

१ सभी जातियों की समानता और सप्रभुता।

२ स्वतत्र आत्मनिर्णय, अलग होने और स्वतत्र राज्यो के गठन तक जातियों का अधिकार। ( इस सिद्धात के अनुसार फिनलैंड वास्तव मे अलग हो गया और स्वतत्र रहा है। )

३ सभी जातीय और इससे जुडे धार्मिक प्रतिबधो का उन्मूलन।

४ जातीय अल्पसख्यको और नृजातीय समूहो का स्वतत्र विकास।

सोवियत सघ की राजकीय प्रणाली की स्थापना के साथ उसमे जातियों के विकास सबधी सतत चिंता भी प्रकट हुई। देश के उच्चतम सत्ता निकाय सर्वोच्च सोवियत मे समान अधिकारप्राप्त दो सदन है।*

---

अनुच्छेद ७० सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ एक अखंड संघीय बहुजातीय राज्य है जो समाजवादी संघवाद के सिद्धान्त का आधार पर जातियों के स्वतंत्र आत्मनिर्णय और समान सोवियत समाजवादी जनतंत्रों के स्वैच्छिक संघटन के फलस्वरूप गठित हुआ है।

सोवियत संघ सोवियत जनता की राजकीय एकता का मूर्त रूप है और कम्युनिज्म का निर्माण करने के उद्देश्य से अपनी सभी जातियों एव जनजातियों को एकजुट करता है।

*अनुच्छेद १०६ सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत म दो सदन है - संघ सोवियत और जातियों की सोवियत।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के दोनो सदनों के अधिकार बराबर है।

अध्याय ७

# जातियों का समान अधिकार

बहुत से अमरीकी, और केवल वे ही नही, "रूस" और "सोवियत सघ" शब्दो को एक-दूसरे के एवज़ी के रूप मे प्रयोग करते हैं। अखबारी रिपोर्टर, एनाउसर, राजनीतिक कार्यकर्ता, अध्यापक – सभी रूस के बारे मे बात करते हैं, जिससे उनका अभिप्राय सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ से होता है। बेशक, बात यह है कि २६,२४,४२,००० की आबादी (१६७६ की जनगणना के अनुसार*) मे से लगभग आधे लोग रूसी नही थे और गैर-रूसियो की सख्या रूसियो की सख्या से तेज़ी से बढ रही है।

गैर-रूसी १०० से अधिक विभिन्न जातियो के सदस्य हैं। १,२०,००,००० उज़्बेक, लगभग २०,००,००० जर्मन, ३,२८,००० याकूत, २८,००० एवेक हैं, आदि-आदि। सोवियत सघ एक बहुजातीय राज्य है और सभी जातियो को समान अधिकार प्राप्त हैं।**

---

* १६८२ के अत मे सोवियत सघ की आबादी लगभग २७ करोड़ हो गयी थी। –स०

** अनुच्छेद ३६ विभिन्न जातियो और नसलो के सोवियत नागरिको को समान अधिकार प्राप्त हैं।

इन अधिकारो का प्रयोग सोवियत सघ की सभी जातियो एव उपजातियो के सर्वतोमुखी विकास और उन्हें एक दूसरे के निकटतर लाने की नीति द्वारा, सोवियत देशभक्ति और समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना मे सोवियत नागरिको को शिक्षित करके और मातृभाषा तथा सोवियत सघ के अन्य जनगण की भाषाओ का उपयोग करने की सभावना प्रदान कर सुनिश्चित किया जाता है।

नसल या जाति के आधार पर नागरिको के अधिकारो का किसी भी प्रकार का प्रत्यक्ष या परोक्ष परिसीमन, अथवा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनके लिए किसी प्रकार की विशेष सुविधा स्थापित करना और नसली या जातीय अलगाव, शत्रुता अथवा घृणा का किसी प्रकार का प्रतिपादन दण्डनीय है।

विगत में रूसी साम्राज्य ने गैर-रूसी संस्कृतियों और भाषाओं तथा अनेकानेक विभिन्न जातियों की, जिन पर जार शासन करता था, राजकीय संप्रभुता की किसी भी परिघटना को नष्ट करने की कोशिश की। स्मरणीय है कि लेनिन ने रूसी साम्राज्य को "जातियों का बंदी-गृह" कहा था।

जातीय अधिकारों की मान्यता सोवियत सरकार के सत्ता में आने के पहले दिन से ही शुरू हो गयी। उसने मजदूरों, सैनिकों और किसानों के नाम एक अपील में घोषणा की कि वह सभी जातियों के आत्म-निर्णय के अधिकार की गारंटी करती है। २ नवंबर (नये कलेंडर के अनुसार १५ नवंबर) को नयी सरकार ने एक अधिक ब्यौरेवार 'रूस की जातियों के अधिकारों की घोषणा' जारी की जिसमें निम्न-लिखित सिद्धांत शामिल थे

१ सभी जातियों की समानता और संप्रभुता।

२ स्वतंत्र आत्मनिर्णय, अलग होने और स्वतंत्र राज्यों के गठन तक जातियों का अधिकार। (इस सिद्धांत के अनुसार फिनलैंड वास्तव में अलग हो गया और स्वतंत्र रहा है।)

३ सभी जातीय और इससे जुड़े धार्मिक प्रतिबंधों का उन्मूलन।

४ जातीय अल्पसंख्यकों और नृजातीय समूहों का स्वतंत्र विकास।

सोवियत संघ की राजकीय प्रणाली की स्थापना के साथ उसमें जातियों के विकास संबंधी सतत चिंता भी प्रकट हुई। देश के उच्चतम सत्ता निकाय सर्वोच्च सोवियत में समान अधिकारप्राप्त दो सदन है।*

---

अनुच्छेद ७० सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ एक अखंड संघीय बहुजातीय राज्य है जो समाजवादी संघवाद के सिद्धान्त पर जातियों के स्वतंत्र आत्मनिर्णय और समान सोवियत समाजवादी जनतंत्रों के स्वैच्छिक संयोजन के फलस्वरूप गठित हुआ है।

सोवियत संघ सोवियत जनता की राजकीय एकता का मूर्त रूप है और कम्यु-निज्म का निर्माण करने के उद्देश्य से अपनी सभी जातियों एवं उपजातियों को एकजुट करता है।

*अनुच्छेद १०९ सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के दो सदन हैं संघ सोवियत और जातियों की सोवियत।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के दोनों सदनों के अधिकार बराबर हैं।

एक सघ की सोवियत और दूसरा जातियों की सोवियत है।* यह व्यवस्था छोटी जातियों को उनके आकार के अनुपात से अधिक प्रतिनिधित्व प्रदान करती है और मेरी दृष्टि में यह अल्पसख्यक समूहों के अधिकार को दिये जानेवाले ध्यान का विश्वसनीय प्रमाण है।

सविधान विशेषत सभी जातियों को स्कूलो, अदालतो और अन्य सार्वजनिक स्थानों में अपनी भाषाओं का प्रयोग करने का अधिकार प्रदान करता है। वह सोवियत सघ मे विद्यमान, अपनी अन्तर्वस्तु में समाजवादी सभी सस्कृतियों की रक्षा और समृद्धि की गारटी करता है।

१९७९ मे मै ताशकद में शानदार नये ललित कला सग्रहालय को देखने गया। लोक-कला के प्रति लज्जाशील रुख के विपरीत, जिसे मैंने १९६३ मे पाया, अब लोक-परपराओं और स्थानीय परपराओं पर खुला ज़ोर स्पष्ट था। इस बार उज्बेक विगत और उज्बेक वर्तमान की भूकपीय वास्तविकताओ के प्रति ध्यान सुस्पष्ट था। मेरी दो यात्राओं के बीच में ताशकद में विनाशकारी भूकप आया था। कला सग्रहालय के नये भवन को इस ढग से बनाया गया था कि वह भूकपीय आघातों को बर्दाश्त कर सके। वस्तुत: सपूर्ण पुनर्निर्मित नगर अति मनोहर था। यह पुनर्निर्माण सोवियत सघ के विभिन्न भागो के वास्तुकारों और मजदूरों के सामूहिक प्रयासो से हुआ था। नये भवनो मे दसियों शैलियां परिलक्षित थी, लेकिन उन्हे थोपा नही गया था, न ही वे उज्बेक वास्तुशिल्पीय शैलियों से उदासीन थी। इसके बजाय वे उनके साथ सामंजस्य बनाती हैं। ताशकद एक अरोचक नगर से शानदार नगर मे विकसित हो गया था, एक ऐसा नगर जो अपने रूप और भावना मे बहुजातीय और उज्बेक दोनो ही था।

---

*अनुच्छेद ११० सघ सोवियत और जातियो की सोवियत के सदस्यो की सख्या बराबर होती है।

सघ सोवियत का चुनाव बराबर आबादी वाले निर्वाचन-क्षेत्र करते हैं।

*जातियो की सोवियत निम्नलिखित प्रतिनिधित्व के आधार पर चुनी जाती है* प्रत्येक सघ जनतत्र से ३२ प्रतिनिधि, प्रत्येक स्वायत्त जनतत्र से ११ प्रतिनिधि, प्रत्येक स्वायत्त क्षेत्र से ५ प्रतिनिधि और प्रत्येक स्वायत्त इलाके से एक प्रतिनिधि।

सघ सोवियत तथा जातियो की सोवियत उनके द्वारा निर्वाचित प्रत्यय-पत्र [illegible] के निवेदन पर प्रतिनिधियो की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में फैसले करती है और *मामलो मे चुनाव कानून का उल्लघन किया गया हो, उन मामलो में सम्बन्धित* [illegible] के चुनाव को अवैध घोषित कर देती है।

...है कि सोवियत नीति ने कभी भी शिल्पों' और
प्रथाओ को नही दबाया है और १६८१ मे मैने विगत के
स्रोतो से उत्पन्न होनेवाले कला-रूपो की जीवतता का काफी
...आ प्रमाण देखा। उदाहरणार्थ, अल्मा-अता मे मैने जन सगीत
सग्रहालय को देखा, जो अभी कुछ दिन पहले ही खुला था।
...रगियो की भाति विविध दोम्ब्रा वाद्ययत्रो और उनके सुरो के
...रक्षित रखे हुए थे और मेरा यह सौभाग्य था कि मै लोक
...बजाने मे निपुण सगीत विद्यालय के छात्रो द्वारा प्रस्तुत कसर्ट
... सफल हुआ। मुझे बताया गया कि सगीत विद्यालय लोक
...स्त्रीय सगीत मे प्रशिक्षण को प्रधानता देता है।

...ल्मा-अता मे मैने एक और सग्रहालय देखा जो १६६३ मे खुला
... खुद कज़ाख लोक साहित्य की ओर ध्यान आकृष्ट करता है।
...ार औएज़ोव का घर है, जिन्होने अन्य कृतियो के अलावा
...ीक कवि अबाई के बारे मे अनेक भाषाओ मे अनूदित ऐतिहासिक
... लिखा। इस घर को ठीक वैसे ही सुरक्षित रखा गया है, जैसा
...लेखक के जीवन-काल मे था। दर्शक न केवल अपनी सस्कृति
...र विश्व सस्कृतियो मे भी इस कज़ाख लेखक के अच्छे परिचय
...र दग रह जाता है।

...ोक-कला के कुछ मोहक और बहुत हृदयस्पर्शी रूपो ने मेरा
...िथुआनिया मे स्पष्टत वित्तीय साधनो से सपन्न नये सग्रहालय
...र्षित किया। कलाकार, स्वयशिक्षित मूर्तिकार एल्जबेते दाउ-
... पेशे मे दर्शित है। दाउगिवनिएने अक्सर विआयामी मे अपन
...रा बनायी गयी कहानियो – १८६३ मे ज़ार के विरुद्ध लिथुआ-
...िसानो के विद्रोह की कहानियो – के तत्वो को मूर्त रूप प्रदान
...। यहा अन्य-विदित दर्शित उस दुनिया को जिसमे लिथुआनिया
...आ, और उन किसानो के तीव्र प्रयास तथा वीरता को पुनर्नि-
...ती है जिन्होने इस दुनिया को पीछे छोड़ना चाहा था।

---

...अनुच्छेद १३ [illegible]

यह नाटकीय विषय था और उसे ओजपूर्ण ढग से व्यक्त
गया था, किंतु इसके लिए दाउग्विलिएने जिस विधि का उपयोग
है, वह दर्शको को प्रदर्शो को बार-बार देखने के लिए बाध्य करत
यहा न केवल दृढ भावना का, बल्कि उस दर्जिन की उत्कृष्ट कल
भी अनुभव होता है, जो अपनी सुई का उपयोग मूर्तिकार के एक अ
और अद्वितीय औजार के रूप मे करती हैं। वह वास्तव मे वृत्त
चित्र सिलती है और उन्हे उसी ढग से बनाती है जिस ढग से
कलाकार मिट्टी से बनाते हैं और जिस सामग्री से वह ये प्रभाव
चित्र बनाती हैं, वह भूर्ज की गाछो की छाल होती है, जो लिथुआ
मे सर्वत्र उगते हैं। दाउग्विलिएने उसे वसत के प्रारभ मे इकट्ठा क
हैं, पतली पट्टियो के रूप मे काटती हैं और उसे इस ढग से तैयार क
है कि वह लचीली और टिकाऊ बनी रहे। फिर वह छाल के ह
टुकडो को रग और बनावट के अनुसार सावधानी से समूहबद्ध कर
है। वह उन्हे सरेस लगे मोटे कपडे पर सिलकर वांछित आकृतियो
ढाल देती है।

है, मे परपरागत बुर्यात धातु आभूपणो से भरे एक बडे तहखाने को
देखने जाने मे ममर्थ हुआ। पूर्ण या आशिक तौर पर इस सग्रह को
समय-समय पर दिखाया जाता है। हर साल मग्रहालय आनेवाले
१ ५०,००० साइबेरियाइयो मे से हर कोई ही तहखाने के प्रदर्शों को
नही देखता, लेकिन वे अनेकानेक चित्र, मूर्तिया और शिल्पवस्तुए तो
देखते ही है, जो कि पुरानी सरकार के अतर्गत असभव था।

कभी-कभी हल की जानेवाली सास्कृतिक समस्या उतनी सुरक्षा
मे निहित नही है, जितनी कि उस सावधानी मे, जो सक्रमण-काल के
दौरान बरती जानी चाहिए। मुझे इस तरह की समस्याओ और प्रस्तावित
तथा स्वीकृत समाधानो के बारे मे मालूम हुआ, जब मै सोवियत विज्ञान
अकादमी की साइबेरियाई शाखा की बुर्यात शाखा के प्रधानो से मिला।
वहा उपस्थितो मे नृजातिविज्ञानी भी थे और उन्होने मुझे बताया कि
कैसे उनके पेशो के कर्मियो ने शादी-विवाह के बारे मे उन नये समाजवादी
कानूनो को लागू करने मे नरमी बरतने के लिए सरकार को कायल
करने मे सफल रहे, जो प्राचीन बुर्यात परपराओ से मेल नही खाते।
स्त्रियो की रक्षा करने और उनका शोषण न होने देने के उद्देश्य से इन
कानूनो ने अल्पवयस्क लडकियो की शादी पर प्रतिबध लगा दिया।
लेकिन यह जानकर कि स्पष्टीकरण-कार्य की अवधि के बिना इन
कानूनो के कार्यान्वयन के प्रति तीव्र प्रतिरोध होगा, नृजातिविज्ञानियो
ने पुरानी प्रथाओ को कुछ समय तक चलते रहने की अनुमति देने की
सलाह दी। सरकार ने सलाह मान ली और प्रस्तावित स्पष्टीकरण
अभियान चलाया। अब बुर्यात लडकिया बहुत कम उम्र मे या अपनी
इच्छा के विरुद्ध शादी करने के लिए बाध्य नही है। बुर्यात स्त्रियो को
भी वही अधिकार प्राप्त है जो सभी अन्य सोवियत स्त्रियो को प्राप्त है।

बुर्यात नृजातिविज्ञानियो ने नयी क्रातिकारी सरकार को स्थानीय
रीति-रिवाजो का सम्मान करने के लिए भी राजी किया।

परपरा और सस्कृति को बहुत-कुछ जीवित अवयवो के रूप मे
माना जाता है, जिनका उनके विकास के दौरान आदर किया जाना
चाहिए। निधुआनिया मे एक विशेष लोक-कला आदोलन विकसित हो
रहा है। सारे जनतंत्र मे जातीय पोशाको मे गायक और नर्तक मडलिया
र साल प्रतियोगिता मे भाग लेती है। सर्वोत्तम मडलिया गीत-उत्सव
भाग लेने के लिए विल्नियुस आती है, जो कई दिनो तक चलता

है। इस उत्सव में हजारों कलाकार भाग लेते हैं और दसियों हजार दर्शक देखने आते हैं।

पुरानी नृजातीय परपराओ को सुरक्षित रखने के प्रयास व्यापक रूप से प्रकट हैं। उदाहरणार्थ, अल्मा-अता जैसे अत्याधुनिक नगर मे आपको कदम-कदम पर और विभिन्न शैलियों में भेडे के सीगो की डिजाइने मिलेंगी। पहाडी भेडे के सीग उर्वरता के प्रतीक माने जाते हैं और कजाखस्तान मे यह परपरा युग-युगों से बनी आ रही है। वे पुस्तक-आवरणों और मदिरा-बोतलो तथा दरवाजों की शोभा बढाते हैं। वे तीन वास्तुकारो – कजाख, कोरियाई और रूसी – द्वारा बनाये गये सुदर नये भवन, लेनिन सास्कृतिक प्रासाद की अत्याधुनिक वास्तुशिल्पीय डिजाइन से मेल खाते हैं।

मातृ-भाषाओ मे साहित्य की भी रक्षा की जाती है और उसे प्रोत्साहित किया जाता है। बुर्यातिया में, जहां दो पीढ़ी पहले धर्म-निरपेक्ष साहित्य का कोई सगठन नही था, अब ४० सदस्यो का लेखक सघ है, जिनमे से अधिकाश बुर्यात भाषा मे लिखनेवाले बुर्यात हैं। यह ग्रुप साल में बुर्यात भाषा में दसियो पुस्तकें और बुर्यात पत्रिका 'बाइकाल' मे बहुत सी कहानिया, लेख और कविताए प्रकाशित करता है।

कजाखस्तान मे लेखक सघ काफी बडा है, क्योंकि कजाखस्तान एक बडा जनतत्र है और इस सघ के सदस्यो की बडी सख्या कजाख भाषा मे लिखती है। मातृ-भाषाओ और रूसी मे पुस्तको की अनवरत धारा सभी जनतत्रों के प्रकाशन-गृहो से बहती है। लेकिन इसके अलावा और भी तरीके हैं, जिनके द्वारा मातृ-भाषाओ और परपराओ को जीवित रखा जाता है। मैंने कजाख भाषा मे बडे ही सुदर ढग से प्रस्तुत नाटक 'फुजियामा के मार्ग पर' देखा और बुर्यात भाषा मे बड़े ही सुदर ढग से पेश किया गया ऑपेरा सुना। यह बुर्यात भाषा मे विशिष्ट तथा ५० साल पुराने बुर्यात ऑपेरा और बैले थियेटर मे प्रस्तुत ३० ऑपेरों मे से एक था।

बहुत से स्थानो मे खुले सग्रहालय कायम हैं, जिनमें वैविध्यपूर्ण सोवियत समाज को बनानेवाले अनेक नृजातीय समूहों के विगत की घरेलू वास्तु..., और साज-सामान सुरक्षित रखे गये हैं। यहां नाममात्र के ... लिये जाते हैं (वयस्को के लिए ३० कोपेक, बच्चों के लिए

१० कोपेक), लेकिन उन्हे मुख्यत राजकीय कोषो से समर्थित किया जाता है। उलान-उदे से कुछ किलोमीटर बाहर एक सग्रहालय के प्रवेश-द्वार पर सबके देखने के लिए लगे सकेत-पट्ट पर सामाजिक नीति से इन सग्रहालयो के सबध को स्पष्ट रूप से लिखा गया है "राज्य जनता की नैतिक और सौंदर्यपरक शिक्षा के लिए, उसका सास्कृतिक स्तर ऊचा उठाने के लिए समाज की सास्कृतिक सम्पदा के सरक्षण, सवर्धन और व्यापक उपयोग का ध्यान रखता है" (अनुच्छेद २७, सोवियत सघ का सविधान)।"

प्रवेश-द्वार के पार कई एकड ज़मीन फैली हुई थी, जिस पर सारे बुर्यातिया से विभिन्न कालो की घरेलू वास्तुकला और धार्मिक वास्तुकला के नमूने एकत्रित किये गये है। यहा यूर्ता थे (सुवाह्य खेमे जिनमे सिमटनेवाले जालीदार ढाचे पर नमदे का एक आवरण तान दिया जाता है)। यूर्ता बुर्यातो के विशिष्ट गृह थे, जो कभी खानाबदोशी चरवाहे थे। एक यूर्ता, जिसे मैंने देखा, साधारण था। एक दूसरा बहुत अधिक पेचीदा था। यह एक ऐसे बुर्यात का घर था, जिसने कुछ खानाबदोशी चरवाहो पर सामती नियत्रण प्राप्त किया था। लट्ठो की झोपडिया बुर्यातिया मे रूसी प्रभाव को प्रदर्शित करती थी, जब ज़ारशाही साम्राज्य ने इस क्षेत्र पर अपना नियत्रण कायम किया था। अधिकारियो और कुछ धनी लोगो के पास बडे सुसज्जित घर थे। ग़रीब लोग अधिकतर घरो में रहते थे लेकिन इन छोटे-बडे घरो मे रूसी ईसाई विश्वास या बौद्ध धर्म के अनुयायियो के अनुसार धार्मिक वस्तुए थीं।

जनतत्र मे एक छोटे नृजातीय अल्पसख्यक एवेको के जीवन को छाल के खेमे प्रकट कर रहे थे, जो अमरीकी प्रेयरी मैदान में इडियनो के घरो की याद दिलाते थे। बुर्यातिया मे १००० से कुछ अधिक एवेंक रहते हैं, लेकिन सग्रहालय में उनकी जीववादी धार्मिक परपराओ के साथ उन्हे नही भुलाया गया है।*

साधारण लट्ठे से बने एक घर के पास मेरा एक हमराह रुक गया और स्पष्टत मेरा ध्यान आकर्षित करना चाहा।

"मैं ठीक ऐसे ही घर मे बडा हुआ," उसने कहा। "मैं उसमें

---

*अनुच्छेद ६८ ऐतिहासिक स्मारको और अन्य सास्कृतिक निधियो के सरक्षण की चिन्ता सोवियत सघ के नागरिको का कर्तव्य और दायित्व है।

अपने दादा के साथ रहा करता था क्योंकि मेरे माता-पिता का देहांत हो चुका था।

फिर उसने मुझे दिखाया कि कैसे एक बच्चे को एक टोकरीनुमा पालने में झुलाया जा सकता था जो एक लबे लचीले डडे से बच्चे के मस्तक से लटका हुआ था और उसका एक सिरा बड़े मिट्टी के कुन्दे के ऊपर मजबूती से बधा हुआ था। उसकी दादी बुनाई या घरेलू काम करते हुए कभी-कभी पालने को हिला दिया करती थी। जिस आदमी ने मुझे यह बताया वह अब बुर्यात सचित्र प्रकाशन-गृह का प्रधान सपादक है और यह उस समय से केवल दो पीढ़ियों के बाद ही जब लोक-सस्कृति के पास मूलत कोई लिखित भाषा नही थी।

१९७९ मे मैंने इस बुर्यात सग्रहालय की भाति ही एक और खुला सग्रहालय देखा था, लेकिन इस बार जार्जियाई जनतत्र मे। यहाँ नृजातिविज्ञानी जार्जिया के विगत की रक्षा करने मे लगे हुए हैं। बाद मे १९८१ मे मैंने लिथुआनिया मे एक बहुत शानदार और विस्तृत सग्रहालय देखा। वहा लिथुआनिया के इतिहास की लबी अवधि ने देश के विभिन्न नृजातीय क्षेत्रो से लाये भवनो मे स्पष्ट रूप ग्रहण किया था। मुझे बताया गया कि एक को छोड़कर बाकी सभी गृह विगत के वास्तविक अवशेष थे। नव-पाषाण युग के आश्रय को पुनर्निर्मित किया गया था।

सपूर्ण सग्रहालय, जो अब भी बढ रहा है, इस छोटे से जनतत्र मे ग्रामीण लोक-परपराओं के प्रति बड़ी चिता को प्रदर्शित करता है। नगरीय विगत को सुरक्षित रखने के प्रति यह चिता विल्नियुस मे भी प्रकट थी, एक ऐसा नगर, जिसमे १५ वी सदी के अनेक भवन हैं। जो भवन दूसरे विश्व-युद्ध के दौरान नष्ट हो गये थे, उन्हें पुनर्निर्मित कर दिया गया है और वास्तुकलात्मक रूप से बड़े ध्यानपूर्वक सुव्यवस्थित किया गया है, भले ही उनके आतरिक भागों को बिजली, सफ़ाई-सुविधाओं और केद्रीय तापन-व्यवस्था से आधुनिक बना दिया गया हो।

मातृ-भाषाओं की भी रक्षा और समर्थन किया जाता है। जिन लोगों से मैं लिथुआनिया मे मिला, वे इस बात पर गौरवान्वित महसूस करते थे कि कुछ भाषाशास्त्रियो का ख्याल है कि उनकी भाषा किसी भी दूसरी वर्तमान भाषा से मूल इडो-यूरोपीय भाषा के अधिक निकट है। स्कूलो मे लिथुआनियाई भाषा मे शिक्षा दी जाती है। इस भाषा

मे प्रकाशन-गृह असख्य पुस्तके प्रकाशित करते है। सोवियत सघ
जगहो की भांति काव्य अनेक प्रकाशको की सूचियो का बडा
और काव्य-पुस्तको के सस्करण बडे हैं। रूसी मे भी किताबे प्र
होती है और बहुत से लिथुआनियाई रूसी वैसे ही बोलते हैं जै
अपनी मातृ-भाषा। वे दूसरी भाषाए भी जानते हैं। एक कवि ने
की पुस्तक की ८,००० प्रतियां लियुआनिया मे अनूदित उनकी कवित
ही बिक गयी। उन्होंने मुझे बताया कि उनका विषय लिथुआनिया
मुख्यत निरक्षर कृपक समाज से साक्षर औद्योगीकृत समाजवादी सम
मे सक्रमण है, जिसने विशाल सफलताए प्राप्त की हैं।

मुझे बताया गया कि १९८१ मे इसका औद्योगिक उत्पाद
१९४० मे इसके सोवियत सघ का अग बनने के पहले के मुकाबले
:१ गुना अधिक था।

विल्नियूस के पूर्व तीन काल-क्षेत्रो के पार अल्मा-अता स्थित है
स सुदर नगर के चारो ओर ज़ाइलिस्की अला-ताउ पर्वत की तलहटी
फलोद्यान फैले हुए हैं। अल्मा-अता समतल कृषि मैदान और सीधी
पाच्छादित चोटियो के सगम-स्थल पर विकसित हुआ है। अल्मा-अता
की सडको के किनारे वृक्ष लगाये गये हैं। कोई भी ऐसा व्यापारिक
ब्लाक नही है, जहा हरियाली न हो। दुकानो और कार्यालयो के सामने
लगे वृक्ष गर्मी के दिनो मे छाया देते हैं और बारहो महीने यह
प्रतीत होता है कि यहा विशुद्धत उत्पादनकारी काम की अपेक्षा जीवन
के लिए बडी परिस्थितिया हैं।

इस नगर मे एकात होने की भावना का आनद लेने के लिए
कोई पार्क ढूढने की आवश्यकता नही है, बल्कि यहा तो अनेकानेक
पार्क कायम हैं और एक दिन मैं सीधे सडक से आने के बजाय एक पार्क
से होकर अपने होटल आया। अपने रास्ते मे मैंने समाचारपत्र-पट्टो
की एक पूरी पंक्ति देखी। हर पट्ट पर एक अखबार का नवीनतम अक
लगा हुआ था और हर अखबार अलग-अलग भाषाओ मे थे। यहा
कज़ाख, रूसी, जर्मन, उईगुर, कोरियाई भाषाओ मे अख़बार पढ़े जा
सकते थे।

कज़ाख भाषा मे अख़बार देखना आश्चर्यजनक नही था, क्योंकि
यह भाषा जनतत्र की भाषा है। मैंने कज़ाख भाषा मे अनेकानेक बाल-

पुस्तके देखी। रूसी अखबार देखना भी आद
कजाखस्तान मे बहुत से रूसी रहते हैं। कुछ तो य
मे ही आ गये थे। छठे दशक में और भी आये,
परती भूमि जोती गयी और अनाज उत्पादन क्षेत्र
और उईगुर? यह जातीय अल्पसख्यक लोगों क
जैसा कि मुझे बताया गया, अपने थियेटर अ
अखबार हैं।

लेकिन जर्मन अखबार? लेकिन कोरियाई
कजाखस्तान मे रहनेवाले जर्मनो और कोरियाइयों
है।

मैं कल्पना करता हू कि कजाखस्तान मे रह
और कोरियाइयो मे से बहुत से लोग या तो क
के अदर अतर्जातीय भाषा रूसी बोलते हैं, लेकि
तक सीमित नही हैं। उनके अपने अखबार हैं।
द्वैभाषिकता सोवियत सघ मे आम बात है। १९८० में
गैर-रूसी नागरिको ने रूसी को अपनी द्वितीय भाष
मे दस साल पहले की तुलना मे २ करोड की वृ

लोगो की मातृ-भाषाओं के प्रति यह चिता
भी और बुर्यातिया मे भी देखी। वहा उलान-उदे में
मे एक दिन बिताया, जहा शिक्षा बुर्यात भाषा
मगोलियाई के बिल्कुल निकट है। एक बडे नग
स्कूल क्यो बनाया गया है? क्या विद्यार्थी दिन
बाद रात को घर नही लौट सकते? ये बच्चे
दूर-दराज के क्षेत्रो मे आते थे, जहा आबादी इत
स्कूल खोले ही नही जा सकते। यहा नगर मे
प्रारम्भिक शिक्षा को आसान बनाया जाता है, जि
फिर उन्हे रूसी पढ़ायी जाती है, जिसका वे आगे
है। लेकिन न इस स्कूल मे, न ही कही और बुर
त्यागने के लिए विवश किया जाता है। उल्टे, इस
जारशाही काल मे उनका अपना कभी कोई लि
उलान-उदे मे एक विशाल नाट्य-मडली है, जो
र ही नाटक पेश करती है। कुछ नाटक अन्य

किये गये हैं, लेकिन अनेक बुर्यात नाटककारो की कृतिय

साइबेरिया मे कही, उन क्षेत्रो मे जिनकी यात्रा अभी मै की है, बहुत सी छोटी जातिया–देशी समूह–है, जिनकी मस्कृतिया हैं।

कनाडी लेखक फार्ले मोवैट अपनी पुस्तक 'साइबेरियाई की शुरुआत लेनिनग्राद मे बारह पुस्तको के लेखक यूरी रीतखे साथ अपनी मुलाकात से करते हैं। इन पुस्तको मे से कुछ उन्होने अ मातृ-भाषा चुकची मे और कुछ रूसी मे लिखी थी, जिस पर अधि उन्होने लेनिनग्राद विश्वविद्यालय मे प्राप्त किया था। उन्होने सदी के चौथे दशक मे साइबेरिया के उत्तर-पूर्वी छोर पर चुकोत्का बने पहले स्कूल मे पढाई शुरू की थी। समाजवाद के आगमन के पह चुकची लोगो का न अपना कोई स्कूल, न ही अपनी लिखित भाषा थ अपनी ओर से रीतखेउ साइबेरिया के गैर-रूसी नृजातीय समूहो औ मस्कृति से सोवियत सघ के सबध की कहानी बनाते है।

साइबेरिया की जातीय सस्कृतियो को सुरक्षित रखने और विस्तारित करने की चिता एक दिन मास्को मे गोर्की मार्ग पर मेरी समझ मे आ गयी। वहा एक बडी गैलरी मे चुकची कलाकार किरील सोवेको के जो आर्कटिक महासागर के तट पर पैदा हुए थे, दिलचस्प चित्रो की एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी। एक कलाकार के रूप मे उनकी उपलब्धि मे दिलचस्पी न केवल सोवियत सुदूर पूर्व मे ली जाती है जहा वह अब रहते है, बल्कि उनकी कृतियो और उनमे अभिव्यक्त जीवन से मास्कोवासियों को परिचित कराने हेतु सुअवसर प्रदान करने के लिए काफी प्रयास भी किया गया है।

अध्याय ८

# सांस्कृतिक उपलब्धियों के उपयोग का अधिकार

"सोवियत संघ के नागरिकों को सांस्कृतिक उपलब्धियों के उपयोग का अधिकार है।"*

सोवियत संविधान में ऐसा कहा गया है, परंतु वास्तविक जीवन में कामकाज कैसे चल रहा है?

जो चीज मैंने पायी, वह यह है, सोवियत संघ में संग्रहालय देखने जानेवाले लोगों की सालाना संख्या देश की कुल आबादी की दो-तिहाई है। और थियेटर तथा कंसर्ट देखने जानेवाले लोगों की सालाना संख्या बहुत बड़ी – देश की कुल आबादी से भी अधिक – है।

औसतन एक सोवियत नागरिक साल में १८ बार सिनेमा जाता है और यह स्पष्टत पश्चिम जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस या अमरीका में लोग जितनी बार सिनेमा जाते हैं, उससे बहुत अधिक है।

१९८१ में सोवियत संघ में प्रति १०० परिवारों में से ९० के घरों में टेलीविजन थे। आज तो यह संख्या और भी बड़ी हो सकती है। टेलीविजन-शो, जिनमें व्यापारिक विज्ञापनों से बाधा नहीं डाली जाती, प्रकटत सिनेमा या थियेटर जानेवाले लोगों की संख्या कम नहीं करते, हालांकि टेलीविजन-शो नि शुल्क हैं।

---

*अनुच्छेद ४६ सोवियत संघ के नागरिकों को सांस्कृतिक उपलब्धियों के उपयोग का अधिकार है।

यह अधिकार राजकीय तथा अन्य सार्वजनिक संग्रहालयों में संरक्षित देश तथा विश्व की सांस्कृतिक निधि तक व्यापक पहुंच द्वारा, देश में शैक्षिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के विकास और उचित वितरण द्वारा, टेलीविजन और रेडियो प्रसारण तथा पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के विकास द्वारा और नि शुल्क पुस्तकालय सेवा के विस्तार तथा अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के विस्तार द्वारा सुनिश्चित ।

सग्रहालयो, सिनेमाओ और थियेटरो का प्रवेश-शुल्क बहुत कम है। सिनेमा का सर्वाधिक महगा टिकट ७० कोपेक (लगभग एक डालर) का है। मास्को मे सुप्रसिद्ध बोल्शोई थियेटर के सर्वोत्तम टिकट की कीमत केवल साढे तीन रूबल (पाच डालर से कम) है। ये कीमते इतनी कम इस वजह से सभव है कि सरकार कला-सस्थाओ को आर्थिक अनुदान प्रदान करती है और सास्कृतिक उपलब्धियो के उपयोग के अधिकार की सवैधानिक गारटी को सुनिश्चित बनाती है।

पुस्तक-प्रकाशन को भी आर्थिक अनुदान प्रदान किया जाता है। व पश्चिमी यूरोप के देशो और अमरीका मे पुस्तको के मुकाबले मे बहुत सस्ती होती है और वे पढी जाती हैं। सोवियत नागरिक दुनिया म सर्वाधिक उत्साही पाठक है।

बढती पठनशीलता को प्रोत्साहित करने के एक कदम के रूप मे १९३४ मे अखिल सघीय पुस्तक-प्रेमी स्वयसेवक समाज की स्थापना की गयी। लोकप्रिय रूप से "पुस्तक-मित्र" नाम से पुकारे जानेवाले इस सगठन की १,३०,००० से अधिक शाखाओ मे ६०,००,००० से अधिक सदस्य है। ये शाखाए सभी प्रकार की पुस्तको पर बहसे आयोजित करती है उन्हे सबोधित करने के लिए लेखको को निमत्रित करती है विभिन्न कदम सगठित करती है।

वे विशेष समाज पुस्तकालय रखती है जो सार्वजनिक, स्कूल और ट्रेड-यूनियन पुस्तकालयो के जाल को पुस्तको की सप्लाई करती है। मिसाल के लिए मास्को मे ऐसा एक पुस्तकालय विभिन्न लोगो द्वारा अपने सग्रहो मे से दी गयी दुर्लभ, पुरानी पुस्तको को सुरक्षित रखता है। राष्ट्रीय स्तर पर इस समाज ने कृषि-क्षेत्रो मे १३० नयी पुस्तक-दुकाने और पुस्तक-स्टाल खोले और विभिन्न प्रादेशिक स्थानो म वह चलती-फिरती पुस्तक-प्रदर्शनिया आयोजित करता है। यह समाज साइबेरिया के दूर-दराज के इलाको मे नयी रेलवे लाइन – बाम – का निर्माण करनेवाले अग्रगामी कर्मियो को पुस्तके भेजने के लिए राष्ट्रीय अभियान चला रहा है। पुस्तक-प्रेमी अपनी बैठकों मे अक्सर मिलते है और नयी परियोजनाओं की योजना बनाते है।

बेशक, नियमित सार्वजनिक पुस्तकालय पुस्तकों के वितरण की

विल्नियुस। नये रिहायशी हिस्से का दृश्य सामने – ऐतिहासिक स्मारक गेदिमिनस टावर

अल्मा-अता। नगर का नया चौक

[illegible]

17वीं सदी की शैली की

विल्नियुस के मुख्य मार्ग – गोर्की मार्ग – का विस्तृत जीर्णोद्धार किया जा रहा है

बुर्यात स्वायत्त जनतंत्र। बाइकाल प्रदेश के लोगों की संस्कृति और जीवन-पद्धति संग्रहालय
एक समृद्ध किसान का घर



बुर्यात का नमदे का यु

लिथुआनिया की शौकिया कलाकार
एल्जबेटे डाउगिर्विचने और
भूर्ज की छाल से बनी उसकी मूर्ति

लिथुआनिया की शौकिया कलाकार
एल्जबेते वाउशिविचूते और
भूर्ज की शाख से बनी उनकी मूर्ति

दुनिया मे अपनी तरह के एकमात्र मास्को बाल संगीत थियेटर का दृश्य

लिथुआनिया मे सोवियत सत्ता की पुनर्स्थापना की ४० वी वर्षगांठ को समर्पित जनतंत्र-व्यापी गीत उत्सव मे लगभग ३६ हजार सोवियत कलाकारों – गायकों, नर्तकों, संगीतकारों – ने भाग लिया

दुनिया में अपनी तरह के एकमात्र मास्को बाल संगीत थियेटर का दृश्य

लिथुआनिया में सोवियत सत्ता की पुनर्स्थापना की ४० वीं वर्षगांठ को समर्पित जनतंत्र-व्यापी गीत उत्सव में लगभग ३५ हज़ार लीथियन कलाकारों – गायकों, नर्तकों, संगीतकारों – ने भाग लिया
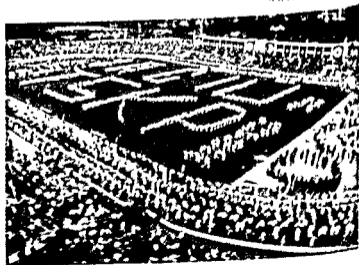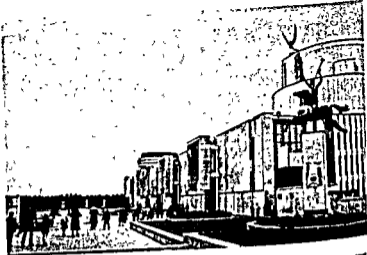
जनतंत्र की प्रख्यात कलाकर्मी गुलफाइरूस इस्माइलोवा (बायें)
प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर टेलीविजन को इंटरव्यू दे रही हैं

समक्ष विशाल, भव्य मूर्तियां देखी और फिर अप्रत्याशित रूप से मुझे र मूर्तिकार से मिलने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसने कज़ाखों जीवन में अपना यह योगदान किया था – कज़ाख जनतंत्र के जन लाकार नाकिमज़ान नाउर्ज़बायेव। वह अधेड़ उम्र के थे, बेतरतीबी ग में कपड़े पहने हुए थे, वैसे ही जैसे कि अन्य देशों में कलाकार हना करते हैं। वह जनता के बीच से आनेवाले एक व्यक्ति से बहुत मिलते-जुलते थे।

"एक मूर्तिकार अपनी जीविका कैसे कमाता है?" बातचीत के दौरान मैंने पूछा।

"मैं कमीशन पाता हूं," उन्होंने उत्तर दिया।

"आजकल आप किस चीज़ पर काम कर रहे हैं?"

"मैं ऐसे लोगों की मूर्तियों की एक पूरी की पूरी वीथि बना रहा हूं जो एक बड़े राजकीय फ़ार्म के कर्मियों में दिलचस्पी उत्पन्न करते हैं। आपको आकर इसे देखना चाहिए।"

मैं इन मूर्तियों को अपनी अगली यात्रा में देखना चाहूंगा। और मैं उन किसानों से मिलना चाहूंगा जो एक मूर्तिकार को जीविका प्रदान कर रहे हैं।

सामाजिक जीवन की आलोचना में कला कैसे भाग लेती है, इस प्रश्न की जांच में दिलचस्पी रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को अध्ययनार्थ प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। उदाहरणार्थ, 'फ़ितील' ('पलीता') नामक धारावाहिक व्यंग्यात्मक रील सिने-पर्दे पर दिखायी जाती है। वह फ़ैक्टरी से जारी ख़राब मालों या एक ऐसे पुल को प्रदर्शित कर सकती है, जिसके निर्माण पर श्रम और धन की बड़ी मात्रा ख़र्च करने के बाद उसे अधूरा ही छोड़ दिया गया हो। अथवा वह एक ऐसे गांव के सामुदायिक केंद्र के बारे में फ़िल्म दिखा सकती है, जिसका रख-रखाव ख़राब ढंग से किया जाता हो। कैमरे द्वारा इन ख़ामियों को निर्धारित करने के बाद और इसके पहले कि ज़िम्मेदार अधिकारियों को मालूम हो कि क्या हो रहा है, कैमरा-दल दोषी लोगों का पता लगाता है, संबद्ध अधिकारियों के साथ भेंटवार्ता होती है और जनता नौकरशाही के सब्ज़बाग़ तथा वास्तविक परिस्थितियों के बीच अंतर को बहुत साफ़-साफ़ देख लेती है।

व्यंग्यात्मक आलोचना का क्षेत्र बड़ा है। विदूषक इसमें अपना

मे प्रकाशित की जाती है।

विभिन्न जनतत्रो के लेखक सघो के पास अपने भवन हैं, जहा सगठन के प्रबध-कर्मियो के कार्यालय हैं और जहा सघ के सदस्य विचार-विनिमय के लिए जमा हो सकते हैं। अक्सर ये भवन क्राति-पूर्व काल की हवेलिया होते हैं, जो कभी बडे अभिजातो के अधिकार मे थी। मास्को मे सोवियत लेखक सघ का मुख्यालय एक भव्य पुराने भवन मे है, जो पहले मेसनो के अधिकार मे था।

पेशेवर लेखक अन्य देशो के लेखको की भाति अपनी व्यक्तिगत आय बिक्री पुस्तको की रायल्टी से प्राप्त करते हैं। पुस्तको के बडे सस्करणो और पाठको की पढने की तीव्र लालसा की वजह से लेखको की आय अक्सर काफी बडी होती है।

व्यापक सोवियत साहित्य का मूल्याकन देने का प्रयास करना मेरी ओर से हास्यास्पद होगा। मैं केवल इतना ही कह सकता हू कि जो कुछ उपन्यास मैंने अभी हाल ही मे पढे हैं, वे विशाल, तीव्र परिवर्तन की प्रक्रिया मे एक समाज की सूक्ष्म, व्यापक तस्वीरें पेश करते हैं। लेओनीद लेओनोव के उपन्यास 'रूसी वन' मे, जिसका अग्रेज़ी अनुवाद मैंने मास्को मे खरीदा, अथवा मुख्तार औएज़ोव के उपन्यास 'अबाई' मे, जिसे कज़ाख भाषा से अग्रेज़ी मे अनूदित किया गया है, कुछ भी घटिया नही है। मुझे योनस अवीज़ुस का उपन्यास 'खोया हुआ घर' भी काफी दिलचस्प लगा, जिसे लिथुआनियाई से अग्रेज़ी मे अनूदित किया गया है। अनुवादो के सबध मे यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि सोवियत सघ मे एक भाषा से दूसरी भाषाओ मे अनुवाद बडी मात्रा मे किये जाते हैं।

"समाजवादी यथार्थवाद" मे सामान्यीकृत सौदर्यबोधी विधि के बारे मे उन कलाकारो और लेखको ने काफी चर्चा की, जिनसे मैं १९६३ मे मिला था। कला-गैलरियो मे समाजवादी यथार्थवाद की शैली मे चित्रित चित्रो की प्रधानता थी। अनेक अमरीकियो के लिए इस कला के अधिकाश चित्रो की शैली 'सटरडे इवनिग पोस्ट' पत्रिका के चित्रो की शैली से मिलती-जुलती थी, एक ऐसी पत्रिका जो मज़दूर वर्ग के हितो को व्यक्त करनेवाले प्रगतिशील हलको और कार्यकर्ताओ से काफी घनिष्ठ रूप से जुडी हुई थी। पश्चिमी कला आलोचक आम तौर से समाजवादी यथार्थवाद और उसके द्वारा अभिव्यक्त किये जानेवाले समाजवादी

विश्व-दृष्टिकोण से घृणा करते थे। दूसरी ओर, सोवियत कला हमारे पश्चिमी कला में निश्चित प्रवृत्तियों के प्रति अनुकूल रुख नहीं रखते थे। १९८१ में कलाकारों और लेखकों के साथ बातचीत के दौरान मैंने "समाजवादी यथार्थवाद" शब्द एक बार भी नहीं सुने। इसके अलावा, कला-गैलरियों में मैंने जो समकालीन कला देखी, वह दो दशक पहले की तुलना में शैली और विषय की दृष्टि से काफी विविध प्रतीत होती थी। जोर देने में यह परिवर्तन, अधिक विविधता के लिए, अधिक नवाचार के लिए प्रयास सुस्पष्ट था।*

कलाकारों और लेखकों ने, जिनसे मैं सर्वत्र मिला, दावा किया कि वे अपने को किसी भी शैली में व्यक्त कर सकते हैं और किसी भी विषय पर चित्र बना सकते हैं। वे जानते थे कि मैं या किसी भी अमरीकी ने संभवत: सुना होगा कि सोवियत लेखकों या मूर्तिकारों या उपन्यासकारों की कृतियों का सेंसर किया जाता है या उन्हें निर्धारित किस्मों की कृतियां रचने के लिए विवश किया जाता है। अगर ऐसी विवशता के तथ्य थे, तो अश्लील मानी जानेवाली कृतियों से बचने के आम प्रयास को छोड़कर मैंने उनका कोई प्रमाण नहीं देखा। उल्टे, मैंने अनेक सृजनशील लोगों से बातचीत की, जो अपने सुअवसरों और अपनी स्वतंत्रताओं में आनंद लेते प्रतीत होते थे।

रचना करने और विशाल दर्शकों तथा श्रोताओं तक पहुंचने की उनकी स्वतंत्रता बहुत यथार्थ है, वैसे ही जैसे कि अपने सहनागरिकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी प्रतिभाओं के प्रयोग द्वारा जीविका कमाने की स्वतंत्रता है। और ये आवश्यकताएं साधारण नहीं हैं। सोवियत नागरिक अपने कलाकारों और लेखकों की कृतियों की तुलना वर्तमान और विगत की विश्व कला की सर्वोत्तम कृतियों से कर सकते हैं। अत: सोवियत कला-कर्मियों को आगे, और आगे जाना है।

---

*समाजवादी यथार्थवाद सोवियत साहित्य और कलाओं में मुख्य विधि बना हुआ है। पूर्ववर्ती कालों के साहित्य और कलाओं की मानवीय परंपराओं का निर्वाह करते हुए यह सोवियत साहित्य और कलाओं को नयी समाजवादी अंतर्वस्तु से ओतप्रोत करता है। इसे सदा के लिए दी हुई किसी चीज के रूप में नहीं, बल्कि ऐतिहासिक रूप से परिवर्तनशील और साथ ही आंतरिक रूप से एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में माना जाना चाहिए। – सं०

अमरीकियों ने सोवियत संघ में धर्मों के प्रति बर्ताव के बारे में बहुत-कुछ सुन रखा है और आम तौर से उन्होंने जो कुछ सुना है उसे एक शब्द में व्यक्त किया जा सकता है : दमन।

क्या सोवियत संघ में धर्मों को अस्तित्वमान होने के अधिकार से वंचित किया जाता है? क्या राज्य, जिसमे चर्च को पृथक् कर दिया गया है, धर्मों को सामान्य ढंग से काम करने की अनुमति प्रदान करता है?

सोवियत नियोजन की भांति, जो ऊपर से भी और नीचे से भी (और कभी-कभी बीच से भी) शुरू होता है, इस प्रश्न के संबंध में किसी यात्री की जांच लगभग कहीं से शुरू हो सकती है, जैसा कि यह मेरे साथ १९६३ में हुआ। उस समय मैं कुछ चर्चों, मस्जिदों और एक सिनागॉग को देखने गया था और पाया कि ये धार्मिक संस्थाएं उससे कहीं अधिक स्वतन्त्रतापूर्वक काम करती हैं, जिसे 'न्यूयार्क टाइम्स' अपने पाठकों को विश्वास दिलाना चाहेगा। उदाहरणार्थ, मैंने देखा कि सोवियत संघ में छपी यहूदी प्रार्थना-पुस्तकों का बाहुल्य है। कीयेव में एक सिनागॉग में मैं बिना किसी पूर्व-सूचना के पहुंच गया और देखा कि लोग उन्हीं प्रार्थना-पुस्तकों का उपयोग कर रहे हैं, जिनकी अनुपस्थिति का विश्वास मुझे 'न्यूयार्क टाइम्स' दिलाना चाहेगा।

कीयेव के यहूदियों के पास सिनागॉग तथा पूजा की चीजें थी, जिनकी व्यवस्था उनके लिए राज्य ने की थी और उन्हें अपनी इच्छानुसार पूजा करने का अधिकार प्राप्त था।

ऐसी ही स्वतन्त्रता* मैंने मास्को में १९८१ में देखी।

---

*अनुच्छेद ५२ : सोवियत संघ के नागरिकों को अन्तःकरण की स्वतन्त्रता, किसी भी धर्म को मानने अथवा न मानने, धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न करने अथवा नास्तिकतापूर्ण प्रचार करने का अधिकार प्रत्याभूत है। धर्म के आधार पर शत्रुता अथवा घृणा भड़काना वर्जित है।

सोवियत संघ में चर्च राज्य से और स्कूल चर्च से पृथक है।

वहा मैं मैत्रय त्योहार पर अर्खीपोव मार्ग-स्थित मास्को केंद्रीय सिनागॉग गया। मौसम बहुत अच्छा था और भवन के सामने मैंने वही भीड़ देखी जिसे मैंने अमरीका में सिनागॉगों के सामने देखी थी: आपस में बातचीत करते लोगों की भीड़। सिनागॉग के अंदर लोग भी हुए थे, जिनमें से अधिकांश वयोवृद्ध, कुछ अधेड़, कुछ नौजवान थे और अपने शरीर पर प्रार्थना की चादर डाले हुए थे। हमारी प्रतीक्षा की जा रही थी और हमें मुख्य गलियारे से कमरे के बिल्कुल सामने एक उच्च मंच पर ले जाया गया। चल रही प्रार्थना के पूरा होने की प्रतीक्षा करने के दौरान मैंने अपने दुभाषिये से सामने की दीवार पर रूसी और इब्रानी भाषाओं में लिखे आलेख को पढ़ने को कहा। उसका पाठ इस प्रकार था "हमारे दिव्य पिता! सारी दुनिया में शांति के दुर्ग, सोवियत संघ की सरकार को आशीर्वाद दो।"

प्रार्थना जारी रही और मैंने उपासकों पर नज़र दौड़ायी जो आगंतुकों की उपस्थिति पर तनिक भी ध्यान न देते प्रतीत होते थे।

अंत में एक नौजवान आदमी हमें कमरे के सामने अपना धार्मिक अनुष्ठान पूरा करने में लगे लोगों के बीच से होकर एक कार्यालय में ले गया। वहा मुझे भक्त-मंडली के प्रधान बोरीस ग्राम्म से परिचित कराया गया जो इतने नौजवान थे कि आश्चर्य होता था कि वह सैकड़ों अधेड़ और वयोवृद्ध ईश्वरवादियों को प्रवचन देते होंगे। शीघ्र ही मुझे मालूम हुआ कि वह रब्बी बनने की शिक्षा प्राप्त कर चुके थे और अतः बड़े सम्मान के पात्र थे।

शिष्टाचार के आदान-प्रदान के बाद मैंने एक सवाल पूछा जो मेरे मन पर छाया हुआ था।

"क्या आप धार्मिक स्वतंत्रता रखते हैं? क्या इस संबंध में ईश्वरवादी यहूदियों या अनीश्वरवादी यहूदियों पर कोई प्रतिबंध लगाया हुआ है?"

"हमारा धर्म हमारा अपना मामला है," ग्राम्म ने दृढ़तापूर्वक कहा। "कोई भी हस्तक्षेप नहीं करता। धार्मिक मामलों की परिषद हमारे अधिकारों की रक्षा करती है।"

"क्या रोजगार या पदोन्नति में यहूदियों के साथ भेदभाव किया जाता है?" मैंने जानना चाहा।

सहायता मिलेगी। यदि हम मिल-जुलकर बात करेंगे, तो
होगा।"

ग्राम्म ने एक ऐसे विषय की चर्चा चला दी थी, जि
कुछ और कहना चाहते थे।

"प्रश्नों के हल के लिए हमें जनरलों की आवश्य
है। हमें सभी हथियारों को दफना देना चाहिए। इन हथि
दफना करके बेरोजगार अमरीकी लोगों को काम दिया जान
यहूदी साहित्य के हर पृष्ठ पर शब्द 'शांति' लिखा हुआ है

और लगभग मानो किसी संकेत पर एक प्रौढ़ आदमी,
बातचीत को सुन रहा था, दरवाजे से आनेवाले आह्वान के
खड़ा हो गया। शीघ्र ही मैंने उसकी आवाज लाउडस्पीकर
वह एक गायक था और मुझे बताया गया कि वह शांति के लि
के उन्ही शब्दों को गा रहा था, जिन्हें मैंने सिनागॉग की
देखा था।

ग्राम्म के साथ बातचीत मे जियनवाद-विरोध और यहू
के बीच स्पष्ट अंतर प्रकट हो गया था। यह अंतर संपूर्ण सोवि
मे परिलक्षित है और इसे सोवियत संघ के बाहर काफी गल
समझा जाता है। सोवियत दृष्टिकोण से जियनवाद साम्राज्यव
नस्लवादी विचारधारा के तत्वों के साथ एक राजनीतिक आंद
जियनवाद १९वीं सदी मे आरंभ हुआ और, सोवियत वि
अनुसार, यहूदी बुर्जुआ वर्ग के एक बहुत धनी हिस्से ने इसे
जोर-शोर से रुपया-पैसा मुहैया किया है, जिसने इस्राइल क
यहूदी आबादी का नियंत्रण और शोषण करने के लिए सुविधाजन
के रूप मे इस्राइली राज्य की स्थापना का प्रयास किया। इस
ही जियनवाद वहां तक नस्लवादी है जहां तक वह उस भूमि पर
नये राज्य के संचालन मे अरबों को कोई वास्तविक भूमिका
का उद्देश्य रखता है, जिस पर सदियों से अरब आबादी का
रहा है।

इस तरह, सोवियत दृष्टिकोण में यहूदी-विरोध, जो कानू
है, और जियनवाद-विरोध के बीच स्पष्ट अंतर है जो स
के वफादार समर्थक के [illegible]
सरकार जियनवाद-विरोध

चाहिए। दर्ज कराने का अर्थ यह है कि एक धार्मिक सगठन कानूनों का पालन करने का दायित्व ग्रहण करता है और अपनी बारी मे कानून धार्मिक पूजा की स्वतत्रता की गारटी करते हैं। जूबोव्स्की बुल्वार पर एक पुराने भवन मे परिषद के कार्यालय मे मैं सगठन के उपाध्यक्ष प्योत्र मकार्त्सेव से मिला।

परिषद, उन्होने स्पष्ट किया, इस चीज को सुनिश्चित करने के लिए कायम है कि सविधान के अनुच्छेद ५२ मे धार्मिक स्वतत्रता की गारटी वास्तविकता बने।

"धार्मिक सगठन जीवत अवयव हैं और इस रूप मे उनकी अपनी मागे होती हैं," उन्होने कहा और इन मागो और इस बात के उदाहरण दिये कि कैसे परिषद उन्हें पूरा करने मे सहायता करती है। "हाल ही मे अल्मा-अता और फ्रूजे मे बपतिस्मा-सप्रदाय ने हमें बताया कि उसे नये प्रार्थना-गृहो की आवश्यकता है। हमने उसे आवश्यक जमीन दिलाने और आवश्यक निर्माण-सामग्रिया खरीदने मे सहायता की। इसी तरह, हमने ताशकद मे नयी मस्जिद बनाने मे सहायता की।"

"एक ऐसे धार्मिक समूह के लिए धार्मिक अनुष्ठान करने के अधिकार का कोई अर्थ नही है, जिसके पास अपना कोई भवन न हो," मकार्त्सेव ने कहा। "हम इस बात की पूरी व्यवस्था करते हैं कि प्रत्येक धार्मिक समूह के पास अपना भवन हो, लेकिन उसे इसके निर्माण और रख-रखाव का खर्च उठाना पडता है।"

मैंने पूछा कि क्या परिषद उन तरीको के अलावा भी धार्मिक लोगों के अधिकारों की रक्षा करती है, जिन्हे उन्होंने गिनाया है।

"परिषद, उदाहरणार्थ, स्थानीय सोवियतों की अवैध कार्रवाइयों से धार्मिक समूहों की रक्षा करती है। एक बार एक आर्थोडाक्स वर्ग अपने भवन की मरम्मत करना चाहता था। स्थानीय सोवियत वर्ग के प्रति द्वेषपूर्ण रुख रखती थी और उसने उसे इसके लिए आवश्यक निर्माण-सामग्रिया देने की व्यवस्था करने से इन्कार कर दिया। लेकिन हमने हस्तक्षेप किया और निर्माण सामग्रिया तुरन्त दे दी गयी।"

"क्या आपको किसी धार्मिक समूह के साथ सबधो मे किन्हीं कठिनाइयों का सामना करना पडता है? उदाहरणार्थ, अमरीका मे हम सुनते है कि बप्तिस्मा सप्रदाय के साथ अनुचित व्यवहार किया जाता है।"

"लगभग १० प्रतिशत बपतिस्मा-सम्प्रदायी कट्टर हैं," मकार्त्सेव ने कहा। "वे सोवियत कानून को मानने से इन्कार करते हैं, जिसके अनुसार शिक्षा या तो सार्वजनिक स्कूलों या घर पर दी जानी चाहिए। इस कानून द्वारा बच्चों के लिए धार्मिक स्कूलों की स्थापना वर्जित है। यह कानून सभी धार्मिक समूहों से दर्ज कराने की भी अपेक्षा रखता है। कुछ बपतिस्मा-समूह दर्ज कराने से इन्कार करते हैं। लेकिन अधिकाश बपतिस्मा-समूहों के साथ हमारे सामान्य सबध है।"

अमरीका मे एक प्रमुख बपतिस्मा-सम्प्रदायी से मैंने इन व्यक्तियो मे से एक – विन्स – के बारे मे सुना, जिसने सोवियत सघ मे दर्ज कराने से इन्कार किया। विन्स ने सोवियत सघ को छोड दिया और जब वह अमरीका पहुचा, तो वह पुन अपनी "मनपसद मातृभूमि" मे भी उतना ही अक्खड निकला जितना कि वह सोवियत सघ मे रहा था। बपतिस्मा-सम्प्रदायी उसे उन जीवन और सगठनात्मक व्यवस्थाओ को स्वीकार कराने मे समर्थ नही हो सके, जिन्हे उन्होंने उसके लिए तैयार किया था।

मैंने मकार्त्सेव से एक और सवाल पूछा "विभिन्न धर्मों के कितने लोग है?"

"हम नही जानते। हमारे जनगणना करनेवाले लोगो से उनके धर्म के बारे मे नही पूछ सकते। हमारे पास ईश्वरवादियो की सख्या का कोई रेकार्ड नही है। हम केवल इतना ही जानते है कि कितने धार्मिक सगठनो ने हमारे यहा अपना नाम दर्ज कराया है। उनकी सख्या २०,००० है। और हम यह भी जानते हैं कि इन २०,००० धार्मिक समूहो मे ३०,००० पादरी, मौलवी, लामा, आदि सबद्ध है।"

मैंने रूसी आर्थोडॉक्स चर्च के अनुयायियो की सख्या मालूम करने का प्रयास किया। और अनत यह मालूम हो गयी।

"शायद एक करोड" मकार्त्सेव ने अनिश्चित रूप मे कहा।

बाद मे मैंने इस प्रश्न का उत्तर देने की वही अनिच्छा पायी, जब मैंने रूसी आर्थोडॉक्स चर्च के मास्को पैट्रियार्क के मुख्यालय जागोर्स्क मे मठाधीश सेओर्गी से बातचीत की। लेकिन अत मे इस भव्य भद्रपुरुष ने द्रवित होकर अपना अनुमान बता ही दिया – ४ करोड। एक प्रौढ सोवियत नागरिक का, जो पेशे मे मार्क्सवादविद और अनीश्वरवादी है, अपना ही अनुमान था – ६ करोड। सही सख्या चाहे जो कुछ भी हो, आर्थोडॉक्स चर्च के अनुयायियो मे सोवियत या रूसी आबादी का

भी अधिकाश शामिल नही है।* तो भी, अनेक चर्च खुले हुए हैं और प्रतीत होता है कि उनमे बडी संख्या में लोग जाते हैं तथा उनका अच्छा रख-रखाव होता है। हालाकि इसे राज्य से कोई आर्थिक अनुदान (किराये को छोडकर) नही मिलता, फिर भी आर्थोडॉक्स चर्च को स्पष्टत: धन का अभाव नही है। जागोर्स्क में सर्वत्र बूढी औरतें ईस्टर की तैयारी मे पीतल और चादी और सोने के आभूषणों को चमका रही थी। दान-पात्र सिक्को से भरे हुए थे। मुझे चीनी मिट्टी के उम्दा बर्तनो मे सुदर भोजन परसा गया और भोजनालय के काटे, छुरियां चादी की बनी प्रतीत होती थी। जागोर्स्क में मैंने जिस सेमिनरी (धार्मिक स्कूल) और अकादमी को देखा, उसके रख-रखाव पर बडा पैसा खर्च होता है। इन दो सस्थाओं मे ७० अध्यापक और ८०० विद्यार्थी हैं। सोवियत सघ मे अन्य स्थानो मे दो और आर्थोडॉक्स सेमिनरी और एक अकादमी हैं, जिनमे २,००० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

"अपनी इच्छानुसार पूजा करने मे पादरी कितने स्वतंत्र है," मैंने मठाधीश गेओर्गी से पूछा। मैंने यह भी जानना चाहा कि क्या चर्च और राज्य के बीच मतभेद हैं। गेओर्गी ने स्पष्ट किया कि राज्य धर्म मे हस्तक्षेप नही करता। "हमारा विश्वास अपना निजी मामला है," उन्होंने कहा। फिर उन्होंने मुझे निस्संकोच बताया कि दो मुद्दों पर चर्च और सरकार सहमत नही है—गर्भपात और सन्तति-निग्रह। राज्य दोनो की अनुमति देता है। चर्च के विचार मे, यह अनुमति नही दी जानी चाहिए। मुझे इस चीज के बारे में कोई अन्दाजा नही है कि इन मामलो पर चर्च कितना व्यापक आंदोलन चलाता है, लेकिन स्पष्टत: गेओर्गी को इस पर सरकार के साथ असहमति के सबध मे बताने मे कोई संकोच नही हुआ, ऐसी असहमति जिसका एक उल्लेख करेगा।

मठाधीश ने चाहा कि मैं समझूं कि चर्च-कार्यकर्ताओं और ईसाई धर्मियों को नागरिकों के रूप में पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं। "चर्च ने १९३६ के संविधान के प्रारूप पर बहस मे भाग लिया," उन्होंने कहा। "हमने कुछ संशोधन पेश किये थे और उनमें से कुछ स्वीकार कर लिये गये

---

* [illegible]

सोवियत पूर्व के मुस्लिम पत्रिका के कई अंक थे, जो अरबी फारसी में भी प्रकाशित की जाती है।

निसानवायेव, जो चालीसेक साल के प्रतीत होते थे, अल्मा-में पैदा हुए थे, जहां उन्होंने अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी की। बाद उन्होंने उज्बेकिस्तान में बुखारा में मदरसे में प्रवेश किया। पास करने के बाद वह सीरिया विश्वविद्यालय में पढ़ने गये, उन्होंने कानून और मुस्लिम धर्मशास्त्र की डिग्री प्राप्त की। अल्मा-वापस लौटने पर उन्होंने अगले सात साल तक अपने को मस्जिद कार्यों में पूरे तौर पर लगाया। वर्तमान समय में वह कज़ाख वि अकादमी से डिग्री के लिए अपना शोध-प्रबंध पूरा कर रहे हैं। शोध-प्रबंध का विषय है मध्यकालीन मुस्लिम इतिहास।

"क्या मुस्लिम अपने धर्म का आचरण वैसे ही स्वतंत्रतापूर्वक कर सकते हैं जैसा कि वे चाहते हैं?" मैंने पूछा।

"बेशक," उन्होंने कहा। "हमें कानून द्वारा संरक्षण प्राप्त है।" उन्होंने उन प्रकाशनों की ओर इशारा किया, जिन्हें उन्होंने मुझे दिया था और अहमेतोव की भांति ही अहाते के पार बनायी जानेवाली नयी मस्जिद का उल्लेख किया। उन्होंने हाल ही में सोवियत संघ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मुस्लिम सम्मेलन और विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में सोवियत मुस्लिमों की भागीदारी के बारे में भी बताया।

"क्या मुल्लों के प्रशिक्षण के लिए आप के पास सुविधाएं हैं?" मैंने पूछा, हालांकि मुझे उत्तर पहले ही मालूम था। दो साल पहले मैं ताशकंद में एक मदरसा देखने गया था। वहां मैंने मदरसे के युवा मौलवियों को वॉलीबाल और टेबुल-टेनिस खेलते हुए दिलचस्पी से देखा।

"ताशकंद में हमारे पास एक मदरसा है," निसानवायेव ने कहा, "और दूसरा बुखारा में। हर साल हम कज़ाखस्तान से तीन से पांच लोगों को इन मदरसों में भेजते हैं। वहां वे दस साल पढ़ते हैं।"

मैंने जाना कि अन्य धार्मिक समूहों के पास भी सेमिनरी हैं। रोमन कैथोलिकों के पास पादरियों के प्रशिक्षण के लिए लाटविया और एस्तोनिया में एक-एक स्कूल है। जार्जिया में जार्जियाई आर्थोडॉक्स के पास एक सेमिनरी है। बौद्ध अपने भावी लामाओं को प्रशिक्षण मंगोलिया भेजते हैं। लूथरवादियों के पास रीगा और तालिन

भिक्षु, सोवियत संघ में बौद्ध धर्म के सभी अनुयायियों के प्रधान ८१ वर्षीय ज० द० गोम्बोयेव से मिलना था, जो, जैसा कि मुझे [illegible] मालूम हुआ, "मुर्गी के वर्ष" में पैदा हुए थे। मठ में एक ज्योतिषी था, जो नक्षत्रों और लोगों के कल्पित संबंधों के बारे में सभी मामलों पर उन्हें सलाह देता है। जब मैं पहुंचा, तो गोम्बोयेव झपकी ले रहे थे। उनका सफाचट सिर हिल रहा था। लेकिन वह शीघ्र ही अपनी केसरिया पोशाक में टहलते हुए चैतन्य हो गये। संयोगवश उन्होंने कहा कि वह अभी-अभी जापान में एक अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक शांति सम्मेलन से लौटे हैं। कुछ समय पहले उन्होंने इंगलैंड में एक ऐसे ही सम्मेलन में भाग लिया था और शीघ्र ही एक और ऐसे सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत जानेवाले थे। दूसरे शब्दों में, वह सोवियत शांति समिति के कार्यकलाप में गहराई से हिस्सा ले रहे थे, जिसके वह एक राष्ट्रीय नेता हैं।

मैंने अन्य विश्वासों के सोवियत अनुयायियों के साथ सोवियत बौद्धों के संबंध के बारे में दिलचस्पी प्रकट की।

"सभी विश्वासों के प्रधान साल में एक बार एक साथ मिलते हैं।"

"इन अन्तर्धर्मीय सम्मेलनों में आप क्या करते हैं?"

"सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम इस प्रश्न पर विचार-विमर्श करते हैं कि हमारे देश और अन्य देशों के धार्मिक नेता हथियारों की होड़ को रोकने और मैत्री तथा शांति को बढ़ाने के लिए क्या कर सकते हैं।

इस वयोवृद्ध बौद्ध को ११ साल की उम्र में ही बौद्ध-भिक्षु ब[illegible] और जिसने दूसरे विश्व-युद्ध के दौरान सोवियत सेना में सेवा की और युद्ध के विनाश पर बार-बार सोचा। उन्हें अपने व्यक्तिगत अनुभव से मालूम था कि युद्ध क्या होता है और उन्होंने कहा कि वह उसके विरुद्ध संघर्ष में सभी सोवियत लोगों के साथ एकजुट हैं।

"बौद्ध शिक्षा के अनुसार," वयोवृद्ध भिक्षु ने जोर दिया, "मानव जीवन सबसे मूल्यवान चीज है और सोवियत संघ युद्ध में जीवन [illegible] के विरुद्ध है।

मैंने इन परिवर्तनों के बारे में पूछा जो सोवियत समाज में [illegible] हुए हैं।

"इन [illegible] परिवर्तनों को देखकर बहुत खुश हूँ," [illegible]

भिक्षु, सोवियत संघ में बौद्ध धर्म के सभी अनुयायियों के प्रधान द
वर्षीय ज० द० गोम्बोयेव से मिलना था, जो, जैसा कि मुझे तत्का
मालूम हुआ, "मुर्गी के वर्ष" में पैदा हुए थे। मठ में एक ज्योति
था, जो नक्षत्रों और लोगों के कल्पित संबंधों के बारे में सभी मामलों
उन्हें सलाह देता है। जब मैं पहुंचा, तो गोम्बोयेव झपकी ले रहे थे
उनका सफाचट सिर हिल रहा था। लेकिन वह शीघ्र ही अपनी केसरि
पोशाक में टहलते हुए चैतन्य हो गये। संयोगवश उन्होंने कहा कि
अभी-अभी जापान में एक अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक शांति सम्मेलन से लौ
हैं। कुछ समय पहले उन्होंने इंगलैंड में एक ऐसे ही सम्मेलन में भा
लिया था और शीघ्र ही एक और ऐसे सम्मेलन में भाग लेने के लि.
भारत जानेवाले थे। दूसरे शब्दों में, वह सोवियत शांति समिति के
कार्यकलाप में गहराई से हिस्सा ले रहे थे, जिसके वह एक राष्ट्रीय
नेता हैं।

मैंने अन्य विश्वासों के सोवियत अनुयायियों के साथ सोवियत
बौद्धों के संबंध के बारे में दिलचस्पी प्रकट की।

"सभी विश्वासों के प्रधान साल में एक बार एक साथ मिलते हैं।"

"इन अंतर्धर्मीय सम्मेलनों में आप क्या करते हैं?"

"सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम इस प्रश्न पर विचार-विमर्श
करते हैं कि हमारे देश और अन्य देशों के धार्मिक नेता हथियारों की
होड को रोकने और मैत्री तथा शांति को बढाने के लिए क्या कर सकते
हैं।"

इस वयोवृद्ध बौद्ध जो ११ साल की उम्र से ही बौद्ध-भिक्षु था
और जिसने दूसरे विश्व-युद्ध के दौरान सोवियत सेना में सेवा की
थी, युद्ध के विषय पर बार-बार लौटा। उन्हें अपने व्यक्तिगत अनुभव
से मालूम था कि युद्ध क्या होता है और उन्होंने कहा कि वह उसके
विरुद्ध संघर्ष में सभी सोवियत लोगों के साथ एकजुट हैं।

"बौद्ध-शिक्षा के अनुसार," वयोवृद्ध भिक्षु ने जोर दिया, "मानव
जीवन सबसे मूल्यवान चीज है और सोवियत संघ युद्ध में जीवन खोने
के विरुद्ध है।"

मैंने उन परिवर्तनों के बारे में पूछा जो सोवियत सत्ता के आगमन
के बाद हुए हैं।

"मैं उन सकारात्मक परिवर्तनों को देखकर बहुत खुश हूं, जो

बपतिस्मा चर्च के अनुयायियों को बपतिस्मा दिये जाने का दृश्य

मस्जिद में

आर्थोडॉक्स चर्च में विवाह समारोह

सोवियत संघ के बौद्ध केन्द्र उलान-उदे के निकट इवोल्गिन्स्की लामा-विहार

सोवियत संघ में मुख्य बौद्ध लामा बन्दिदो हम्बो-लामा जाम्बल-दोर्जी गम्बोयेव

बुर्यात लोगों और आम तौर से संपूर्ण सोवियत लोगों के जीवन में हुए हैं।"

पहला परिवर्तन, जिसके बारे में उन्होंने कहा, शिक्षा है जो (उन्होंने चाहा कि मैं इसे समझ लू) निःशुल्क है। फिर दुभाषिये ने कहा: "परम पावन का विचार है कि शिक्षा जो यहां हरेक को मिलती है, और बुद्धिमानी, जो इससे आती है, मानव समृद्धि तथा खुशहाली का आधार है।"

छोटे कद के इस हंसमुख वृद्ध ने हुए परिवर्तनों को गिनाया। क्रांति के पहले जीवन स्तर नीचा था। लोगों के पास लगभग कोई अधिकार नहीं थे।

"अब हम बुर्यात बिरादराना जातियों के बीच समान जाति हैं," उन्होंने कहा। "यह उस विनाश के बिल्कुल विपरीत है जिससे क्रांति के पहले बुर्यातों को खतरा हो गया था। बीमारी, कठिन काम, गरीबी से लोग मर रहे थे। अब बुर्यात आबादी बढ़ रही है। बूढ़ों को अब पेंशन मिलती है," उन्होंने कहा। "हम भिक्षुओं को भी ६० साल की आयु में पेंशन मिलती है।"

हमारी औपचारिक भेंटवार्ता समाप्त हो जाने के बाद मेरे मेजबान ने मुझे अपने साथ शामिल होने के लिए भोजन करने की एक बड़ी मेज पर आमंत्रित किया। जहां कहीं भी मैं गया, मुझे खूब आतिथ्य-सत्कार मिला लेकिन इस मठ में खाने की मेज पर जो चीजें परसी गयीं वे हर जगह से बढ़कर थीं। आरंभ में मिठाइयां परसी गयीं, जिन्हें मैं यह सोच करके बहुत खा गया कि अभी तो सुबह का ही वक्त है और क्या मिलेगा। फिर मांस के बड़े-बड़े कोफ्तों से भरा एक कटोरा आया। प्रत्येक कोफ्ते के सिर पर गुलाब जैसी बनावट थी। मैंने मेजबान की ओर नजर दौड़ायी और देखा कि वह उनमें से एक कोफ्ता हाथ में लेकर खा रहे हैं। मैंने उनके उदाहरण का अनुकरण किया लेकिन नतीजा बहुत बुरा निकला। कोफ्ते से गरम शोरबे की पिचकारी-सी छूट निकली और वह मुझ पर, मेज पर, मेजबान पर फैल गया। सांसारिक मामलों में कुशल और नम्र परम पावन ने दुभाषिये के जरिये स्पष्ट किया कि पहले मुझे कोफ्ते के सिरे पर गुलाब जैसे उठे कुलम्ब से जरा शोरबा चूस जाना चाहिए था। भोजन का शेष भाग और विशिष्ट व्यंजनों से भरपूर था, मुझे ठीक-ठीक याद नहीं, लेकिन

यह तो याद ही है कि यह और भी अधिक मिठाइयों के साथ समाप्त हुआ जिनसे मैंने भोजन की शुरुआत की थी। मैं तो केवल यही सोच सका कि मुझे अभी तक बड़े सरकारी फार्म पर जाना था। अगर निरा-हारी भिक्षु इस तरह की दावत दे सकते हैं, तो आतिथ्य-प्रेमी किसान क्या करेंगे?

धार्मिक नेताओं से विचारों के अपने अन्वेषण को पूरा करने के लिए मुझे लूथर के अनुयायियों और बपतिस्मा-सम्प्रदाय के अनुयायियों और पुराने आर्थोडॉक्सवादियों से बातचीत के लिए जाना चाहिए था। लेकिन मेरे पास सीमित समय था। मुझे यह तथ्य प्रमाणित हुआ प्रतीत हुआ कि सोवियत संघ में अनेकानेक धार्मिक संगठनों का अस्तित्व है और उनके सदस्य अपनी इच्छानुसार पूजा करने के लिए स्वतंत्र हैं।

अध्याय १०

# आलोचना और प्रबंध करने तथा सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेने का अधिकार

समाचारपत्र 'प्राव्दा' के संपादकीय कार्यालय के प्रवेश-कक्ष
आते हुए मैंने याद किया कि कैसे मैं ४० साल से अधिक समय प
'न्यूयार्क टाइम्स' के कार्यालय में गया था। मैंने तब फासिस्ट-विरो
सांस्कृतिक संगठन 'अमरीकी लेखक संघ' का प्रतिनिधित्व किया
जिसका मैं सचिव था। मेरे साथ सुप्रसिद्ध पत्रकार एल्ला वि
था।

हमारा उद्देश्य पाठकों के पत्रों से संबंधित संपादक से बात
करना और उनमें से एक ऐसे पत्र को अखबार में छापने के लिए सम
झाने का प्रयास करना था, जिसके प्रकाशन में वह विलंब क
थे। पत्र पर बहुत से सुप्रसिद्ध अमरीकी लेखकों ने उस फासिस्ट-स
मर्थक का विरोध करते हुए हस्ताक्षर किये थे, जिसे 'न्यूयार्क टा
स्पेन में गृह-युद्ध के बारे में अपने पृष्ठों पर पेश कर रहा था
संपादक के साथ संवाद के बारे में जो कुछ याद रह गया
उस दफ्तर का निरुत्साह, उदासीनतापूर्ण वातावरण है जिसमें
[illegible] हुई थी। मुझे यह सोचकर ताज्जुब हुआ कि वह [illegible]
रहा है जो खास तौर से समाचारपत्रों के प्रकाशन से जुड़ा है
[illegible] और मुझे याद है। एल्ला विन्टर और मैं उस
पत्र को प्रकाशित कराने में असफल रहे थे।

'न्यूयार्क टाइम्स' के कार्यालय में इस असफलता के बारे
सोचता जब मैं सबसे बड़े सोवियत दैनिक के संपादकमंडल के ए
[illegible]* के कमरे में प्रवेश किया। उनका कार्यालय
[illegible] के बहुत से अन्य कार्यालयों की भांति ही था। उसमें एक

---

*[illegible]

और उसके सामने एक और मेज़ थी, जिसके इर्द-गिर्द गोष्ठी की जा सकती थी। मुझे ठीक-ठीक याद नहीं कि कमरे की दीवार पर लेनिन की तस्वीर थी या नहीं, लेकिन आम तौर से ऐसे कार्यालयों में उनकी एक तस्वीर टंगी होती है। और इस कमरे की एक और विशेषता थी, जो जिन कार्यालयों में मैं गया, उनमें हमेशा ही मौजूद नहीं थी। उसमें इस भवन में काम करनेवाले अन्य लोगों से तीव्र संपर्क कायम करने के लिए इंटरकोम लगा हुआ था।

"'प्राव्दा' को अपने पाठकों से कितने पत्र मिलते हैं?" मैंने

मैने पूछा कि पत्रो मे किन विषयो पर चर्चा की जाती है।

"बहुत से पत्र ठोस स्वरूप के होते है और उनमे सुझाव दिये जाते है। जहा तक शिकायतो का सबध है, तो वे बहुत अक्सर रिहायशी समस्याओ के बारे मे होती हैं।"

लाप्तेव ने रोज़ाना औसतन १३०० पत्रो को प्रोसेस करने की विधि के बारे मे बताया। उनके अनुसार, इस प्रक्रिया मे कोई पत्र खोने की अपेक्षा अपना बटुआ खोना बेहतर है। इटरकोम पर उन्होंने सचिव को बुलाया जिसने नमूने के तौर पर पत्रो का एक पुलिदा पेश किया। जैसा कि मै देख सकता था, हरेक पत्र से एक कार्ड नत्थी किया गया था, जिसके बारे मे लाप्तेव ने बताया था।

"क्या ये सभी पत्र प्रकाशित किये जाते है?" मैने पूछा।

"केवल अत्यत महत्वपूर्ण पत्र ही प्रकाशित किये जाते है। रोज़ाना हम दो या तीन पत्र प्रकाशित करते हैं और महीने मे दो बार हम पत्रो का एक पूरा पृष्ठ और "आलोचना के बाद" नामक एक कालम प्रकाशित करते हैं जो विभिन्न शिकायतो के नतीजो के बारे मे बतलाता है।

मैने रिहायशी प्रश्नो से सबधित शिकायतो के बारे मे जानना चाहा।

'ऐसे एक पत्र मे ठेठ रूप मे इस प्रकार लिखा होता है," लाप्तेव ने कहा। "'मै अमुक-अमुक कारखाने मे दस साल से काम कर रहा हू। पाच साल पहले मैने एक नये फ्लैट का आवेदन किया था। लेकिन अभी तक मुझे फ्लैट नही मिला है।' नये सविधान की स्वीकृति ने ऐसे पत्रो की धारा तेज़ कर दी। शायद लोग याद नही रखते कि सविधान मे इस सबध मे यह भी कहा गया है कि रिहाइश निर्माण के परिमाण के अनुसार प्रदान की जानी चाहिए।" (अनुच्छेद ४४ के सबद्ध अश का मूलपाठ इस प्रकार है "...सुविधासम्पन्न आवासो के निर्माण के कार्यक्रम की पूर्ति मे सुलभ घरो के सार्वजनिक नियत्रण मे उचित वितरण द्वारा ।")

लाप्तेव ने आगे कहा, "जब चिट्ठिया आती है, तो सबसे पहले उन्हे ज़िलो के अनुसार छाटा जाता है। फिर हरेक पत्र का उत्तर दिया जाता है और एक बार ही उत्तर नहीं दिया जाता। अगर पत्र साफ़ नही है, तो हम स्पष्टीकरण मागते है। वास्तव मे 'प्राव्दा' का समूचा

कर्मीवृंद इन पत्रों पर काम करता है। स्वास्थ्य या शिक्षा जैसे विशिष्ट प्रश्न से संबंधित पत्र को इस प्रश्न से संबद्ध अखबार के विभाग को दे दिया जाता है, या उसे उपयुक्त मंत्रालय अथवा संस्थान को भी भेजा जा सकता है। 'प्राव्दा' इस सरकारी संस्था से लेखक को सीधे उत्तर देने को कहता है। इस संस्था से 'प्राव्दा' को यह बतलाने के लिए भी कहा जाता है कि उस पत्र का क्या जवाब दिया गया है। अगर लेखक दूसरा पत्र भेजता है, तो हमें ठीक-ठीक मालूम हो जाता है कि उस समस्या के संबंध में क्या किया गया है जिसके बारे में हमें पहले सूचित किया गया था। यह दूसरा पत्र हमें बता सकता है कि कुछ भी नहीं किया गया है। इसके बाद हम मंत्रालय या संस्थान से संबद्ध प्रश्न का स्पष्टीकरण करते हैं।"

"मेरा विश्वास है कि आपको मालूम है कि अमरीका में बहुत से लोग मानते हैं कि सोवियत लोग आलोचना या शिकायत करने से डरते है क्योंकि वे सोचते हैं कि उन्हे अपने काम मे या किसी और तरीके से इसका नतीजा भुगतना पड़ सकता है," मैंने कहा। "क्या आप इन और उन कदमो के बारे मे कुछ कह सकते हैं जो आलोचनात्मक पत्रों के लेखको पर किसी बुरे प्रभाव को रोकने के लिए उठाये जाते हैं?"

"अगर मै आप से कहू कि वे सभी लोग जिनके बारे मे हम शिकायते पाते हैं, फरिश्ते हैं, तो आप मेरा विश्वास नही करेंगे," लाप्तेव ने कहा। "बेशक, जब किसी की आलोचना की जाती है तो वह उसे पसद नही करता, लेकिन सर्वविदित है कि प्रत्येक नागरिक को आलोचना करने का सवैधानिक अधिकार है।* सविधान के अनुच्छेद

---

*अनुच्छेद ५८ सोवियत सघ के नागरिको को अधिकारियो, राजकीय निकायों और सार्वजनिक सगठनो की कार्रवाइयो के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने का अधिकार है। इन शिकायतो की कानून मे प्रस्थापित क्रियाविधि के अनुसार और समय-सीमा के भीतर जाच की जायेगी।

अधिकारियो की ऐसी कार्रवाइयो के विरुद्ध, जिनमे कानून का उल्लघन होता हो, जो उन्हे प्रदत्त अधिकारो का सीमोल्लघन करती हो और जो नागरिको के अधिकारों का अतिक्रमण करती हो, कानून मे विहित विधि के अनुसार अदालत मे अपील की जा सकती है।

सोवियत सघ के नागरिको को राजकीय और सार्वजनिक सगठनो की, और अपना कर्तव्य निभाने के दौरान अधिकारियो की गैर-कानूनी कार्रवाइयों से हुई हानि के लिए मुआवजा पाने का अधिकार है।

कहा गया है कि शिकायत करनेवाले व्यक्ति को तंग करने के किसी भी व्यक्ति पर मुकदमा चलाया जायेगा। यह नया अनुच्छेद है।"

लाप्तेव ने आगे अखबार में "आलोचना के बाद" नामक कालम बारे में स्पष्ट किया। यह उन कदमों के बारे में सूचना है, जो शिकायतों के बाद उठाये जाते हैं। "अगर कोई पार्टी-सदस्य शिकायत करनेवाले किसी व्यक्ति को तंग करने का दोषी पाया जाता तो इसका सामान्य परिणाम पार्टी से उसका निष्कासन अथवा प्रबंधकीय पद से उसकी बर्खास्तगी होगी। अधिक हल्की सज़ा भर्त्सना होगी। १९६८ में एक कानून अस्तित्व में है, जिसमें उस क्रियाविधि को निर्धारित किया गया है जिसका प्रत्येक संस्था को पत्रों की छानबीन करने में अनुसरण करना चाहिए। इस कानून को कई बार संशोधित किया गया है और अभी एक महीने पहले ही कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति और मंत्रिपरिषद ने पत्रों की छानबीन में आगे सुधार पर एक और प्रस्ताव जारी किया।"

मैंने पूछा कि क्या ऐसा भी होता है कि लोग सीधे 'प्राव्दा' के संपादकीय कार्यालय में आते और अपनी शिकायतें दर्ज कराते हैं। क्या लोग टेलीफोन करते हैं?

"टेलीफोन से शिकायतें बहुत लोकप्रिय नहीं हैं, लेकिन जब अखबार में कोई ग़लती होती है, तो संपादकीय कार्यालय में बहुत टेलीफोन आते हैं। लेकिन कुछ लोग भी हमारे कार्यालय में सीधे शिकायतें करने के लिए आते हैं। वास्तव में, हमारे पास उनके लिए एक विशेष स्वागत-कक्ष है और हमारे संपादकीय कार्यालय के विशेष सदस्य उनसे बातचीत करते हैं। लोग पारिवारिक समस्याओं से लेकर आम सामाजिक प्रश्नों तक विभिन्न प्रश्नों पर बात करने के लिए आते हैं। इन लोगों से मिलने और उनके वक्तव्यों की छानबीन करने में काफी समय लगता है।"

"क्या भिन्न-मतावलंबियों से भी पत्र मिलते हैं?"

"मैं नहीं कह सकता कि ऐसे बहुत से पत्र आते हैं। वास्तव ... ऐसे कुछ पत्र मिलते हैं, जिन... वे बहुत ही कम आते हैं। फिर भी ऐसे कुछ पत्र मिलते हैं, जिन... सोवियत-विरोधी ... अख्तड़पन की झलक होती है। वे वास्तव में सोवियत-विरोधी ... नहीं होते, लेकिन वे दो-टूक ढंग से लिखे होते हैं। अखबार में ...

कार्य जहा तक सैद्धांतिक स्वरूप का है, वहा तक ऐसे पत्रों से मेरा संबंध होता है।"

प्रस्ताव, आलोचनाएं, शिकायतें और पत्र भेजकर समाज के जीवन मे हिस्सा लेना व्यापकतः प्रचलित है और पत्र केवल अखबारों को ही नही, बल्कि विभिन्न सरकारी संस्थाओं को भी भेजे जाते हैं।

नागरिकों और संस्थाओं के बीच संप्रेषण के अनेकानेक साधन कायम हैं। उदाहरणार्थ, प्रत्येक दुकान मे खरीददारों के इस्तेमाल के लिए "शिकायत और सुझाव" पुस्तक रखने की अपेक्षा की जाती है। पुस्तक मे स्पष्ट रूप से छपे नियमों के अनुसार पांच दिनों के भीतर शिकायत का लिखित उत्तर दिया जाना चाहिए। मैं नही जानता कि कोई सर्वेक्षण इन "शिकायत और सुझाव" पुस्तकों के प्रभाव का मूल्यांकन करता है या नही। लेकिन यह वास्तव मे विचित्र होगा यदि शिकायतों की सार्वजनिक अभिव्यक्ति की इस विधि का कोई दोष-निवारक परिणाम न निकले। यह भी विचित्र होगा यदि आलोचना किये जानेवाले जिम्मेदार अधिकारी लताड़ को पसंद करें। मैंने कुछ नौकरशाहों द्वारा प्रतिशोध की घटनाओं के बारे में सुना, लेकिन ऐसी कार्रवाइयों के विरुद्ध कानून में रक्षात्मक कार्रवाइयों की व्यवस्था है। इसके अलावा, सार्वजनिक प्रचार और पत्र लिखने की संभावना हमेशा मौजूद है, जो रक्षा का एक रूप है।

सरकारी अवयव उन नागरिकों की रक्षा करने के लिए सीधी कार्रवाई करते है जिनके साथ अपने वरिष्ठ अधिकारियों के बारे में शिकायत करने के बाद अनुचित व्यवहार किया जाता है। कजाखस्तान की सर्वोच्च सोवियत के सदस्यों ने, जिनसे मैं मिला, एक ताजा उदाहरण दिया।

एक अध्यापिका को, जिसने अपने डाइरेक्टर की आलोचना की थी, नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया था। उसने कजाखस्तान की सर्वोच्च सोवियत में अपने जिले के प्रतिनिधि को इसके बारे में बताया। प्रतिनिधि ने इस मामले की जांच की और पाया कि अध्यापिका को अनुचित रूप से बर्खास्त किया गया था। उसने अपनी जांच के परिणामों को गणतंत्र की सर्वोच्च सोवियत को सूचित किया, जिसने अध्यापिका को अपनी नौकरी पर पुनः बहाल होने में सहायता की। बाद में डाइरेक्टर को जेल की सजा मिली। इस कारण अध्यापिका ने अपने स्कूल में

एक बुरी स्थिति को ठीक करने मे सक्रिय हिस्सा लिया था। अनुचित व्यवहार से रक्षा का यह उदाहरण उन कई उदाहरणो मे से एक था, जिनके बारे मे प्रतिनिधि ने मुझे बताया।

उनमे से कुछ लोगो ने स्पष्टत अपने मामले पर राजकीय अवयव का ध्यान सक्रियतापूर्वक खीचा। सामाजिक मामलो मे भाग लेने की यह एक विधि है। लेकिन इसके अलावा और विधिया भी है।

सविधान के अनुच्छेद ४८* के अनुसार राजकीय पेशनो के बारे मे कानून के नये प्रारूप पर राष्ट्रव्यापी बहस दो महीने चली। इस प्रश्न पर पत्रो की बाढ अखबारो, कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति और सोवियत मत्रिपरिषद मे आ गयी। सर्वोच्च सोवियत के दो सदनो के विधायी आयोगो मे ही १२ हजार पत्र आये। कुछ पत्र अलग-अलग व्यक्तियो से और कुछ सगठनो से आये। इस सब पत्रव्यवहार के परिणामस्वरूप स्वीकृत किये जाने के पहले विधि के प्रारूप मे कई सशोधन किये गये। दोनेत्स्क मे स्त्रियो का एक समूह विधि के प्रारूप मे एक सशोधन के लिए जिम्मेदार था। "हम इस बात को ध्यान मे लेने का निवेदन करती है कि स्त्री उत्पादन मे लगी एक कर्मी और सामाजिक जीवन की एक सक्रिय भागीदार ही नही है, बल्कि वह एक मा भी है, जिसे अपने बच्चो का पालन-पोषण और घरेलू कामकाज करना चाहिए। अत हमारे विचार मे अनेक बच्चोवाली माताओ के लिए पेशन पाने की ५५ की उम्र बहुत ऊची है।" इस पत्र के परिणामस्वरूप, कानून ऐसी स्त्रियो को ५० साल की उम्र मे पेशन पाने का अधिकार देता है, जिनके पाच या इससे अधिक बच्चे है और जिन्होने आठ साल की उम्र तक उनका पालन-पोषण किया है।

१६७७ मे वितरित नये सविधान के प्रारूप के राष्ट्रव्यापी विचार-विमर्श मे हिस्सा लेनेवाले वयस्को की सख्या का सारणीयन किया गया।

*अनुच्छेद ४८ सोवियत सघ के नागरिको को राजकीय और सार्वजनिक मामलो के प्रबन्ध मे तथा अखिल सघीय और स्थानीय महत्व के कानूनो और निर्णयो पर विचार-विमर्श और उनके अगीकरण मे भाग लेने का अधिकार है।

यह अधिकार जन प्रतिनिधियो की सोवियतो और अन्य निर्वाच्य राजकीय निकायो को निर्वाचित करने और उनमे निर्वाचित होने, राष्ट्रव्यापी विचार विमर्श और मतदान मे भाग लेने, जन नियत्रण मे, राजकीय निकायो सार्वजनिक सगठनो और सामुदायिक निकायो के कार्य मे, तथा कार्यस्थल पर या रहने की जगह पर होनेवाली सभाओ मे भाग लेने के अवसर द्वारा सुनिश्चित है।

सविधान पर विचार-विमर्श करने और सशोधन पेश करने मे भाग लेनेवाले १४ करोड लोग वयस्क सोवियत आबादी का ८० प्रतिशत थे। और किसी भी मानदड के अनुसार, यह भागीदारी का एक उच्च स्तर था। सविधान के अलावा, बहुत से अन्य महत्वपूर्ण कानून भी इसी तरह अत मे सशोधित रूप मे पास किये जाने से पहले बहस के लिए पेश किये जाते हैं।

बेशक, मतदान केवल कानूनो को पास करने के लिए ही नही, बल्कि सोवियतो के सदस्यो के चुनाव के लिए भी होता है।* १९८० मे राष्ट्रीय चुनाव मे ९९.९ प्रतिशत मतदाताओ ने मतदान किये। उसी वर्ष मे अमरीका मे राष्ट्रीय चुनाव मे भाग लेनेवाले कुल मतदाताओ की सख्या ५२.३ प्रतिशत थी और राष्ट्रपति-पद के लिए विजयी उम्मीदवार ने डाले जानेवाले मतो का केवल लगभग २६ प्रतिशत पाया।

गैर-समाजवादी देशो मे सोवियत निर्वाचन प्रणाली को कभी-कभी "रबड की मोहर लगानेवाला" चुनाव माना जाता है। पश्चिम मे सामान्यत यह सुना जाता है कि मतदान के अतिम दिन उम्मीदवारो के बीच कोई मुकाबला नही होता। पश्चिम मे लोग सामान्यत उन विभिन्न अवस्थाओ के बारे मे नही जानते जिनसे अतिम दिन के पहले चुनाव प्रक्रिया गुजरती है। बात यह है कि सोवियतो के प्रतिनिधियो के लिए चुनाव मे उम्मीदवारो के नामाकन विभिन्न मजिलो मे किये जाते हैं। शुरू मे कम्युनिस्ट पार्टी, ट्रेड-यूनियनो, कोम्सोमोल, सहकारी समितियो और अन्य सगठनो तथा कर्मी-समूहो या सैनिक-समूहो द्वारा उम्मीदवारो के नामाकन के लिए सभाए की जाती है।** इन सभाओ

---

* अनुच्छेद ९५ सभी सोवियतो मे प्रतिनिधियो के चुनाव सार्विक, समान और प्रत्यक्ष मताधिकार के आधार पर गुप्त मतदान द्वारा होते हैं।

** अनुच्छेद १०० सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी, ट्रेड-यूनियनो और अखिल सघीय लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग के सगठनो, सहकारी तथा अन्य सार्वजनिक सगठनो, कर्मीदलो और सैनिक इकाइयो मे सैनिको की सभाओ को उम्मीदवारो का नामाकन करने का अधिकार है।

सोवियत सघ के नागरिको और सार्वजनिक सगठनो के लिए चुनाव मे खड़े होनेवाले उम्मीदवारो के राजनीतिक और व्यावसायिक गुणो तथा उनकी उपयुक्तता पर स्वतंत्र और सर्वांगपूर्ण विचार-विमर्श करने का अधिकार, और उन्हें उनके [illegible] [illegible] [illegible] ...
टेलीविजन और रेडियो द्वारा प्रचार करने का अधिकार प्रदान है।

इन गारंटियो की व्यवस्था व चुनाव का खर्च राज्य वहन करता है।

मे कोई भी नामाकन पेश कर सकता है और सगठन के सदस्य इस चीज पर बहस करते हैं कि कौन-सा उम्मीदवार अत्यधिक योग्य है। प्रत्येक सगठन के सदस्यो द्वारा उम्मीदवार के चुने जाने के बाद वे चुनाव-क्षेत्र आयोग मे भाग लेने के लिए प्रतिनिधियो को भी चुनते हैं। इस आयोग मे, जिसमे चुनाव-क्षेत्र के सभी सगठनो के प्रतिनिधि होते है, सभी उम्मीदवारो के नामो पर बहस होती है। अत मे सपूर्ण चुनाव-क्षेत्र के लिए एक उम्मीदवार पर सहमति पर पहुचा जाता है। परिणामस्वरूप भारी बहुमत प्राप्त न करनेवाले सभी उम्मीदवार अपना नाम वापस ले लेते हैं, हालाकि कानून यह माग नही करता। कानूनी तौर से मतदान के लिए मतपत्र पर उम्मीदवारो की कोई भी सख्या हो सकती है। आम तौर से केवल एक उम्मीदवार पेश किया जाता है। गुप्त मतदान द्वारा अतिम चुनाव नागरिको द्वारा उस निर्णय की अपनी तरह की एक अभिपुष्टि है, जिसे वे तथा उनके प्रतिनिधि पहले ही स्वीकार कर चुके होते हैं। लेकिन सोवियत नागरिक इस औपचारिक मतदान को एक निरर्थक कार्य नही मानते। इसके विपरीत, वे इसे इस बात की सार्वजनिक पुष्टि मानते हैं कि उन्होने सपूर्ण चुनाव-अभियान में सीधे या अपने प्रतिनिधियो के जरिये भाग लिया है और इसके परिणामों को अनुमोदित करते हैं। चुनाव मे नागरिको की भागीदारी वर्षों के साथ बढती गयी है, इसका प्रमाण निम्नलिखित आकडो मे पाया जाता है १६२६ में केवल ५० ८ प्रतिशत मतदाताओ ने चुनाव मे भाग लिया, १६२६ मे यह सख्या ६३ ५ प्रतिशत, १६३१ मे ७२ १ प्रतिशत, १६३४ मे ८५ प्रतिशत और १६३७ मे ६६ प्रतिशत हो गयी थी। १६३६ के बाद चुनावो मे ६६ प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने भाग लिया। चुनाव-अभियान का इतना गभीर महत्व है कि चुनावो मे मतदान को हरेक के लिए सभव बनाने पर बडा ध्यान दिया जाता है। चुनाव के दिन सुदूर उत्तर मे बारहसिगे पालनेवाले खानाबदोशो, मध्य एशिया मे चरवाहो और कॉकेशस में गडरियो की सुविधा के लिए विशेष मतदान-केंद्र खोले जाते हैं। आर्कटिक या अटार्कटिक मे अनुसधान स्टेशनो मे सोवियत नागरिको को मतदान की सुविधाए सुलभ होती है। ट्राम-साइबेरियाई रेलवे के यात्री और कर्मी और हवाई अड्डो पर आने-जाने के लिए रुके लोग भी यही करते हैं।

कुछ लोगो के लिए यह जानना आश्चर्यजनक होगा कि सोवियतो

के लिए निर्वाचित बहुत से प्रतिनिधि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य होते। उदाहरण के लिए, १९८२ में निर्वाचित स्थानीय सोवि के २२,८८,८८५ सदस्यो का ४२.८ प्रतिशत ही पार्टी सदस्य थे। १९८३ निर्वाचित सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के २८३ प्रति प्रतिनिधि पार्टी सदस्य नही थे।

यह दिलचस्प है कि विभिन्न नामाकन सभाओ मे स्वीकृत ह ही उम्मीदवार निर्वाचित नहीं किये जाते। उदाहरणार्थ, १९८२ चुनाव मे निर्वाचको ने ९४ ग्राम-सोवियतो के लिए आधिकारि उम्मीदवारो को अस्वीकार कर दिया। और सभी ही निर्वाचित प्रतिनि अपने पदों पर नही बने रह सकते। एक प्रतिनिधि नामाकन के सम उसे नागरिको द्वारा दिये गये समादेशों को पूरा नही कर सकता है ( उम्मीदवार को हमेशा एक समादेश – निर्वाचको द्वारा अपने प्रतिनि को उसके कार्य-काल के दौरान पूरे किये जानेवाले कार्यों के लिए दे गयी सूची – दिया जाता है। )

मैने कजाखस्तान जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत के अनेक प्रति निधियो से पूछा कि क्या वे प्रतिनिधियो के वापस बुलाये जाने के मामलो के बारे मे जानते हैं। मैने उन्हे बताया कि मैने पढ़ा है कि १९६० मे आज तक सोवियत सघ मे सभी स्तरो पर ८,००० से अधिक प्रतिनिधि वापस बुलाये गये हैं।

"मुझे ठीक-ठीक सख्या नही मालूम कि पूरे देश मे कितने प्रति निधि वापस बुलाये गये है," कजाखस्तान की सर्वोच्च सोवियत के उपाध्यक्ष अद्रेई प्लोत्निकोव ने कहा। "लेकिन यह मै जानता हू कि पिछले साल हमारे जनतत्र मे विभिन्न स्तरों पर ३२ प्रतिनिधि अपने निर्वाचको द्वारा वापस बुलाये गये। नागरिक विभिन्न कारणो से उन व्यक्तियो के कार्यों से असतुष्ट थे, जिन्हे उन्होंने निर्वाचित किया था।"

सभी निर्वाचित प्रतिनिधि विभिन्न चुनाव-क्षेत्रों के हितों को पूरा करते है। उनमें से कुछ उन सोवियतों मे काम करते है, जो गांवों, जिलों और शहरों के मामलों का प्रबध करती है। अन्य सघीय या स्वायत्त जनतत्रों या स्वायत्त क्षेत्रों के शासन मे सहायता करते है। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत की सघ सोवियत मे एक प्रतिनिधि तीन लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करता है और उसका कार्य-काल पाच वर्ष का होता है। सभी स्तरों पर सभी प्रतिनिधि बिना वेतन के काम

ते हैं। वे अपनी जीविका राजनीतिज्ञों के रूप में नहीं, बल्कि मजदूरों,
मानों अथवा बौद्धिक श्रम के विशेषज्ञों के रूप में कमाते हैं। नीचे से
कर ऊपर तक राजकीय सत्ता के सभी निकायों को चुना जाता है
र्थात् नागरिकों को सरकार के सभी निदेशन-अधिकारियों को चुनने
ा अधिकार प्राप्त है।* नागरिकों को सभी महत्वपूर्ण कानूनों पर बहस,
शोधन और अनुमोदन करने में सीधे भाग लेने का भी अधिकार प्राप्त
है।** लेकिन शायद हमें भाग लेनेवालों और आलोचकों के अधिकारों
को इस जांच में रखना और पूछना चाहिए कि "जनवाद क्या है?"

क्या हम इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि यह एक ऐसा
समाज है जिसमें जनता अपने जीवन के बारे में मौलिक निर्णय करती
है? विगत में अपने जीवन पर जनता के नियंत्रण ने विभिन्न रूप ग्रहण
किया है। और अपने को जनवादी कहनेवाले समाजों में हमेशा आबादी
का एक ऐसा हिस्सा रहा है, जो अपने भाग्य के निर्धारण में भाग नहीं
लेता रहा है। हमेशा ही आबादी का एक हिस्सा दूसरे हिस्से के निर्णयों
द्वारा शासित होता रहा है। अथेन्स में भी ऐसा था, जहां से शब्द
"जनवाद" की उत्पत्ति हुई। वहां जनवाद दासों या औरतों के लिए
नहीं था।

अमरीकी क्रान्ति के दौरान जनवाद के बारे में काफी चर्चा हुई।
"सभी लोग समान पैदा होते हैं," स्वतंत्रता की घोषणा में कहा गया।
लेकिन इन शब्दों के लेखक थॉमस जैफरसन ने स्त्रियों का उल्लेख नहीं
किया और तब तक अपने दासों को नहीं मुक्त किया जब तक उनकी
मृत्यु नहीं हो गयी और उनके लिए उनकी कोई आवश्यकता नहीं रह
गयी।

अमरीका की कांग्रेस में, २१ साल की उम्र प्राप्त धनी श्वेत

---

* अनुच्छेद ३. सोवियत राज्य जनवादी केन्द्रीयतावाद के सिद्धान्त के आधार पर गठित है और वह इसी सिद्धान्त पर कार्य करता है, यानी निम्नतम से लेकर उच्चतम तक राजकीय सत्ता के सभी निकायों का निर्वाचित होना, उनका जनता के प्रति उत्तरदायी होना और उच्चतर निकायों के निर्णयों का निम्नतर निकायों द्वारा अनिवार्य परिपालन। जनवादी केन्द्रीयतावाद एकीकृत नेतृत्व को स्थानीय पेशकदमी और सृजनात्मक कार्यकलाप के साथ और प्रत्येक कार्य के लिए प्रत्येक राजकीय निकाय और पदाधिकारी के उत्तरदायित्व के साथ समन्वित करता है।

** अनुच्छेद ५, ८, ६, ४८, ११४।

पुरुषों द्वारा संविधान स्वीकृत किये जाने के बाद प्रतिनिधियों ने अपने को अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों में संगठित किया, जिनमें से प्रत्येक पार्टी समान हित रखनेवाले नागरिकों के एक हिस्से की प्रवक्ता बनी। कांग्रेस के अंदर और बाहर वाद-विवाद को जनवाद का पर्याय माना जाने लगा। बहुमत प्राप्त करनेवाला पक्ष अपनी प्रधानता का दावा करता था। लेकिन क्या आबादी के केवल एक हिस्से को शामिल वाले दावे या यह प्रकार एकमात्र वह रूप है जिसमें जनवाद का हो सकता है?

सोवियत संघ में उन लोगों ने, जो फैक्टरियों, फ़ार्मों, स्कूलों और संस्थाओं में काम करते हैं, अपने हितों और लाभों के राज्य को रूप देने की कोशिश की। इसका अर्थ था उस समाप्ति जिसके अन्तर्गत ज़मींदार और पूँजीपति देश को चलाते थे। इसका अर्थ था उन लोगों पर मालिकों के प्रभुत्व जो काम करते थे लेकिन मालिक नहीं थे। इस परिवर्तन लिए ऐसे सामाजिक आविष्कार की आवश्यकता थी जो गारंटी करे कि मज़दूर, किसान और बुद्धिजीवी अपने कर सकें। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए तीन विकसित हुईं। ये थीं कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत सरकार।

इनमें से प्रत्येक संस्था उन लोगों का उत्पादक है न कि परजीवी। लेकिन उनमें से प्रत्येक नियंत्रित करती है। नियंत्रण के कार्यान्वयन और व्यवस्था का एक नया रूप प्रकट हुआ, जिसके हितों का प्रतिनिधित्व करनेवाले समूहों के बीच का पुराना कार्य नहीं है। अब प्राप्त किये जानेवाले बात से कोई संबंध नहीं है कि धनिकों के पास गरीबों के पास कितनी कम संपदा होनी चाहिए। संबंध अब समाज के संसाधनों के भौतिक संपदा के यथासंभव उचित ढंग से वितरण से है। किसी भी प्रदत्त की कुल मात्रा और आबादी की संख्या मापी जा ही परिवर्तनशील हैं और सामंजस्य को मनत है।

कोई भी वास्तविक रूप यह स्पष्टत नही दिखा सकता कि कैसे ये सामाजिक सामजस्य कायम किये जाते है, लेकिन इस स्पष्टीकरण की ओर इगित करनेवाला एक रूप मुझे यह प्रतीत होता है सोवियत सघ मे, जिसे एक जीवित अवयव माना जा सकता है, कम्युनिस्ट पार्टी तत्रिका-तत्र है, राज्य अस्थिपजर और जनता मास है। ये तीन तत्व मिलकर एक समुच्चय, कार्यकारी सत्व बनाते हैं, जिनमे से प्रत्येक तत्व एक-दूसरे पर निर्भर और एक-दूसरे के लिए आवश्यक होता है। और वे सभी एक आम उद्देश्य के लिए बुद्धिसगत सामजस्य मे काम करते हैं।

यह उद्देश्य मुझे जनवाद का एक नया रूप प्रतीत होता है और इस सामाजिक आविष्कार की एक अभिलाक्षणिक विशिष्टता अधिकारो की सर्वव्यापकता है। ये मात्र स्थानीय मतदान के अधिकार या कार्योत्तर अधिकार नही है। वे सपूर्ण जनता के सभी कार्यकारी और जागरिता-वस्था के घटो मे व्याप्त हैं। मजदूर फैक्टरी मे प्रवेश करते हुए अपने अधिकारो को उसके दरवाजे पर ही नही छोड देते। फैक्टरी, कार्यालय, सस्था और फार्म, जहा वे काम करते हैं, उनके अपने हैं और उन्हे उस उद्यम के प्रबध मे, जिसमे वे काम करते है, सहायता करने के अधिकार और उसमे अपने श्रम-जीवन की परिस्थितियो को निर्धारित करने के अधिकार प्राप्त है।

सोवियत नागरिक अपने व्यक्तिगत जीवन का निर्माण उस रूप मे करने के लिए भी स्वतत्र है, जिनके बारे मे सामान्यत कुछ देशो मे विश्वास नही किया जाता। उदाहरणार्थ, वे सैनिक क्षेत्रो या प्राकृतिक सुरक्षित स्थानो को छोडकर–ये प्रतिबध सभी देशो मे कायम है–सोवियत सघ के भीतर कही भी आ-जा सकते हैं। सोवियत नागरिक विदेश-यात्रा भी कर सकते है। वीजा प्रदान करने की वर्तमान नीति सामान्यत हेलसिकी के अतिम दस्तावेज के . अधिकार देशो मे है, उत्प्रवास करने के अधिकार । उत्प्रवास सबधी सोवियत नीति अधिकार सबधी अतर्राष्ट्रीय आवेदन

बारे मे कहा या नैतिकताओ आवश्यक .. "

करनेवाले लोगों के वेतन की प्रतिशत उन्हें नहीं पाते। लेकिन उनमें से बहुत से लोग निर्धारित समय बीतने के साथ बीजें इन्कार करने के कारणों की समाप्ति के बाद बीजें पाते हैं। १९५५ और १९८० के बीच १,२०,००,००० से अधिक सोवियत नागरिकों ने १३५ देशों की यात्रा की। लिथुआनिया में मैं एक ऐसे व्यक्ति से मिला जो अभी-अभी अपनी छुट्टी से वापस लौटा था, जिसे उसने मध्य और दक्षिण अमरीका के विभिन्न देशों में यात्रा करते हुए बिताया था। मैंने सोवियत पर्यटकों को पेरिस में एक बार में सन्ध्या का आनंद लेते हुए और इस्फहान में पीतल और चांदी की वस्तुओं की दुकानों में खरीददारी करते हुए देखा।

सोवियत नागरिकों को जातीयता का ख्याल किये बिना अपनी पसद के अनुसार स्त्री या पुरुष से विवाह करने का अधिकार प्राप्त है। उन सभी जनतत्रों में, जिनकी मैंने यात्रा की, मुझे बताया गया कि सोवियत सघ में अन्तर्जातीय विवाहों की सख्या लगातार बढती जा रही है। सोवियत नागरिक विदेशियों से भी शादी कर सकते हैं। हजारों सोवियत नागरिकों ने विदेशियों से शादी की है। ऐसी शादिया करनेवाले सोवियत नागरिकों के दो तिहाई ने उत्प्रवास किया है। लेकिन सोवियत सीमाओं के पार यह स्थानान्तरण एकतरफा नहीं है। दसियों हजार विदेशी बाहर से आकर सोवियत वासी बने हैं।

सोवियत नागरिकों के अधिकारों की रक्षा अन्य तरीकों के अलावा प्रोक्युरेटर के कार्यालय* द्वारा की जाती है, जो सोवियत कानून के कार्यान्वयन पर नियत्रण रखता है। यह सस्था अन्य सरकारी निकायों से स्वतत्र है और इस बात की निगरानी रखती है कि वे तथा दूसरे सगठन और लोग नागरिकों के अधिकारों का सम्मान करें।

नागरिक मिलिशिया-कर्मियों के काम में हाथ बटानेवाले "द्रुजीना" नामक स्वयसेवक दलों में शामिल होकर कानून और व्यवस्था को सुनिश्चित करने में सहायता करते हैं। पूरे मास्को में मैंने उन स्वयसेवकों, अक्सर महिला स्वयसेवकों के जोड़ों को गश्त लगाते हुए देखा, जो

---

*अनुच्छेद ५७ व्यक्ति का सम्मान और नागरिकों के अधिकारों एव स्वतत्रताओं की रक्षा सभी राजकीय निकायों, सार्वजनिक सगठनों और अधिकारियों का कर्तव्य है।

सोवियत सघ के नागरिकों को अपने सम्मान और प्रतिष्ठा, जीवन और स्वास्थ्य तथा व्यक्तिगत स्वतत्रता और सम्पत्ति के अतिक्रमण के खिलाफ न्यायालयों का सरक्षण पाने का अधिकार है।

Переписка
С ЧИТАТЕЛЯМ
ЧИТАТЕЛЬ ПРЕДЛАГАЕТ РАССКАЗЫВАЕТ
Письма в «Правду»

**«Правда» выступила: Что сделано?**

*Хотя письмо не напечатано*

**ПОСЛЕ КРИТИКИ**

ПОСЛЕ ВЫСТУПЛЕНИЯ «КОМСОМОЛЬСКОЙ ПРАВДЫ»

**ЧТО СДЕЛАНО ПОСЛЕ ПРОВЕРКИ**

*ПОЛУЧЕН ОТВЕТ...*

ПОСЛЕ ВЫСТУПЛЕНИЯ «КРАСНОЙ ЗВЕЗДЫ»

पाठकों की
शिकायतों और आलोचनाओं की
जाच के परिणाम
निम्नलिखित कालमों के अन्तर्गत
प्रकाशित किये जाते हैं
'प्राव्दा' द्वारा कार्रवाई
'क्रास्नाया ज्वेज्दा' द्वारा कार्रवाई के बाद
'कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' द्वारा कार्रवाई
के बाद
आपने लिखा – उठाये गये कदम
उत्तर प्राप्त हुए
आलोचना के बाद
हालांकि पत्र नहीं छापा गया

सोवियत पाठक
अखबारों को नियमित रूप से
पत्र भेजते हैं।
निम्नलिखित कुछ कालमों के अन्तर्गत
ये पत्र प्रकाशित किये जाते हैं
सम्पादकीय डाक
पाठक अपनी बात कहता है
पाठकों के साथ पत्र-व्यवहार
पाठक का सुझाव, बयान, परामर्श
पाठक की बातचीत जारी है
पाठक सूचित करता है
हमारी डाक से
पाठकों के विचार
पत्रों से

ЧИТАТЕЛЯМИ
ПРЕДЛАГАЕТ

बच्चे शान्ति के लिए आह्वान करनेवाले चित्रों को देख रहे हैं, जिन्हें बच्चों ने बनाया है

११ सितंबर १९८१ को मास्को की 'मिक्रोमशीना' फ़ैक्टरी में न्यूट्रोन बम के अमरीकी उत्पादन और पश्चिमी यूरोप में अमरीकी प्रक्षेपास्त्रों की तैनाती के ख़िलाफ़ प्रतिवाद सभा हुई। सभा में नीदरलैंड की संयुक्त समिति "न्यूट्रोन बम को रोको—परमाणविक शस्त्रास्त्र होड़ को रोको" के प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया

बच्चे शांति के लिए आह्वान करनेवाले चित्रों को देख रहे हैं, जिन्हें बच्चों ने बनाया है

११ सितंबर १९८१ को मास्को की 'मित्रोमशीना' फैक्टरी में न्यूट्रोन बम के अमरीकी उत्पादन और पश्चिमी यूरोप में अमरीकी प्रक्षेपास्त्रों की तैनाती के विरुद्ध प्रतिवाद सभा हुई। सभा में नीदरलैंड की संयुक्त समिति "न्यूट्रोन बम को रोको – परमाणविक शस्त्रास्त्र होड़ को रोको" के प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया

मई १९८२ में सभी महाद्वीपों के मुख्य धर्मों और धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधि मास्को में परमाणविक खतरे के खिलाफ विश्व सम्मेलन में जमा हुए। सम्मेलन के दौरा

मास्को और अखिल रूस के पैट्रियार्क पीमेन बोलते हुए

बच्चे शांति के लिए आह्वान करनेवाले चित्रों को देख रहे हैं जिन्हें बच्चों ने बनाया है

११ सितंबर १९८१ को मास्को की मिक्रोमशीना फैक्टरी में न्यूट्रोन बम के अमरीकी उत्पादन और पश्चिमी यूरोप में अमरीकी प्रक्षेपास्त्रों की तैनाती के खिलाफ प्रतिवाद सभा हुई। सभा में नीदरलैंड की संयुक्त समिति न्यूट्रोन बम को रोको – परमाण्विक शस्त्रास्त्र होड़ को रोको के प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया

भाग लेनेवालों का एक ग्रु

पहचान-चिन्ह के तौर पर अपनी बाहो पर लाल पट्टिया बाधते हैं। वे मुख्य कानून के उल्लघन को गभीर रूप मे न बढने देकर व्यवस्था बनाये रखने मे मदद करते हैं। वे काम के बाद के समय मे महीने मे कई घंटे सार्वजनिक स्थानो का नि शुल्क गश्त करते है। कभी-कभी ये पेंशनयाफ़्ता, प्रौढ़ लोग होते हैं, जिनके पास खाली समय होता है। लेकिन अक्सर वे पूर्णकालिक काम मे लगे मजदूर होते है। वे अपने साथ कोई हथियार लेकर नही चलते (वास्तव मे उस घटना को छोड़कर मिलिशिया-कर्मी अपने साथ हथियार लेकर नही चलते, जब वे ममान्य रूप से खतरनाक काम पर जाते हैं)। न ही स्वयसेवको को पुलिस के पूर्ण अधिकार होते हैं। उदाहरणार्थ वे किसी को गिरफ्तार नही कर सकते, लेकिन अगर गिरफ्तारी का आधार मौजूद प्रतीत होता है, तो वे मिलिशिया को बुला सकते है। स्वयसेवक समझा-बुझाकर और मात्र प्रकट तथा सतर्क और भातृतुल्य या बहनतुल्य सहनागरिक के रूप मे काम करते हैं। वे सोवियत नगरो की सडको को दिन और रात के किसी भी समय मे उल्लेखनीय रूप से सुरक्षित बनाने मे सक्षम है। ये परिस्थितिया उन परिस्थितियो से बड़ी भिन्न थीं जिन्हें न्यूयार्क और बोस्टन मे मास्को रवाना होने से पहले पाया था।

सामाजिक मामलो के सचालन मे नागरिको की भागीदारी अन्य रूप भी लेती है। विशेष जन-नियत्रण समितिया जीवन के सभी क्षेत्रो मे कायम हो गयी है और इन समितियो के सभी सदस्य निर्वाचित किये जाते है। उनका कार्य पार्टी और सरकार द्वारा किये गये निर्णयो को लागू करने मे सहायता करना है। इन समितियो के सदस्य विनियमनो और कानूनो के उल्लघनो पर, अनुशासन तोड़ने, काम गत हाल ..., ऐसे सभी कार्यों या अकर्मण्यताओं पर नज़र रखते है जो किसी न किसी रूप मे समाज के लिए नुकसानदेह होते है।

सामाजिक मामलो मे भाग लेने का दूसरा तरीका ट्रेड-यूनियन है, जिसके १३,००,००,००० सोवियत नागरिक सदस्य है। ट्रेड यूनियनो मे संगठित होकर उनके सदस्य अपने कार्य-स्थलो के जीवन के नियमन मे भाग लेते है। फैक्टरी कमेटियो के जरिये वे उत्पादन व उत्पादन सम्बन्धी और सुरक्षा उपायो तथा अन्य मामलो के निर्धारण मे बड़ी भूमिका अदा करते है।

लेकिन ट्रेड यूनियनो के पास कल्याण ... [illegible]

ये, जहा वे कायम होती है, बाहर बहुत से कार्य होते हैं। वे किंडरगार्टनों, स्वास्थ्य-स्थलों और विश्राम-गृहों को चलाती हैं। वे नाट्य-मंडलियों, गायकवृंदों, सैनकूद और पुस्तकालयों का संगठन करती हैं। मजदूर न केवल इन सुविधाओं का उपयोग करते हैं, बल्कि उनके प्रबंध में और ट्रेड-यूनियन के कई अन्य कार्यों में भी भाग लेते हैं।

अपने सहनागरिकों द्वारा आदर्श नेता माने जानेवाले १,७० ०० ००० नागरिक कम्युनिस्ट पार्टी में सदस्यता के जरिये सोवियत समाज के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भाग लेते हैं। पार्टी के सदस्य स्वभाव से सक्रिय होते हैं और वे अपने इर्द-गिर्द औरों को भी नागरिक कार्यों में भाग लेने के लिए कायल करते हैं। बेशक, मैं छ हफ्तों में इसके अनेकानेक उदाहरणों का विस्तृत रूप से अध्ययन नहीं कर सका, लेकिन स्पष्टत. समाज के सभी कामों में भाग लेने के लिए जनता को खींचने हेतु प्रयास किये जाते हैं। उदाहरण के लिए, मेरी यात्रा के दौरान करोड़ों लोगों ने शनिवार के दिन श्रमदान ('सुब्बोत्निक'*) किया। उस दिन उनके द्वारा अर्जित सारी आय नये स्वास्थ्य-केंद्रों के निर्माण के लिए गयी। मैंने ऐसे पार्क और बच्चों के खेलकूद के मैदान देखे जो समग्रत: श्रमदान से बनाये गये हैं। सामाजिक कार्यों में भागीदारी के रूप उतने ही विविध हैं जितने कि स्वयं जीवन के रचनात्मक पहलू।

उन जनतंत्रों में, जिनसे मैं गुजरा, कलाकार और लेखक संघों के सदस्यों के साथ मुलाकातों के दौरान मैंने सामाजिक कार्यों में भाग लेने का एक और रूप पाया, जो मेरे लिए पेशेवर दृष्टिकोण से दिलचस्प था। अल्मा-अता में भव्य नये ललित कला राजकीय संग्रहालय के निदेशक कानाफिया तेल्जानोव न केवल इस संग्रहालय का संचालन करते हैं, बल्कि एक चित्रकार भी हैं जिन्हें कई सम्मानित उपाधियां मिल चुकी हैं। वह एक कला-विद्यालय में पढ़ाते हैं और नगर सोवियत के सदस्य

---

*हर साल लेनिन के जन्म-दिवस पर अखिल संघीय कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक का आयोजन किया जाता है। १८ अप्रैल १९८१ को कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक में १२ करोड़ ४० लाख लोगों ने भाग लिया। इससे अर्जित धन को मां और बच्चे की रक्षा के हेतु सुधार तथा महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के पुराने सैनिकों और श्रम के अग्रणी कार्यकर्ताओं के डाक्टरी उपचार में लगाने का निर्णय किया गया। —सं०

है। कज़ाख़स्तान मे लेखक सघ के अध्यक्ष कवि जुबान मोल्दागालियेव को एक ज़िले के निर्वाचकों ने सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का सदस्य निर्वाचित किया है। जहा कही भी मै गया मैंने पाया कि प्रस्थापित लेखक नये लेखको को अपना कौशल सीखने मे मदद करते है।

न केवल लेखको के, बल्कि सभी पेशो के लोगो के अपने सगठन और समितिया हैं, जिनमे वे अपनी व्यक्तिगत दिलचस्पी की वजह से या सामाजिक ज़िम्मेदारी की चेतना की वजह से या दोनो ही कारणो से भाग ले सकते है और वस्तुत भाग लेते है। समितिया सर्वत्र है। मैंने बुर्यात बच्चो की एक समिति को बोर्डिंग-स्कूल के भवन मे, जहा वे रहते है, सफ़ाई और व्यवस्था के रख-रखाव की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए देखा। ये समितिया वहा बहुत सी समस्याओ को हल करती है, जहा लोग काम करते हैं, जहा वे रहते हैं और जहा मनोरजन करते हैं। मेरे एक अमरीकी दोस्त ने, जो सोवियत सघ को भली-भाति जानते हैं, कहा: "यह दुनिया मे सबसे सगठित देश है।" मेरे ख्याल मे इस टिप्पणी को दूसरे शब्दो मे ऐसे व्यक्त किया जा सकता है अपने जीवन को निदेशित करने और समृद्ध बनाने मे लोगो की भागीदारी का प्रमाण सर्वत्र मिलता है।

सोवियत नागरिक विभिन्न प्रकार के अभियानो मे भाग लेते है। उस स्तर पर सामाजिक रुझान वाले कार्यों की विविधता बडी व्यापक है, जिसे अमरीकी जनाधार स्तर कहते है। बेशक, और बहुत से अभियान सर्वोच्च राष्ट्रीय नेतृत्व के आह्वान पर भी शुरू होते है। छठे दशक के मध्य मे वह विशाल राष्ट्रीय आदोलन ऐसा ही था जिसने कज़ाख़स्तान की विस्तृत परती भूमि को सघन कृषि उत्पादन के अतर्गत लाकर देश की अनाज सप्लाई को बढ़ाने की कोशिश की।

आज उसी तरह की घटनाए देश के दूसरे भागो मे घटित हो रही है, जिनके बारे मे मै सुनता रहा, लेकिन जहा मै जा नही पाया। हज़ारो युवा लोग साइबेरिया जा रहे है, जहा वे अग्रगामियो के रूप मे ट्रास-साइबेरियाई मुख्य रेलवे-लाइन से काफ़ी उत्तर मे अत्यत महत्वपूर्ण रेलवे-लाइन का निर्माण कर रहे है। यह नयी बाइकाल-आमूर रेलवे-लाइन (बाम) विशाल खनिज और वन-ससाधनो को सुलभ करेगी और अगर उन सभी सूचनाओ पर विश्वास किया जाये जिन्हें मैंने सुना, तो बाम के कर्मी न केवल अपने जीवन को सुधारने मे, बल्कि

अपने देश के भविष्य के निर्माण में भी हिस्सा लेने के प्रति तीव्र रूप से सचेत है। बाम के युवा निर्माताओ के बहुत से प्रकाशित पत्रो मे, जिन्हे मैने पढ़ा, एक आवर्ती विषय-वस्तु ध्वनित होती है: "यह रेलवे-लाइन और यह देश हमारा और भविष्य का है।"

ऐसी भावना तब उत्पन्न होती है, जब लोग ऐसी यथार्थता की परिस्थितियो मे रहते हैं जिसके अतर्गत वे उस चीज की साथ-साथ रचना करते हैं, जिसका स्वामित्व और नियत्रण स्वयं रचनाकार करते हैं। यह एक अपने प्रकार का सरेस है जो लोगों के बीच परस्पर सबधो के जटिल ढाचे को मजबूती से पकडे रहता है। मेरी यात्रा के दौरान जॉन डोन्न का यह वाक्य मेरे दिमाग मे बार-बार आता रहा: "कोई भी आदमी द्वीप नही है  हरेक आदमी महाद्वीप का एक अंश है।"

सोवियत नागरिको द्वारा प्राप्त अधिकार नये प्रकार के जनवाद के विकास के बारे मे बहुत-कुछ कह सकते हैं। वे जनवाद की उन अवहेलनाओ का एक अभिव्यजक, भले ही परोक्ष, प्रमाण भी है जो स्तालिन की व्यक्ति-पूजा के काल मे स्थान रखती थी। आलोचना, प्रबध करने और समाज के मामलो मे भाग लेने के अधिकार पर वर्तमान जोर अपने प्रकार की एक घोषणा है कि इसकी पुनरावृत्ति कभी नही होगी।

अध्याय ११

# शांति का अधिकार

९ मई को, जिस दिन सोवियत लोग नाज़ी हमलावरों पर
विजय का त्यौहार मनाते हैं मैं अल्मा-अता में बारिश में प
लोगों की एक शांत भीड़ के बीच खड़ा था। नाज़ियों का प्र
करनेवाले वीरों के सम्मान में निर्मित विशाल स्मारक के समक्ष
गलों में लाल टाइयां बांधे युवा पायनियर शाश्वत ज्योति के पा
पर खड़े थे। उनमें दो प्रहरी – एक लड़का और लड़की – स
ढंग से धीरे-धीरे मातमी मार्च करते हुए स्मारक और शाश्वत
के सामने गये। मेरे विचार में, स्मारक के सामने सम्मान
होनेवाले प्रहरियों के रूप में चुने गये ये युवा लोग इस दिन
इकट्ठी भीड़ के विशिष्ट स्वरूप को कभी नहीं भूलेंगे। वे युद्ध क
चाहेंगे।

लोग धीरे-धीरे जमा हुए। बैसाखियों पर एक आदमी
एक पैर नहीं था – कष्टपूर्वक पत्थर के लंबे ज़ीने में उतरकर स
पास आया। उसके कोट पर बहुत से मेडल लगे हुए थे।

अपने नाती-पोतों के साथ एक दादी अपने दोस्तों के
थी। उसके पास भी बहुत से मेडल थे।

सैनिक वर्दी में एक आदमी धीरे-धीरे स्मारक के चबूत
आया, उसके मेडल कुछ इधर से उधर झूल रहे थे। न
की स्मृति में कुछ क्षण मौन खड़ा होने के बाद वह पुन
और भीड़ में खो गया।

सैनिक वर्दी में एक और आदमी प्रकट हुआ। नज़र
उसने एक ऐसे आदमी को देखा जिसे वह जानता था –
वर्दी में एक और पुराना सैनिक। दोनों ही मेडल लगाये हु
एक-दूसरे के पास आये और एक-दूसरे के गालों को चूम
सोवियत पुरुष करते हैं।

अपने देश के भविष्य के निर्माण में भी हिस्सा लेने के प्रति गहराई से सचेत है। बाम के युवा निर्माताओं के बहुत से प्रकाशित पत्रों में जिन्हें मैंने पढ़ा, एक आवर्ती विचार-वस्तु प्रकट होती है: "यह मेरी साइट और यह देश हमारा और भविष्य का है।"

ऐसी भावना तब उत्पन्न होती है, जब लोग ऐसी यथार्थतः ही परिस्थितियों में रहते हैं जिनके अन्तर्गत वे उस चीज की सचमुच रचना करते हैं जिसका स्वामित्व और नियन्त्रण स्वयं रचनाकार करते हैं। यह एक अपने प्रकार का सीमेंट है जो लोगों के बीच परस्पर सम्बंधों के जटिल ढांचे को मजबूती से पकड़े रखता है। मेरी यात्रा के दौरान जॉन डॉन्न का यह वाक्य मेरे दिमाग में बार-बार आता रहा: "कोई भी आदमी द्वीप नहीं है — हरेक आदमी महाद्वीप का एक अंश है।"

सोवियत नागरिकों द्वारा प्राप्त अधिकार नये प्रकार के जनवाद के विकास के बारे में बहुत-कुछ कह सकते हैं। वे जनवाद की उन अवहेलनाओं का एक अभिव्यंजक, भले ही परोक्ष, प्रमाण भी हैं जो स्तालिन की व्यक्ति-पूजा के काल में स्थान रखती थीं। आलोचना, प्रबंध करने और समाज के मामलों में भाग लेने के अधिकार पर वर्तमान ज़ोर अपने प्रकार की एक घोषणा है कि इसकी पुनरावृत्ति कभी नहीं होगी।

# अध्याय ११

# शांति का अधिकार

९ मई को, जिस दिन सोवियत लोग नाजी हमलावरों पर अपनी विजय का त्यौहार मनाते हैं, मैं अल्मा-अता में बारिश में पार्क में लोगों की एक शांत भीड़ के बीच खड़ा था। नाजियों का प्रतिरोध करनेवाले वीरों के सम्मान में निर्मित विशाल स्मारक के समक्ष अपने गलों में लाल टाइया बांधे युवा पायनियर शाश्वत ज्योति के पास पहरे पर खड़े थे। उनमें दो प्रहरी – एक लड़का और लड़की – समारोही ढंग से धीरे-धीरे मातमी मार्च करते हुए स्मारक और शाश्वत ज्योति के सामने गये। मेरे विचार में, स्मारक के सामने सम्मान से खड़े होनेवाले प्रहरियों के रूप में चुने गये ये युवा लोग इस दिन को और इकट्ठी भीड़ के विशिष्ट स्वरूप को कभी नहीं भूलेंगे। वे युद्ध कभी नहीं चाहेंगे।

लोग धीरे-धीरे जमा हुए। बैसाखियों पर एक आदमी – उसका एक पैर नहीं था – कष्टपूर्वक पत्थर के लंबे जीने से उतरकर स्मारक के पास आया। उसके कोट पर बहुत से मेडल लगे हुए थे।

अपने नाती-पोतों के साथ एक दादी अपने दोस्तों के बीच खड़ी थी। उसके पास भी बहुत से मेडल थे।

सैनिक वर्दी में एक आदमी धीरे-धीरे स्मारक के चबूतरे के पास आया, उसके मेडल कुछ इधर से उधर झूल रहे थे। न जाने किस की स्मृति में कुछ क्षण मौन खड़ा होने के बाद वह पुनः आगे बढ़ा और भीड़ में खो गया।

सैनिक वर्दी में एक और आदमी प्रकट हुआ। नजर दौड़ाते हुए उसने एक ऐसे आदमी को देखा जिसे वह जानता था – पूर्ण सैनिक वर्दी में एक और पुराना सैनिक। दोनों ही मेडल लगाये हुए थे। दोनों एक-दूसरे के पास आये और एक-दूसरे के गालों को चूमा जैसा कि सोवियत पुरुष करते हैं।

सभवत इन दोनों लोगों ने एक ही सैनिक टुकडी मे सेवा की थी और लवे अर्से मे एक-दूसरे को नही देखा था।

छोटे-छोटे बच्चे, या तो अकेले या अपने परिवारो के साथ, हाथो मे फूल लिये हुए स्मारक के पास आये। इन फूलों को उन्होंने नीचे पत्थर की पटिया पर चढा दिया। इसके बाद वे कुछ क्षण मौनपूर्वक खडे रहे और फिर भीड मे गुम हो गये। यहा पर कोई भाषण नही हुआ, अभी कोई सगीत नही बजा। यह सब बाद मे होगा। अभी तो यहा सैकडो लोगो का ताता बधा हुआ था और उनके लिए यह अवसर मौन और दृढनिश्चय स्मृति का एक अवसर था।

लगभग मेरी ही उम्र का एक आदमी मेरे पास आया। मेरे कपडो और मेरे पोलैरॉयड कैमरे ने मुझे कजाखो और रूसियों मे अलग कर दिया था, जो भीड़ का अधिकाश बनाते थे। यह आसानी से अनुमान किया जा सकता था कि मै एक अमरीकी हूं। अपना नाम कुआन इखारोव बताकर परिचय देने के बाद उसने अपने मेडलो को एक-एक को स्पर्श करते हुए दिखाया। प्रत्येक मेडल उस नगर के लिए किसी न किसी लड़ाई का प्रतीक था, जिसे इखारोव ने जर्मनों से मुक्त कराने मे सहायता की थी। अगर नक्शे पर इन नगरो के बीच रेखा खीची जाये, तो वह यूरोप के पूर्व से पश्चिम की ओर बढती हुई दिखायी देगी। "बर्लिन लेने के लिए" मेडल अतिम था।

"वहा मै अमरीकियो से मिला था," उन्होंने कहा। "हम दोस्त थे। हमे दोस्त बने रहना चाहिए।"

इस पुराने सैनिक ने मुझे सभी अमरीकियो के नाम एक सदेश देना चाहा। "हमे कभी लड़ना नही चाहिए।"

इस सदेश को मैने सोवियत सघ मे बार-बार सुना। सैवक सघ के कार्यालय मे, स्कूल में, फैक्टरी मे या किसी धार्मिक कार्यकर्ता से प्रत्येक बातचीत प्राय इस प्रकार समाप्त होती थी: "हम और अमरीकी लोग दोस्त हो सकते हैं। हमे दोस्त होना चाहिए।"

सोवियत सघ की अपनी तीनों ही यात्राओ के दौरान मैने युयुत्सु शब्द एक बार भी नही सुना। १९८१ मे मार्स्को मे लाल चौक मे मई दिवस की परेड मे मैने लोगो को शांति का आह्वान करनेवाले नारों की तख्तियां लेकर चलते हुए देखा। उनमें से एक भी नारे की व्याख्या इस ढग से नही की जा सकती कि वे लोगों को युद्ध के लिए मनोवैज्ञानिक

ढग से तैयार करते है। जिन अनेकानेक सडको और रास्तो से होकर मै गया, उन पर इश्तहार टगे हुए थे और ये इश्तहार हल्के पेयो या स्नान-पोशाको या तबाकू के नही थे। उनमे से आधे से अधिक शाति की रक्षा के महत्व पर जोर देते थे।

प्रचार के अनेक प्रकारो से २७ करोड लोगो को शाति की कामना करने के लिए प्रेरित किया जाता है। और उनमे से कोई भी युद्ध नही चाहता। अधेड़ उम्र के बहुत से लोग दूसरे विश्व-युद्ध मे अपने रिश्तेदारो को खो चुके हैं और इन क्षतियो को याद करते हैं। बेशक, वे अपने और प्रिय जनो को नही खोना चाहते। युद्ध का प्रत्यक्ष ज्ञान न रखनेवाले युवा लोगो को स्कूलो और पायनियर सगठनो मे ऐसे पढाया जाता है जैसे कि अपने अनुभव से इस चीज के बारे मे पढाया जा सकता है कि युद्ध क्या है।

अगर इस बात के लिए किसी गारटी की आवश्यकता है कि सोवियत सघ युद्ध नही शुरू करेगा, तो यह गारटी सोवियत लोगो के बीच पायी जा सकती है जो आधुनिक युद्ध की वास्तविकताओ के बारे मे जितना जानते हैं, उतना और कोई नही। जर्मनो ने दो करोड सोवियत लोगो की हत्या कर दी थी, घरो, अस्पतालो, स्कूलो के बड़े विनाश और अर्थव्यवस्था की बर्बादी की तो बात ही छोडे।

सोवियत लोग युद्ध को जानते है और वे उसमे घृणा करते है। यह घृणा सविधान के अनुच्छेद २८* मे व्यक्त होती है।

मुझे यह जानकर आश्चर्य होगा कि पहले ही विदित कुछ सविधानो के सिवाय दुनिया मे अन्य देशो के सविधान अतर्राष्ट्रीय शाति के लिए

---

*अनुच्छेद २८ सोवियत सघ अविचल रूप से शान्ति की लेनिनवादी नीति का पालन करता है और राष्ट्रो की सुरक्षा एव व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का समर्थन करता है।

सोवियत सघ की विदेश नीति सोवियत सघ मे कम्युनिज्म के निर्माण के लिए अनुकूल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिया सुनिश्चित करने, सोवियत सघ के राजकीय हितो की हिफाजत करने, विश्व समाजवाद की स्थितिया सुदृढ बनाने, राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक प्रगति के लिए जनगण के सघर्ष का समर्थन करने, आक्रामक युद्धो को रोकने, सार्विक और पूर्ण निरस्त्रीकरण करवाने और विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओ वाले राज्यो के शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्त को अविचल रूप से कार्यान्वित करने की ओर लक्षित है।

सोवियत सघ मे युद्ध का प्रचार वर्जित है।

प्रयास को सरकार का कर्तव्य बनाते हैं। मुझे यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि उनमे से चाहे कुछ ही युद्ध के लिए प्रचार फैलाने को अपराध मानते हो। चूकि सोवियत सघ के सविधान मे ऐसी व्यवस्थाए है, मै ऐसे किसी तर्क के बारे मे सोच भी नही सकता, चाहे वह कितना ही बेशर्म क्यो न हो, जो इन व्यवस्थाओ को विकृत करके इस बात के प्रमाण के रूप मे पेश करे कि सोवियत संघ इन सभी कानूनी व्यवस्थाओ के बावजूद वास्तव मे आक्रामक युद्ध की ओर आगे बढ रहा है।

प्रत्येक सोवियत बच्चे को स्कूल मे बताया जाता है कि नवबर १९१७ मे नयी सोवियत सरकार की पहली कार्रवाई लेनिन की "शाति की घोषणा" जारी करना थी। यह ठीक-ठीक कैसे हुआ, इसका वर्णन जॉन रीड ने अपनी पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' मे किया है, जो उस समय वहा मौजूद थे

"... और बाद मे लेनिन बोलने के लिए खड़े हुए। मिनटो तक तालियो की गडगडाहट होती रही, लेकिन वह जाहिरा उससे बेखबर लोगो के खामोश हो जाने का इन्तजार करते हुए खड़े रहे–अपने सामने रीडिंग-स्टैड को पकडे, वह अपनी छोटी छोटी, मिचमिचाती आखो से भीड को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देख रहे थे। जब तालिया बद हुई, उन्होने निहायत सादगी से बस इतना ही कहा, "अब हम समाजवादी व्यवस्था का निर्माण शुरू करेगे।" और फिर जनसमुद्र का वही प्रचण्ड गर्जन।

"पहला काम है शान्ति सम्पन्न करने के लिए अमली कार्रवाई करना ... हम सोवियत शर्तों के आधार पर सभी युद्धरत देशो की जनता से शाति का प्रस्ताव करेंगे। ये शर्तें हैं बगैर सयोजनो के, बगैर हरजानो के और जातियो के आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ शान्ति।"*

लेनिन द्वारा प्रस्तावित शाति से एक ऐसा समाज विकसित हुआ, जिसे सोवियत लोग अपने लिए बडा लाभकारी मानते हैं। हर बच्चा ...न का अध्ययन करता है, जिसमे उन नीतियो की घोषणा की ...। है, जिनका सरकार को शाति के लिए प्रयास हेतु अनुसरण करना

* प्रगति प्रकाशन, १९८३, पृ० १६२-६३।

चाहिए।* शांति-रक्षा की आवश्यकता के प्रति चेतना का विकास करना उस आयु मे ही शुरू हो जाता है, जबकि आदमी के व्यक्तित्व का निर्माण होता है, और यह चीज पार करनेवाली एक बडी कठिन बाधा होगी अगर सरकार संविधान के विपरीत वास्तव मे आबादी को अकारण युद्ध मे भेजने की योजना बनाये।

सोवियत लोगो के लिए युद्ध अपने ही प्रकार का खेल "सच्चा मर्द" और टेलीविजन प्रदर्शन नही है। उनके लिए यह नष्ट हो जाने का भय है। जैसा कि एक सोवियत पत्रकार ने कहा "हम सैन्यवाद को एक शर्मनाक और मूर्खतापूर्ण कालदोष मानते हैं।"

ऐसा विचार सोवियत सघ की यात्रा करनेवाले किसी भी व्यक्ति के मन मे उठ सकता है और यह वहा उठ सकता है जहा उसे इसकी कम से कम अपेक्षा हो। यह विचार मेरे मन में विदेशी मेहमानो के लिए एक विशेष कक्ष मे लबी प्रतीक्षा के दौरान उठा, जो प्रकटत प्रत्येक हवाई अड्डे पर होता है। ऐसे प्रतीक्षा-कक्षो मे आरामदेह कुर्सिया और मेजे लगी होती है, जिन पर सोवियत अखबार और अनेक विदेशी भाषाओ – अंग्रेजी, फ्रासीसी, जर्मन, जापानी, अरबी – मे पत्रिकाए पडी रहती हैं। इस शात स्थान मे खलबली-भरी यात्राओ के दौरान छूटी खबरो को पूरा किया जा सकता है। और ऐसे कक्षो की दीवारो के आस-पास कई विदेशी भाषाओ मे नि शुल्क पुस्तिकाओ और पैम्फलेटो से भरे रैक लगे होते हैं।

पत्रकार अलेक्सादर कावेर्जेव द्वारा लिखित एक पैम्फलेट 'क्या रूसियो पर विश्वास किया जा सकता है?' को मैंने शायद नोवोसिबीर्स्क मे देखा। अकस्मात् मेरे मन में एक शरारतपूर्ण विचार आया कि क्या यह दिलचस्प नही होगा अगर अमरीका सभी पर्यटको को 'क्या अमरी-

---

*अनुच्छेद २९ अन्य राज्यो के साथ सोवियत सघ के सम्बन्ध निम्नलिखित सिद्धान्तो के परिपालन पर आधारित है सम्प्रभु समानता, बलप्रयोग या उसकी धमकी का पारस्परिक परित्याग, सीमाओ की अनुल्लघनीयता, राज्यो की क्षेत्रीय अखडता, विवादो का शान्तिपूर्ण समाधान, आन्तरिक मामलो मे अहस्तक्षेप मानव अधिकारो और मौलिक स्वतन्त्रताओ का आदर, जनगण के समान अधिकार और अपना भाग्य स्वय निर्णय करने का अधिकार, राज्यो के बीच सहयोग, अन्तर्राष्ट्रीय कानून के सर्वमान्य सिद्धान्तो और नियमो तथा सोवियत सघ ने जिन अन्तर्राष्ट्रीय सधियो पर हस्ताक्षर किये है, उनसे उत्पन्न दायित्वो को ईमानदारी से पूरा करना।

करना बहुत कठिन है, जो उस युद्ध में आपके मित्र थे?

प्रश्न अमरीका तथा कुछ अन्य गैर-समाजवादी देशों में दावा किया जाता है कि सोवियत संघ अफगानिस्तान, क्यूबा, निकारागुआ, सल्वादोर, अंगोला, इथियोपिया, वियतनाम, कोरिया आदि देशों में अपना विस्तार कर रहा है। इस तथाकथित साम्राज्यवादी विस्तार को इस बात के प्रमाण के रूप में पेश किया जाता है कि सोवियत संघ अपना विस्तार करता रहेगा, चाहे शांति-समझौतों के अंतर्गत उसके दायित्व कुछ भी क्यों न हों। इस आरोप का आप क्या उत्तर दे सकते हैं?

उत्तर अफगानिस्तान में हमारी कार्रवाइयों का जो कारण था वह बहुत स्पष्ट था। सोवियत संघ और अफगानिस्तान ने एक संधि की थी, जिसके अनुसार बाहर से हमले को रोकने के लिए निवेदन किये जाने पर सोवियत संघ अफगानिस्तान को सैनिक सहायता भेजने के लिए प्रतिबद्ध था। जैसा कि सुप्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार और "आल द प्रेसिडेंट्स मेन" के सह-लेखक कार्ल बर्नस्टीन ने भली भांति स्पष्ट किया है, बाहर से ऐसा हमला हुआ था और अब भी हो रहा है। अखबार "सैन-फ्रांसिस्को एक्ज़ामिनर एंड क्रॉनिकल" में २३ अगस्त १९८१ की एक रिपोर्ट में बर्नस्टीन ने लिखा, "अफगानिस्तान में अमरीकी भूमिका उससे कहीं अधिक व्यापक है, जितनी प्रारंभिक खबर दिखाती थी। सी० आई० ए० अपनी परिधि में पांच देशों को शामिल करनेवाली एक जटिल और दूरगामी योजना तथा आधुनिक छापामार लड़ाई के आवश्यक हथियारों से अफगान प्रतिरोध का समर्थन करने के लिए १० करोड़ डालर के बीच लाग-मेल बैठा रहा है।" बर्नस्टीन ने अमरीका के अलावा जिन अन्य देशों को गिनाया है, वे चीन, पाकिस्तान, मिस्र और सऊदी अरब हैं।

प्रश्न क्यूबा और दूसरे देशों के बारे में आप क्या कहेंगे? आप इस आरोप के बारे में क्या उत्तर देंगे कि सोवियत संघ [illegible] के जरिये अपने रूप को दुनिया के अन्य भागों में निर्यात कर रहा है?

उत्तर सोवियत नीति, जो हमारे विधान में दर्ज की गयी है, उन राष्ट्रों को सर्वांगीण सहायता देने में निहित है जिन्होंने समाज का समाजवादी रूप स्वीकार किया है अथवा जिन्होंने [illegible] का पथ चुना है। यह सहायता [illegible]

उन शक्तियों की रक्षा की जाती है जिन्हें अपने विराम के लिए शांति की आवश्यकता है। इसके साथ ही उन शक्तियों पर अंकुश लगाया जाता है जो नयी सरकारों पर हमला करती है, जो युद्ध की योजनाएं बनाती हैं।

साम्राज्यवाद के खिलाफ उत्पीड़ित राष्ट्रों का आंदोलन विश्वव्यापी है। यह चलता रहेगा, भले ही सोवियत संघ का अस्तित्व न हो। यह मानना बड़ी भूल है कि सामाजिक परिवर्तन के सभी प्रयास मास्को में उत्पन्न होते हैं। यह मानना भी भूल है कि सोवियत संघ नयी सरकारों के साथ अपने समझौतों और नैतिक दायित्वों को तब पूरा करने से इन्कार करेगा, जब उससे यह करने को कहा जायेगा। वे लोग, जो इस तरह की सहायता को युद्ध या विस्तारवाद का प्रमाण कहते हैं, उन आक्रामक, विस्तारवादी कार्रवाइयों को नजरअंदाज करते हैं जिनके उत्तर हमारी सहायता है।

प्रश्न: चूंकि हथियारों की होड़ से संबद्ध देश स्पष्टतः एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते, इस अविश्वास को हटाने या कम करने के लिए क्या किया जा सकता है ताकि समझौते प्राप्त किये जा सकें?

उत्तर: क्या आपने कभी उन समझौतों की कोई सूची बनायी है, जिन पर सोवियत संघ ने हस्ताक्षर करके फिर भंग कर दिया?* आपकी खोज यह विश्वास बनाने में सहायता कर सकती है कि समझौतों के अनुसार अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए सोवियत संघ पर भरोसा किया जा सकता है।

प्रश्न: क्यों सोवियत संघ पर इस बारे में विश्वास किया जा सकता है कि वह अपनी इस घोषित स्थिति का पालन करेगा कि शस्त्रास्त्र संतुलन और निरस्त्रीकरण युद्ध बचाने की कुंजी है?

उत्तर: अगर अमरीका हथियारों के क्षेत्र में सोवियत संघ पर श्रेष्ठता पाने के प्रयासों में डटा रहेगा, तो इसका केवल यही अर्थ हो सकता है कि अमरीका जब, उसकी राय में, यह श्रेष्ठता प्राप्त कर लेगा तो वह सोवियत संघ पर हुक्म चलाने की कोशिश करेगा। हिटलर

---

*मैंने ऐसा प्रयोग करने की कोशिश की। मैंने विदेश मंत्रालय को पत्र लिखा समझौतों की सूची मांगी, जिन पर सोवियत संघ ने हस्ताक्षर करके फिर भंग किये हों। मुझे कोई उत्तर नहीं मिला।

उन शक्तियों की रक्षा की जानी है जिन्हें अपने विकास के लिए इसकी आवश्यकता है। इसके साथ ही उन शक्तियों पर अंकुश लगाया जाना है, जो नयी सरकारों पर हमला करती हैं, जो युद्ध की योजना बनाती हैं।

साम्राज्यवाद के खिलाफ उत्पीड़ित राष्ट्रों का आंदोलन विश्वव्यापी है। वह चलता रहेगा, भले ही सोवियत संघ का अस्तित्व न हो। यह मानना बड़ी भूल है कि सामाजिक परिवर्तन के सभी प्रयत्न मास्को में उत्पन्न होते हैं। यह मानना भी भूल है कि सोवियत संघ नयी सरकारों के साथ अपने समझौतों और नैतिक दायित्वों को पूरा करने से इन्कार करेगा, जब उससे यह करने को कहा जायेगा। वे लोग, जो इस तरह की सहायता को युद्ध या विस्तारवाद का प्रमाण कहते हैं, उन आक्रामक, विस्तारवादी कार्रवाइयों को नजरअंदाज करते हैं, जिनका उत्तर हमारी सहायता है।

प्रश्न: चूंकि हथियारों की होड़ से संबद्ध देश स्पष्टतः एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते, इस अविश्वास को हटाने या कम करने के लिए क्या किया जा सकता है ताकि समझौते प्राप्त किये जा सकें?

उत्तर: क्या आपने कभी उन समझौतों की कोई सूची बनायी है, जिन पर सोवियत संघ ने हस्ताक्षर करके फिर भंग कर दिया? आपकी खोज यह विश्वास बनाने में सहायता कर सकती है कि समझौतों के अनुसार अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए सोवियत संघ पर भरोसा किया जा सकता है।

प्रश्न: क्यों सोवियत संघ पर इस बारे में विश्वास किया जा सकता है कि वह अपनी इस घोषित स्थिति का पालन करेगा कि शक्ति-संतुलन और निरस्त्रीकरण युद्ध बचाने की कुंजी है?

उत्तर: अगर अमरीका हथियारों के क्षेत्र में सोवियत संघ पर श्रेष्ठता पाने के प्रयासों में डटा रहेगा, तो इसका केवल यही अर्थ हो सकता है कि अमरीका जब, उसकी राय में, यह श्रेष्ठता प्राप्त कर लेगा तो वह सोवियत संघ पर हुक्म चलाने की कोशिश करेगा। [illegible]

ने यह करने की कोशिश की थी, लेकिन उसे मुह की खानी पडी थी और अगर अमरीका सोवियत सघ पर धौंस-धमकी जमाने के लिए अपनी श्रेष्ठ शक्ति का प्रयोग करे, तो वह पायेगा कि सोवियत जनता इसे चुपचाप नही मान लेगी। वास्तव मे, यह मौन सहमति शाति को सुदृढ बनाने के अनुरूप नही होगी। वल्कि यह तो शक्ति पर भरोसा करनेवालो की और भी अधिक आक्रामक कार्रवाइयो को बढावा देना होगा। लेकिन अगर अमरीका के उद्देश्य शातिपूर्ण हो, तो हथियारो के क्षेत्र मे श्रेष्ठता इन उद्देश्यो को प्राप्त करने मे अमरीका की सहायता नही कर सकती। शाति चाहने के लिए सोवियत सघ पर दबाव डालना आवश्यक नही है। शाति हमारा पहला ध्येय है।

प्रश्न क्यो सोवियत सघ ने अपने सबसे मित्र देशो सहित अन्य देशो के साथ परमाणविक हथियारो के क्षेत्र मे अपने ज्ञान का हिस्सा बटाने से इन्कार किया है?

उत्तर सोवियत सघ परमाणविक हथियारो के प्रसार को शाति के लिए खतरा मानता है। युद्ध के खतरे को बढने से बचाने के लिए हमारा देश परमाणविक हथियारो मे निहित युद्ध के खतरे के प्रसार को रोकने का प्रयास करता है। इन हथियारो का कोई भी प्रसार पूजीवादी देशो, विशेष रूप से, अमरीका की करतूत है। लेकिन सोवियत सघ हमारे देश सहित सभी देशो मे सभी परमाणविक हथियारो के उन्मूलन पर जोर देता है।

प्रश्न अमरीका मे अक्सर दावा किया जाता है कि हथियारो के क्षेत्र मे सोवियत सघ अमरीका से आगे है और इसलिए सोवियत सघ अमरीका के लिए खतरा है। अगर सोवियत सघ के पास श्रेष्ठ हथियार है और अगर यह खतरा है (इस अर्थ मे कि वह अमरीका के विरुद्ध आक्रामक फौजी कार्रवाई शुरू कर सकता है), तो क्या सोवियत सघ ने अमरीका पर उसके द्वारा सोवियत सघ के साथ हथियारो की बराबरी प्राप्त करने से पहले ही हमला नही किया?

उत्तर अच्छा प्रश्न है। सोवियत सघ ने अमरीका पर हमला नही किया है, क्योकि वह हमला करने का कोई इरादा ही नही रखता, चाहे उसके पास श्रेष्ठ हथियार हो जो वास्तव मे उसके पास नही है।

प्रश्न अमरीकी लगातार सुनते रहते है कि [illegible] [illegible] के देशो मे मेल-जोलो के लिए खतरा है और उस पर [illegible] नही

किया जा सकता कि वह इस क्षेत्र में दखल नहीं देगा। इस संबंध में आप का क्या कहना है?

उत्तर यहां तीन प्रश्न एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पहले, तेल पर विचार करें। सी० आई० ए० के इस दावे के बावजूद कि सोवियत संघ में तेल की कमी महसूस की जा रही है, सोवियत संघ को फारस की खाड़ी या अपनी सीमाओं से बाहर किसी भी स्थान से तेल की आवश्यकता नहीं है। सोवियत संघ दुनिया में तेल का सबसे बड़ा उत्पादक है। वह तेल का निर्यात करता है। हमारे पास, विशेष रूप से साइबेरिया में बड़े अप्रयुक्त भंडार हैं, जहां उत्पादन लगातार बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार यदि हमें तेल की जरूरत ही न हो, तो हम इसे प्राप्त करने के लिए अपनी सीमाओं से बाहर क्यों जायेंगे?

दूसरा विचार यह है कि यदि हमने बलप्रयोग द्वारा फारस की खाड़ी के तेल पर कब्जा करने की कोशिश करने (अथवा अमरीका को इसके प्रवाह में बाधा पहुंचाने की कोशिश करने) का हास्यास्पद कदम उठाया भी, तो हम विश्व परमाणविक युद्ध शुरू करने का खतरा मोल लेंगे। हम मूर्ख नहीं हैं। ऐसी चीज प्राप्त करने के लिए, जिसकी हमें आवश्यकता ही नहीं है या अमरीका को ऐसी चीज प्राप्त करने से रोकने के लिए जिसकी उसे आवश्यकता है, हम परमाणविक युद्ध से विनाश का खतरा नहीं मोलने जा रहे हैं।

तीसरे विचार का संबंध तेल-समृद्ध फारस की खाड़ी में क्रांतिकारी आंदोलनों के संभव प्रसार से है। यह सही है कि इस क्षेत्र के औद्योगीकरण के साथ ऐसे प्रसार संभव हैं। ऐसी प्रवृत्ति हमेशा उस जगह प्रकट होती है, जहां औपनिवेशिक जनगण या औद्योगिक मजदूर होते हैं। ऐसे आंदोलन वहां सोवियत संघ की स्थापना के पहले भी चलते थे। वास्तव में, सोवियत संघ की स्थापना ऐसे ही आंदोलनों के फलस्वरूप हुई। वे अब सोवियत संघ की ओर से बिना किसी उकसावे के चल रहे हैं। हम इतने मूर्ख नहीं हैं कि उन घटनाओं को शुरू करने के लिए बड़ा खतरा मोल लें, जो हमारे बिना शुरू हो रही हैं।

प्रश्न: चूंकि सोवियत संविधान युद्ध-प्रचार कार्य को गैर-कानूनी घोषित करता है, आप इस तथ्य को कैसे स्पष्ट कर सकते हैं कि बहुत सी सोवियत फिल्मों को लोग युद्ध-फिल्में कहते हैं?

उत्तर हमारी एक भी फिल्म युद्ध का गुणगान नहीं करती।

इसके विपरीत, युद्ध-फिल्मे कही जानेवाली फिल्मो मे युद्धकालीन परिस्थितियो मे मानवीय अच्छाई और वीरता का गुणगान किया जाता है। फिल्मे इतिहास के एक अग के रूप मे युद्ध को दिखाती है, लेकिन वे किसी भी रूप मे युद्ध को आकर्षक नही बनाती। उल्टे, वे लोगो मे शाति की इच्छा को मजबूत बनाती है।

प्रश्न : सविधान के अनुच्छेद ६६* के अनुसार शाति नीति के कार्यान्वियन हेतु सोवियत नागरिक वस्तुत क्या कर सकते है ?

उत्तर कार्रवाइयो की सूची बहुत लबी होगी, लेकिन यहा कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं सोवियत नागरिको ने सभी जनतत्रो मे शाति समितिया बनायी है। उन्हे अखिल सघीय सोवियत शाति समिति सयुक्त करती है। इन सगठनो की वित्त-व्यवस्था स्वैच्छिक चदो से की जाती है। सोवियत सघ मे बौद्ध-धर्म के प्रधान दुनिया के विभिन्न देशो की यात्रा करते हैं और शाति को सुदृढ बनाने के लिए आयोजित सम्मेलनो मे दूसरे धार्मिक नेताओ से मिलते हैं। सभी पेशो के सोवियत नागरिको के अनेकानेक प्रतिनिधिमडल अमरीका की यात्रा करते है और अमरीकी समाज के विभिन्न समूहो के प्रतिनिधियो से शाति-रक्षा की आवश्यकता के बारे मे बातचीत करते हैं।

प्रश्न आप शाति-रक्षा की कार्रवाइयो और उनमे सोवियत नागरिको की भागीदारी के बारे मे बात कर रहे है। अमरीका मे अक्सर यह दावा किया जाता है कि सोवियत सरकार ही युद्ध की इच्छा करती है और अमरीका को धमकाती है। क्या सोवियत सरकार सोवियत लोगो को धोखा नही दे रही है ?

उत्तर यदि सोवियत नेता वास्तव मे युद्ध के लिए प्रयास कर रहे है, तो क्या वे शाति की माग करने के लिए सारी जनता को प्रोत्साहित करके उस उद्देश्य को प्राप्त करने के अपने अवसरो को खतरे मे डालेगे – क्या वे अपनी सत्ता को खतरे मे डालेगे ? यदि सोवियत नेता युद्ध चाहते है, तो क्या सोवियत जनता के साथ यह विश्वासघात आत्मविनाशी नही होगा ?

---

*अनुच्छेद ६६ अन्य देशो के जनगण के मध्य मैत्री और सहयोग को बढ़ावा देना तथा विश्व शाति को कायम रखने और उसे सुदृढ बनाने मे सहायता करना सोवियत सघ के नागरिको का अन्तर्राष्ट्रीयतावादी कर्तव्य है।

किया जा सकता कि वह इस क्षेत्र में दखल नहीं देगा। इस बारे में आप का क्या कहना है?

उत्तर यहां तीन प्रश्न एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पहले, तेल पर विचार करें। सी० आई० ए० के इस दावे के बावजूद कि सोवियत संघ में तेल की कमी महसूस की जा रही है, सोवियत संघ को फ़ारस की खाड़ी या अपनी सीमाओं से बाहर किसी भी स्थान से तेल की आवश्यकता नहीं है। सोवियत संघ दुनिया में तेल का सबसे बड़ा उत्पादक है। वह तेल का निर्यात करता है। हमारे पास विशेष रूप से साइबेरिया में बड़े अप्रयुक्त भंडार हैं, जहां उत्पादन लगातार बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार यदि हमें तेल की ज़रूरत ही न हो, तो हम इसे प्राप्त करने के लिए अपनी सीमाओं से बाहर क्यों जायेंगे?

दूसरा विचार यह है कि यदि हमने बलप्रयोग द्वारा फ़ारस की खाड़ी के तेल पर कब्जा करने की कोशिश करने (अथवा अमरीका को इसके प्रवाह में बाधा पहुंचाने की कोशिश करने) का हास्यास्पद कदम उठाया भी, तो हम विश्व परमाणविक युद्ध शुरू करने का खतरा मोल लेंगे। हम मूर्ख नहीं हैं। ऐसी चीज़ प्राप्त करने के लिए, जिसकी हमें आवश्यकता ही नहीं है या अमरीका को ऐसी चीज़ प्राप्त करने से रोकने के लिए जिसकी उसे आवश्यकता है, हम परमाणविक युद्ध से विनाश का खतरा नहीं मोलने जा रहे हैं।

तीसरे विचार का संबंध तेल-समृद्ध फ़ारस की खाड़ी में क्रांतिकारी आंदोलनों के संभव प्रसार से है। यह सही है कि इस क्षेत्र के औद्योगीकरण के साथ ऐसे प्रसार संभव हैं। ऐसी प्रवृत्ति हमेशा उस जगह प्रकट होती है, जहां औपनिवेशिक जनगण या औद्योगिक मज़दूर होते हैं। ऐसे आंदोलन वहां सोवियत संघ की स्थापना के पहले भी चलते थे। वास्तव में, सोवियत संघ की स्थापना ऐसे ही आंदोलनों के फलस्वरूप हुई। वे अब सोवियत संघ की ओर से बिना किसी उकसावे के चल रहे हैं। हम इतने मूर्ख नहीं हैं कि उन घटनाओं को शुरू करने के लिए बड़ा खतरा मोल लें, जो हमारे बिना शुरू हो रही हैं।

प्रश्न चूंकि सोवियत संविधान युद्ध-प्रचार कार्य को ग़ैर-कानूनी घोषित करता है, आप इस तथ्य को कैसे स्पष्ट कर सकते हैं कि बहुत सी से[illegible] को लोग युद्ध-फ़िल्में कहते हैं?

[illegible] भी फ़िल्म युद्ध का गुणगान नहीं करती।

इसके विपरीत, युद्ध-फिल्मे कही जानेवाली फिल्मों में युद्धकालीन परिस्थितियों में मानवीय अच्छाई और वीरता का गुणगान किया जाता है। फिल्में इतिहास के एक अंग के रूप में युद्ध को दिखाती है लेकिन वे किसी भी रूप में युद्ध को आकर्षक नहीं बनाती। उल्टे वे लोगों में शांति की इच्छा को मजबूत बनाती है।

प्रश्न संविधान के अनुच्छेद ६९* के अनुसार शांति नीति के कार्यान्वयन हेतु सोवियत नागरिक वस्तुतः क्या कर सकते है?

उत्तर कार्रवाइयों की सूची बहुत लंबी होगी लेकिन यहा कुछ उदाहरण प्रस्तुत है सोवियत नागरिकों ने सभी जनतत्रों में शांति समितियां बनायी है। उन्हें अखिल संघीय सोवियत शांति समिति संयुक्त करती है। इन संगठनों की वित्त-व्यवस्था स्वैच्छिक चंदों से की जाती है। सोवियत संघ में बौद्ध-धर्म के प्रधान दुनिया के विभिन्न देशों की यात्रा करते हैं और शांति को सुदृढ बनाने के लिए आयोजित सम्मेलनों में दूसरे धार्मिक नेताओं से मिलते है। सभी पेशों के सोवियत नागरिकों के अनेकानेक प्रतिनिधिमंडल अमरीका की यात्रा करते है और अमरीकी समाज के विभिन्न समूहों के प्रतिनिधियों से शांति-रक्षा की आवश्यकता के बारे मे बातचीत करते है।

प्रश्न आप शांति-रक्षा की कार्रवाइयों और उनमें सोवियत नागरिकों की भागीदारी के बारे में बात कर रहे है। अमरीका में अक्सर यह दावा किया जाता है कि सोवियत सरकार ही युद्ध की इच्छा करती है और अमरीका को धमकाती है। क्या सोवियत सरकार सोवियत लोगों को धोखा नही दे रही है?

उत्तर यदि सोवियत नेता वास्तव में युद्ध के लिए प्रयास कर रहे हैं, तो क्या वे शांति की मांग करने के लिए सारी जनता को प्रोत्साहित करके उस उद्देश्य को प्राप्त करने के अपने अवसरों को खतरे में डालेगे – क्या वे अपनी सत्ता को खतरे में डालेंगे? यदि सोवियत नेता युद्ध चाहते हैं तो क्या सोवियत जनता के साथ यह विश्वासघात आत्मविनाशी नही होगा?

---

*अनुच्छेद ६९ अन्य देशों के जनगण के साथ मैत्री और सहयोग को बढ़ावा देना तथा विश्व शांति को कायम रखने और उसे सुदृढ़ बनाने में सहायता करना सोवियत संघ के नागरिकों का अन्तर्राष्ट्रीयतावादी कर्तव्य है।

उसका कारण यह है कि मैंने कभी भी सोवियत जनरल या सैनिक वर्दी में किसी साधारण सैनिक से बात नहीं की। लेकिन मैंने पुराने सोवियत सैनिकों को शांति के लिए स्पष्ट और गहरी इच्छा प्रकट करते हुए देखा और सुना। मैंने सैनिक नेताओं के अनेकानेक बयान पढ़े हैं। उनमें से एक भी शस्त्र युद्ध की इच्छा नहीं व्यक्त करता और सरकार की कार्रवाइयां, जो सेना की नीति का मार्गदर्शन करती हैं, हथियारों के उन्मूलन के विषय पर प्रभावशाली हैं।

यहां शांति और निरस्त्रीकरण के बारे में उन कुछ प्रस्तावों की सूची प्रस्तुत है, जिन्हें सोवियत संघ ने १९७० और १९८० के बीच की अवधि में केवल संयुक्त राष्ट्र संघ में पेश किये थे। इस सूची को मैंने शांति और स्वाधीनता के लिए महिलाओं की अंतर्राष्ट्रीय लीग द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'शांति और स्वाधीनता', जनवरी-फरवरी, १९८० से लिया है

> प्रस्ताव २८३३ (२६), " विश्वास व्यक्त करता है कि उपयुक्त तैयारी के बाद सभी राज्यो की भागीदारी से एक विश्व निरस्त्रीकरण सम्मेलन के आयोजन के प्रश्न पर सावधानी-पूर्ण विचार के उद्देश्य से तत्काल कदम उठाया जाना अत्यंत वाछनीय है " (स्वीकृत १६/१२/७१)।
>
> प्रस्ताव २९३६ (२७), " यह मानते हुए कि बल-प्रयोग या बल-प्रयोग की धमकी के परित्याग और बल-प्रयोग या बल-प्रयोग की धमकी के निषेध और परमाणविक हथियारो के प्रयोग के निषेध का अतर्राष्ट्रीय जीवन के एक नियम के रूप मे पूर्णत पालन किया जाना चाहिए,
>
> "१ सघ के सदस्य-राज्यो की ओर से सयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुसार अतर्राष्ट्रीय संबधो मे अपने सभी रूपो और अभिव्यक्तियो मे बल-प्रयोग या बल-प्रयोग की धमकी के अपने परित्याग तथा परमाणविक हथियारो के प्रयोग के स्थायी निषेध की घोषणा करता है ..." (स्वीकृत २९/११/७२)।
>
> प्रस्ताव न० ३१/९, "अतर्राष्ट्रीय सबधो मे शक्ति का प्रयोग न करने सबधी विश्व-सधि का हस्ताक्षर" (स्वीकृत ८/११/७६)।
>
> प्रस्ताव ३०९३ क (२८), " सुरक्षा परिषद के स्थायी

सदस्य-राज्यो के फौजी बजटो मे १० प्रतिशत की कटौती और इस तरह वंचित कोषो के एक भाग का विकासमान देशो को सहायता देने के लिए उपयोग " ( स्वीकृत ७/१२/७३ ) ।

सोवियत सघ ने अनेक अवसरो पर सामान्य और पूर्ण निरस्त्रीकरण सहित निरस्त्रीकरण का एक व्यापक कार्यक्रम पेश किया है। १९७१ मे उसने जीवाणविक हथियारों और जीव-विषो के विकास, उत्पादन और सग्रह पर प्रतिबध लगाने और उनके विनाश के बारे मे एक समझौते का प्रारूप पेश किया। १९७२ मे उसने रासायनिक हथियारो के सबध मे इसी तरह का एक प्रारूप किया। १९७४ मे सयुक्त राष्ट्र सघ के महासचिव को अतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और मानव-कल्याण तथा स्वास्थ्य के रख-रखाव के प्रतिकूल फौजी और अन्य उद्देश्यो के लिए पर्यावरण को प्रभावित करने की कार्रवाई पर प्रतिबध लगाने के बारे मे समझौता करने के प्रस्ताव के साथ एक पत्र भेजा गया। १९७५ मे सोवियत विदेश मत्री आद्रेई ग्रोमिको ने सयुक्त राष्ट्र सघ के महासचिव को जन-सहार के हथियारो की नयी किस्मो और ऐसे हथियारो की नयी प्रणालियो के विकास और निर्माण पर प्रतिबध लगाने के बारे मे प्रस्ताव के प्रारूप के साथ एक पत्र भेजा, जिसे दिसबर १९७५ मे महासभा ने पास कर दिया – प्रस्ताव न० ३४७९(३०)। १९७५ मे महासभा ने परमाणविक हथियारो के परीक्षणो पर पूर्ण और सामान्य प्रतिबध लगाने के बारे मे एक सधि पर हस्ताक्षर करने सबधी प्रस्ताव न० ३४७८(३०) को स्वीकार किया। नवबर १९७६ मे यूरोपीय सुरक्षा और सहयोग सम्मेलन मे भाग लेनेवाले राज्यो द्वारा एक-दूसरे के खिलाफ परमाणविक हथियारो का पहले प्रयोग न करने की वचनबद्धता के सबध मे एक प्रस्ताव पेश किया गया। सितबर १९७६ मे हथियारो की होड समाप्त करने और निरस्त्रीकरण के प्रश्नो पर महासभा को एक स्मरण-पत्र दिया गया।

६ अक्तूबर १९७९ को सोवियत सघ ने अगले वर्ष जर्मन जनवादी जनतत्र से २० हजार सैनिको और १,००० टैको को एकतरफा वापस हटाने का प्रस्ताव किया और यूरोप मे मध्यम दूरी के प्रक्षेपास्त्रों के प्रश्न पर अमरीका के साथ विचार-विमर्श करने की अपनी इच्छा व्यक्त की।

निरस्त्रीकरण सबधी सोवियत सघ के प्रस्तावो की यह सूची और

13*

भी लबी हो सकती है। यहा कुछ उदाहरण प्रस्तुत है :

फरवरी १९८१ मे कम्युनिस्ट पार्टी की २६वी काग्रेस ने निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किये

१ कि राष्ट्र हेलसिंकी समझौतो के अतर्गत विश्वास के क्षेत्र की तुलना मे यूरोप मे सामरिक क्षेत्र मे विश्वास के क्षेत्र को बढाये।

२ कि सुदूर-पूर्व पर विश्वास बनानेवाला एक सम्मेलन आयोजित किया जाये।

३ कि निरस्त्रीकरण के बारे मे अमरीका के साथ समझौता-वार्ता जारी रखी जाये।

४ कि हथियारो की किसी भी नयी किस्म पर प्रतिबध लगाया जाये।

५ कि यूरोप में मध्यम दूरी के परमाणविक हथियारो की तैनाती को स्थगित कर दिया जाये।

६ कि परमाणविक युद्ध को रोकने की आवश्यकता प्रदर्शित करने के लिए एक अधिकारप्राप्त अंतर्राष्ट्रीय समिति क़ायम की जाये।

७ कि अतर्राष्ट्रीय स्थिति मे सुधार लाने तथा युद्ध रोकने पर सुरक्षा परिषद का एक विशेष अधिवेशन हो।

१० अगस्त १९८१ को सोवियत विदेश मत्री आद्रेई ग्रोमिको ने बाह्य अतरिक्ष मे सभी हथियारो पर प्रतिबध लगाने के बारे मे सधि करने के लिए सयुक्त राष्ट्र महासभा मे प्रस्ताव किया।

सरकारी प्रस्तावो और गैर-सरकारी वार्ताओ की यह सूची और भी लबी हो सकती है, लेकिन यह काफी है। मेरे विचार मे, यह सब इस बात का प्रमाण है कि सोवियत सरकार सोवियत लोगो के इस दृढसकल्प को व्यक्त करने के लिए अनेकानेक रास्ते ढूढ रही है कि कोई परमाणविक युद्ध न हो, कि कोई युद्ध न हो।*

---

*जून, १९८२ मे निरस्त्रीकरण पर सयुक्त राष्ट्र महासभा के दूसरे विशेष अधिवेशन मे सोवियत सघ नयी महत्वपूर्ण पहलकदमियो के साथ आगे बढा। उसने आधिकारिक रूप से घोषणा की कि वह "परमाणविक हथियारो का पहले प्रयोग न करने की प्रतिज्ञा करता है।" उसने अधिवेशन के समक्ष "बढते परमाणविक खतरे को दूर करने, हथियारो की होड को रोकने के लिए" एक स्मरण-पत्र तथा रासायनिक हथियारो के प्रतिबध और विनाश पर समझौते की मूल व्यवस्थाओ का एक प्रारूप पेश किया। —स०

# उपसंहार

इस पुस्तक को लिखने की योजना बनाते हुए मैंने अपने एक अमरीकी दोस्त से बात की, जो सोवियत संघ को सीधे जानता है। वह भी शांति चाहता है और मैंने उससे पूछा कि सोवियत संघ के बारे में मेरी रचना किस रूप में शांति में योगदान कर सकेगी।

"अमरीकी और सोवियत लोगों की साझी समस्याओं पर जोर दो," उसने सुझाव दिया। तभी किसी ने बातचीत को दूसरी दिशा में मोड़ दिया और मुझे साफ नहीं हुआ कि मेरे दोस्त के ध्यान में कौन-सी साझी समस्याएं थीं। लेकिन यह देखने के लिए कि उसके सुझाव का कैसे उपयोग किया जा सकता है, मैंने अपनी ही सूची तैयार की।

व्यक्तिगत स्तर पर मैंने उन क्षेत्रों को निर्दिष्ट किया जो मुझे दोनों ही समाजों के लिए, वास्तव में संपूर्ण मानवजाति के लिए एक से प्रतीत हुए: भोजन, कपड़ा, मकान, वयस्कता, बीमारी, बुढ़ापा, मृत्यु, शराबखोरी, आपसी तनाव (जैसा कि अविभाजित प्रेम), प्रतियोगिता (जिससे हारनेवाले और जीतनेवाले हमेशा जुड़े होते हैं), सामाजिक हैसियत प्राप्त करना (जिससे जीवन की असफलताएं भी जुड़ी हुई हैं), उबाऊ काम से विरक्ति, आत्माभिव्यक्ति।

अधिक व्यापक सामाजिक स्तर पर मैंने निम्नलिखित साझी समस्याओं को पाया: हथियारों की होड़ का बड़ा वित्तीय बोझ, बाहरी खतरों से अपने देश की रक्षा करने की इच्छा, पर्यावरण की रक्षा, नौकरशाही से संघर्ष। निस्संदेह जल्दी में तैयार की गयी इस सूची को काफी बढ़ाया जा सकता है, लेकिन यह तो शुरूआत भर है।

बेशक, यह पुस्तक शांति में एक योगदान होगी, अगर अमरीका में मेरे पाठक सोवियत लोगों को सीधे ऐसे लोगों के रूप में देखें,

जिनकी हमारे साथ साझी व्यक्तिगत समस्याएं हैं और उन्हें ऐसे लोगों के रूप में माने जिन्हे रहने और अपने भाग्यों का निर्धारण करने के अपने तरीकों को चुनने का हर अधिकार है। लेकिन पारस्परिक व्यक्तिगत सम्मान हथियारों की होड़ और युद्ध के कारणों को नही हटाता। और अधिक बड़ी समानताओं पर जोर बहुत सतही, यहां तक कि भ्रामक भी हो सकता है क्योंकि यह समस्याओं के अक्सर बिल्कुल भिन्न स्रोतों और अक्सर उन बिल्कुल विपरीत दिशाओं के बारे में नहीं बताता, जिनमें इन दोनो समाजों में उनके हल ढूंढे जा रहे हैं। अत मेरी राय में, समानताओं और भिन्नताओं दोनों ही पर विचार करना आवश्यक है।

मुझे शक है कि मेरा यह मित्र समाजवाद तथा पूजीवाद के बीच भेद को कम करना चाहेगा। वह पूजीवाद की परिस्थितियों में फला-फूला है और मैंने उसे अपने को समाजवाद का पक्षधर बनाते हुए नहीं सुना। मुझे यह भी संदेह है कि वह यह नही कहना चाहे कि पूजीवादी दुनिया में स्वतत्रता पर कडी पाबदिया हैं। अतः मैंने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि समाजवादी समाज की गतिशीलता शांति की ओर है या युद्ध की ओर।

सोवियत नागरिकों के अधिकारो के अपने सक्षिप्त सर्वेक्षण मे मै सब कुछ नही शामिल कर सका। अपने वर्तमान रूप में सोवियत सविधान मे ऐसे अनेकानेक अधिकारो की गारटियां शामिल हैं, जिनके बारे मे मैंने कोई जिक्र नही किया है या केवल प्रसगवश जिक्र कर दिया है। ये उनमे से कुछ अधिकार हैं जिन्हे या तो पूरी तरह छोड़ दिया गया है या थोडा सा जिक्र कर दिया गया है:

व्यक्तिगत सपत्ति, बचत, मकान का अधिकार, विरासत मे पाने का अधिकार (अनुच्छेद १३)।

कम्युनिस्ट आदर्श के अनुसार व्यक्तित्व के विकास का नागरिको का अधिकार: "प्रत्येक का मुक्त विकास सबके मुक्त विकास की शर्त है।" (अनुच्छेद २०)।

आक्रमण से समाजवादी मातृभूमि की रक्षा करना राज्य का अधिकार है (अनुच्छेद ३१)।

सोवियत सघ मे विदेशियों के अधिकार (अनुच्छेद ३७)।

मेहनतकश जनता के हितो और शांति के ध्येय की रक्षा

करने, आदि के लिए उत्पीडित किये जानेवाले विदेशी नागरिकों का शरण पाने का अधिकार ( अनुच्छेद ३८ )।

कम्युनिज्म के उद्देश्यों के अनुरूप वैज्ञानिक तकनीकी और कलात्मक सृजन-कार्य की स्वतन्त्रता का अधिकार ( अनुच्छेद ४७)। इसकी चर्चा आगे की जायेगी।

जनता के हितों के अनुरूप और समाजवाद को सुदृढ बनाने और विकसित करने के उद्देश्य से भाषण प्रेस और सभा का अधिकार ( अनुच्छेद ५० )। इसकी चर्चा आगे की जायगी।

राज्य द्वारा संरक्षण प्राप्त करने का परिवारों का अधिकार ( अनुच्छेद ५३ )।

व्यक्ति की अलंघनीयता और मनमानी गिरफ्तारी से स्वतन्त्रता का अधिकार ( अनुच्छेद ५४ )।

आवास की अलंघनीयता का अधिकार ( अनुच्छेद ५५ )।

पत्र-व्यवहार, टेलीफोन-वार्ता और तार-संदेशों की गोपनीयता का अधिकार ( अनुच्छेद ५६ )।

अदालती रक्षा का अधिकार ( अनुच्छेद ५७ )।

बच्चों के अधिकार और माता पिताओं के अधिकार ( अनुच्छेद ६६ )।

उपर्युक्त अधिकारों और निस्सदेह अन्य अधिकारों को मुझे छोड़ना पड़ता अगर मेरा इरादा उन अधिकारों का विस्तारपूर्वक शामिल करने का होता जो मुझे सबसे मौलिक प्रतीत हुए। ऐसे भी अधिकार है जो सोवियत नागरिकों को नही प्राप्त है। उदाहरणार्थ

उन्हे वेश्यावृत्ति का अधिकार नही प्राप्त है।

उन्हे निजी हथियार लेकर चलने या रखने का अधिकार नही है।

वे फैक्टरियो या भूमि या बैंक के मालिक नहीं हो सकते।

वे सपत्ति को दूसरों को किराये पर देनेवाले जमींदारों की तरह नही रह सकते।

उन्हे युद्ध-प्रचार करने की पूरी मनाही है।

वे सोवियत संघ मे वह आर्थिक प्रणाली कायम करने की कोशिश नही कर सकते जो उन देशो मे विद्यमान है जहा ये अधिकार अस्तित्व रखते है।

उन अधिकारो मे से प्रत्येक के बारे मे काफी-कुछ कहा जा सकता है, जिनकी मैने अभी चर्चा नही की है और उनमे से कुछ पर – उदाहरणार्थ, कलात्मक सृजन-कार्य की स्वतत्रता के अधिकार पर – टिप्पणी किये बिना मै नही रह सकता, क्योकि मैने देश के विभिन्न भागो मे उनके बारे मे सूचना खोजी और पायी।

"आपके काम पर कोई और वस्तुत कौन-सी पाबदिया लगायी जाती है?" मास्को, अल्मा-अता, उलान-उदे और विलियुस मे कलाकारो और लेखको से मैने यह सवाल इस या उस रूप मे किया और एक ही उत्तर सर्वत्र पाया. "हम अपनी पसद के अनुसार किसी भी रूप का प्रयोग करने और किसी भी विषय पर काम करने के लिए स्वतत्र है।"

लिथुआनियाई लेखक सघ के सचिव, साहित्यिक आलोचक पेत्रास ब्राजेनास मुझे इस बात को समझाने का प्रयास करते हुए निराश हो गये कि लिथुआनिया के लेखक वास्तव मे कितना स्वतत्र हैं। "आपको साल भर यहा रहना होगा और वह सब पढना होगा जो छपना है। केवल तभी आप समझ सकेगे कि हम जो कुछ कहना चाहते है और जिस तरीके से इसे कहना चाहते हैं, उसमे हम वास्तव मे स्वतत्र हैं। ऐसी कोई चीज नही है, जिसे हमने कहना चाहा और नही कह सके।"

स्पष्टत जिन लिथुआनियाई लेखको से मै मिला, वे ऐसी कविताए, उपन्यास और नाटक लिखने की इच्छा नही रखते थे, जिनका उद्देश्य जनतत्र के इतिहास की घडी को पीछे मोडना हो। वर्तमान समय मे उन्हे जो स्वतत्रता प्राप्त है, उसने उन्हे विशाल और सवेदी पाठक और श्रोता तथा लेखको या कवियो के रूप मे भी जीविका कमाने की सभावना प्रदान की है। यह काफी स्पष्ट प्रतीत होता है। लेकिन जार-शाही और पूजीवाद को वापस लौटाने का आह्वान करने की कोई स्वतत्रता नही है और मुझे कोई भी ऐसा आदमी नही मिला, जिसने इसकी अनुपस्थिति पर दुख प्रकट किया हो।

फिर भी मैने उन पुस्तको को याद किया जो पहले सोवियत सघ मे प्रकाशित की गयी थी और फिर अग्रेजी मे अनूदित हुई थी और जिनमे सोवियत समाज के विभिन्न पहलुओ की तीव्र आलोचना की गयी थी। प्रतीत होता है कि इन पुस्तको के लेखको ने आलोचना करने

के अपने अधिकार का काफी स्वतत्रतापूर्वक प्रयोग किया है, लेकिन उन्होंने यह ऐसे नागरिको के रूप मे किया जो अपने देश को उन्नत बनाना चाहते थे न कि उसे नुक्सान पहुचाना। ऐसी पुस्तको मे एक लेओनीद लेओनोव का उपन्यास 'रूसी वन' है। यह सोवियत जीवन की समृद्ध तस्वीर प्रस्तुत करता है, जिसमे अन्य बातो के अलावा अवसरवादियो की तीव्र आलोचना की गयी है, जो नौकरशाही दुनिया मे तिकड़मबाज़ी मे कम कुशल प्रतिद्वंद्वियो को उत्पीडित करते हैं। यह पुस्तक केवल बुरे व्यक्तियो और शक्तियो को ही नही दिखाती, बल्कि गीतात्मक रूप मे अल्पदर्शी कूपमडूकता से प्रकृति की रक्षा भी करती है।

हालाकि 'रूसी वन' और, मै आश्वस्त हू, दूसरी पुस्तके मानव-अधिकारो के उल्लघन के खिलाफ ज़ोरदार ढग से आवाज उठाती है, उल्लेखनीय है कि मैने इस विषय पर काफी-कुछ नही कहा है। इसका एक कारण यह है कि मैने प्राप्त जगह का उन मूल अधिकारो पर ज़ोर देने के लिए उपयोग करने हेतु चुना, जो विद्यमान हैं और जिनका इस्तेमाल किया जाता है। दूसरा कारण स्पष्टीकरण के लिए लबी जगह की माग करता है।

जब सारी दुनिया मे शाति वास्तविकता बन जायेगी और सोवियत सघ समझ जायेगा कि उसे फौजी धमकियो का खतरा नही है तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि सोवियत समाज मे बडे परिवर्तन होगे। इस खुशहाल भविष्य मे सभी पेशो के लोग उस चीज़ को याद करेगे, जिसे कार्ल मार्क्स ने अपनी बेटियो के साथ बातचीत मे अपनी प्रिय सूक्ति कहा था: "De omnibus dubitandum"("हर चीज़ को सदेह का विषय बनाओ")। इस चिता के लिए कोई बहाना नही रह जायेगा कि बौद्धिक अन्वेषण उपयोगी, स्थिरकारी मानको को चुनौती दे सकता है।

१९८१ मे मास्को मे मैने 'इटरनेशनल हेराल्ड ट्रिब्युन', 'द टाइम्स आफ लडन' और 'टोरोन्टो ग्लोब' के बिल्कुल ताज़े अक पाये। ये उन स्थानों मे अन्य विदेशी बुर्जुआ प्रकाशनो के साथ बेचे जा रहे थे, जहा विदेशी पर्यटको की आशा की जा सकती है, लेकिन इच्छा होने पर सोवियत नागरिक भी उन्हे खरीद सकते हैं।

मै नही जानता कि सोवियत संघ मे पत्र-पत्रिकाओ के स्टालों मे पूजीवादी देशो के अखबार नियमित रूप से आते रहते हैं या नही,

लेकिन यह मै निश्चित रूप से जानता हूं कि भाषण और प्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता दुनिया मे कही नही है।* अगर आपका विश्वास है कि ऐसी स्वतंत्रता का अस्तित्व है, तो आप अपने इस विश्वास की परीक्षा अमरीका मे कम्युनिस्ट समर्थक टेलीविजन स्टेशन चालू करने की कोशिश करके ले सकते हैं। जहा तक प्रेस की स्वतत्रता का सबध है, लोग अक्सर 'न्यूयार्क टाइम्स' के इस आदर्श-वाक्य को याद करते हैं: "सभी खबरें जो छपने योग्य है।" उन सभी लोगो को, जो इस आदर्श-वाक्य को इस अर्थ मे लेने को प्रवृत्त हैं कि यह अखबार हमेशा सत्य बताता है, यह जानने मे दिलचस्पी होगी कि १९८१ मे प्रकाशित एक पुस्तक उन झूठो के बारे मे विस्तृत दस्तावेजी प्रमाण पेश करती है, जिन्हें 'टाइम्स' सोवियत सघ के बारे में हमेशा छापता है। इस पुस्तक के लेखक अमरीकी रिपोर्टर और उपन्यासकार फिलिप बोनोस्की हैं, जो कई वर्षों तक मास्को मे न्यूयार्क के कम्युनिस्ट अखबार 'द डेली वर्ल्ड' के सवाददाता रहे।"**

प्रेस की स्वतत्रता के प्रति सोवियत रुख क्या है? इसे स्पष्ट करने मे एक दृष्टात सहायता कर सकता है। जब किसी महामारी से समाज के लोगों को खतरा हो जाता है—यह महत्वपूर्ण नहीं है कि यह महामारी कहां पैदा होती है—तो यह बिल्कुल सामान्य है कि छूत लगे व्यक्ति को अलग कर दिया जाये ताकि अन्य लोगों को महामारी की छूत न लग सके। सभवतः यह पूजीवाद की ओर वापसी के समर्थकों के प्रति सोवियत रुख को स्पष्ट कर देता है। जिस प्रकार बीमारी फैलाने के अधिकार का कोई अस्तित्व नहीं है, उसी प्रकार सोवियत क़ानून की दृष्टि मे, ऐसी कार्रवाइयों मे लगने के अधिकार का भी कोई

---

*अनुच्छेद ५०. जनता के हितों के अनुरूप और समाजवादी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने तथा विकसित करने के उद्देश्य से सोवियत सघ के नागरिकों को भाषण की, प्रेस की, एकत्र होने, सभा करने, सड़कों पर जलूस निकालने और प्रदर्शन करने की स्वतन्त्रता प्रत्याभूत है।

इन राजनीतिक स्वतन्त्रताओं को सार्वजनिक भवनों, सड़कों और चौकों को मेहनतकश जनता और उसके संगठनों के उपयोग के लिए सुलभ बना कर, सूचना के व्यापक प्रसार द्वारा और समाचारपत्रों, टेलीविजन तथा रेडियो के उपयोग का अवसर प्रदान कर सुनिश्चित किया जाता है।

** फिलिप बोनोस्की 'क्या हमारे अखबार सचमुच हमें सोवियत सघ के बारे मे सब कुछ बता रहे है?' प्रगति प्रकाशन, मास्को १९८१ (अंग्रेजी में)।

अस्तित्व नही है, जिनका उद्देश्य बुराइयो से भरे विगत को वापस लाना हो।

मोटे तौर पर लेकिन ठोस रूप मे कहे तो विचारो और कलाओ सबधी सोवियत राज्य की नीति बहुत हद तक साम्राज्यवादी राष्ट्रो की विदेश नीति पर प्रतिक्रिया है। जब – और सभवत केवल जब – यह नीति धमकी होना बद हो जायेगी, तभी सोवियत कला और साहित्य अपना पूर्ण विकास प्राप्त करेगे।

सोवियत सघ के बाहर रहनेवाले और कलात्मक सृजन-कार्य तथा बौद्धिक जीवन की स्वतत्रता वस्तुत सर्वत्र चाहनेवाले लोग उन झाड-झखाडो को तलाशने के प्रलोभन मे आ सकते है, जिन्हे सोवियत वाटिका से उखाड फेकना चाहिए। लेकिन मुझे प्रतीत होता है कि अगर वे अपनी वाटिकाओ मे झाड-झखाडो को न उगने दे, तो वे अपने ध्येय मे बडी सहायता पहुचायेगे।

शायद सोवियत लोग समस्या को इस ढग से नही पेश करते। वे ऐसी ताकतवर शक्तियो के बीच जीवित रहने के सघर्ष मे लगे हुए है, जिन पर यह विचार हावी है कि समाजवाद को पृथ्वी से मिटा देना चाहिए। कुल मिलाकर, सोवियत नागरिक प्रत्यक्ष व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए ऐसी किसी भी परिघटना से इन्कार करते है जो सोवियत सघ की रक्षात्मक क्षमता को कमज़ोर बनाती हो।

सोवियत सघ के पास अब भी यह महसूस करने का कारण है कि वह घिरा हुआ है। इसके अलावा, नाटो शक्तिया पश्चिम में सोवियत सघ के आमने-सामने खडी है। सोवियत सघ अपने शत्रुओ की शक्ति को भली-भाति जानता है, भले ही उसकी शक्ति बढी है, जैसा कि एशिया, अफ्रीका तथा उत्तर और दक्षिण अमरीका मे नये साम्राज्यवाद-विरोधी देशो की शक्ति भी बढी है। इन खतरनाक दिनो मे अशत विगत से प्राप्त एकता की सोवियत परपरा बहुत स्थायी और उपयोगी सिद्ध हुई है।

एकजुटता या सामजस्य या, अगर आप चाहे तो, सहमति एक सामाजिक अस्त्र है। इसका तब सक्रिय उपयोग किया जाता रहेगा जब तक वास्तविक बाह्य खतरा मौजूद है।

क्राति के मुक्तिकारी उद्देश्य, जो कभी-कभी अशत. स्थगित किये गये हैं (जैसा कि यह नाज़ी आक्रमण के दौरान हुआ), मेरी दृष्टि

मैंने इस बात का कोई प्रमाण नहीं देखा कि सोवियत सेना में कोई आदमी युद्ध-प्रचार की मनाही करनेवाले कानून का उल्लंघन करता हो। युद्ध के लिए जनता की वैसी कोई तैयारी नहीं की जाती, जैसी कि मैंने अपने जीवन में अपने देश में बार-बार देखी है।

मैंने सोवियत संघ से मानवजाति में तबसे कहीं अधिक विश्वास की भावना के साथ प्रस्थान किया, जब मैं १९८१ के वसंत में इस देश में आया था। अगर इस पुस्तक ने शांति के लिए आपकी आशा बढ़ाने में थोड़ा सा भी योगदान किया है, तो मैं अपने प्रयास को सार्थक मानूंगा। अगर आप मानते हैं कि शांति संभव है, तो आपके पास शांति की विजय को वास्तव में सुनिश्चित बनाने हेतु यथासंभव सब कुछ—और इसका अर्थ बहुत-कुछ है—करने के लिए ठोस कारण होगा।

## पाठकों से

प्रगति प्रकाशन को इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के संबंध में आपकी राय जानकर और आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता होगी। अपने सुझाव हमें इस पते पर भेजें

प्रगति प्रकाशन
१७ जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को सोवियत संघ